आशा का अग्रदूत

भविष्यवाणी श्रृंखला - अध्ययन संख्या 4

इस्राएल

By John R Ecob DD

www.heraldofhope.org.au

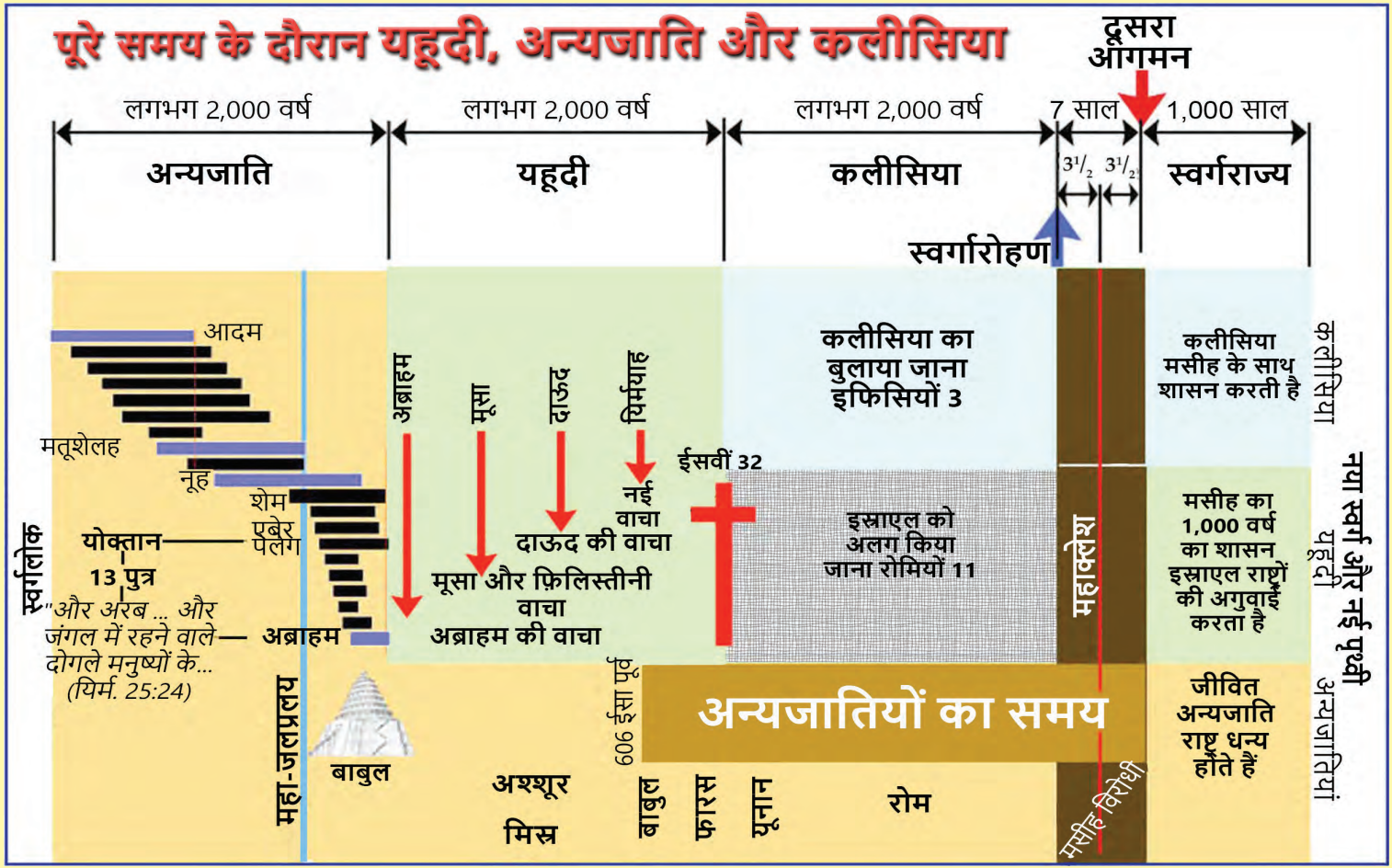
पूरे समय के दौरान यहूदी, अन्यजाति और कलीसिया
दूसरा आगमन
लगभग 2,000 वर्ष
लगभग 2,000 वर्ष
लगभग 2,000 वर्ष
7 साल
1,000 साल
अन्यजाति
यहूदी
कलीसिया
3½
3½
स्वर्गराज्य
स्वर्गारोहण
आदम
मतूशेलह
नूह
शेम
एबेर
पेलग
योक्तान
13 पुत्र
"और अरब ... और जंगल में रहने वाले दोगले मनुष्यों के... (यिर्म. 25:24)
अब्राहम
स्वर्गलोक
महा-जलप्रलय
बाबुल
अब्राहम
मूसा
दाऊद
यिर्मयाह
नई वाचा
दाऊद की वाचा
मूसा और फ़िलिस्तीनी वाचा
अब्राहम की वाचा
ईसवीं 32
कलीसिया का बुलाया जाना इफिसियों 3
इस्राएल को अलग किया जाना रोमियों 11
महाक्लेश
कलीसिया मसीह के साथ शासन करती है
मसीह का 1,000 वर्ष का शासन इस्राएल राष्ट्रों की अगुवाई करता है
जीवित अन्यजाति राष्ट्र धन्य होते हैं
कलीसिया
यहूदी
अन्यजातियां
नया स्वर्ग और नई पृथ्वी
606 ईसा पूर्व
अन्यजातियों का समय
अश्शूर
मिस्र
बाबुल
फारस
यूनान
रोम
मसीह विरोधी

इस्राएल की वाचाएँ और साम्राज्य

जॉन आर इकोब डी.डी.
द्वारा
हेराल्ड़ ऑफ हॉप
के लिए

www.heraldofhope.org.au

Copyright © JREcob 2019

Hindi Copy Published by:-
THE LIGHT OF HOPE
MERCY HOME
CHEPPAD. P.O; ALAPPUZHA Dist 690507
Kerala state, India.
Phone: 0479-2412459/ 9207976381
E-Mail: hopemsn@hopemsn.org

विषय सूची

प्रस्तावना.....1

अध्याय 1 – परिचय.....2

अध्याय 2 – इस्राएल की वाचाएँ.....4

अध्याय 3 – यहूदियों और यरुशलेम के लिए परमेश्वर की ''70–सप्ताहों'' की योजना.....19

अध्याय 4 – रोमी बिखराव की यशायाह द्वारा भविष्यद्वाणी.....27

अध्याय 5 – मसीह को ठुकराने की कीमत.....30

अध्याय 6 – ज़ायनिस्ट आंदोलन.....37

अध्याय 7 – द होलोकॉस्ट.....43

अध्याय 8 – आज़ादी के लिए संघर्ष.....50

अध्याय 9 – इब्रानी भाषा की जागृति.....53

अध्याय 10 – टैम्पल माउन्ट के लिए लड़ाई.....55

अध्याय 11 – इस्राएल के भविष्य की संभावनाएँ.....59

प्रस्तावना

इस्राएल की कहानी पिछले 2000 सालों में खून, पसीना और आँसुओं में लिखी गई है। यहूदियों के सिवाय कोई और जन समुदाय नहीं है जिन्होने इतना दर्द सहा हो, जिनसे इतनी कटुता के साथ घृणा की गई हो, और जो फिर भी अद्भुत तरीके से बचे हुए हों। उनको बस्तियों मे पृथक रखा गया, नग्न करके गैस चैम्बरों में भेजा गया, उन्हें मारा पीटा गया, लूटा गया, बेदखल किया गया, और तलवारों व बन्दूकों से मारा गया। चर्च और सरकारों ने उनके विरुद्ध लोगों को भड़काकर बड़े स्तर पर खून-खराबा करवाया है। बारम्बार उनकी सम्पत्ति लूटी गई और उन्हें इस्लाम और ईसाई धर्म में जबरन धर्मान्तरित किया गया। तौभी 2000 सालों तक तित्तर-बित्तर किए जाने के अनुभव के बाद आश्चर्यजनक तरीके से एक राष्ट्र के रूप में उसी ज़मीन पर स्थापित किए गए हैं जो परमेश्वर ने उनके बापदादा अब्राहम को 4000 साल पूर्व दिया था।

जबकि यहूदियों की जनसंख्या कुल संसार की जनसंख्या का केवल 0.01 प्रतिशत है तौभी आज इस्राएल सैन्य रूप से इतना ताकतवर है कि उसके सारे पड़ोसी उससे डरते हैं। तकनीकी क्षेत्र में इस्राएल को दुनिया का "रिसर्च एण्ड डैव्लपमैन्ट लैबोरट्री" कहा गया है। 2000 सालों तक लूटे जाने के बावजूद आज वह समृद्ध है और उसकी अर्थव्यवस्था मज़बूत है। प्रत्येक नागरिक के पीछे वैज्ञानिकों की गिनती में इस्राएल बाकी किसी भी देश से बहुत आगे है।

ऐसी क्या बात है इस अद्भुत समुदाय के बारे में जो इनको इतना अविनाशी बनाता है और अन्य सभी राष्ट्रों से बिल्कुल भिन्न ठहराता है? ऐसा क्यों है कि इस्राएल को आशीष देने वाला हर देश आशीषित हुआ है और इस्राएल को श्राप देने वाला प्रत्येक राष्ट्र स्वयं शापित हुआ है? कोई तो वजह होनी चाहिए और वह वजह परमेश्वर का वचन यानि बाइबल में दी गई है।

परमेश्वर ने अब्राहम, इसहाक, याकूब (इस्राएल), और उनके वंशजों के साथ वाचाएँ बाँधी है और वह उनको कभी तोड़ेगा नहीं। *"क्योंकि परमेश्वर अपने वरदानों से, और बुलाहट से कभी पीछे नहीं हटता"* (रोमियों 11:29)। परमेश्वर कभी भी इस्राएल के साथ अपनी वाचाओं को नहीं तोड़ेगा और न उनसे मुकरेगा। उसकी वाचाएँ अनन्त हैं।

मूसा ने इस्राएल से कहाः

"फिर कौन ऐसी बड़ी जाति है जिसके पास ऐसी धर्ममय विधि और नियम हों, जैसी कि यह सारी व्यवस्था जिसे मैं आज तुम्हारे सामने रखता हूँ?"(व्यवस्था. 4:8)। *" यह सब तुझ को दिखाया गया, इसलिये कि तू जान रखे कि यहोवा ही परमेश्वर है, उसको छोड़ और कोई है ही नहीं"* (व्यवस्था. 4:35)।

एकमात्र जीवित परमेश्वर के अस्तित्व का सबसे पुख़्ता सबूत है इस्राएल का देश।

अध्याय 1 – परिचय

इस्राएल का भविष्य उन वाचाओं और भविष्यवाणियों द्वारा संचालित होता है जो परमेश्वर ने उस देश को दिए हैं। करीब 2000 ईसा पूर्व में जब परमेश्वर ने अब्राहम को चुना और कनान का प्रदेश उसको हमेशा की सम्पत्ति के रूप में दिया तो परमेश्वर ने एक ऐसी प्रजा को स्थापित किया जो मानवजाति के साथ परमेश्वर के सारे व्यवहार में केन्द्रीय भूमिका अदा करने वाली थी। अब्राहम की सन्तानें कई गोत्रों में बदलने वाले थे और ये गोत्र आगे जाकर मूसा के नेतृत्व में एक राष्ट्र का रूप लेने वाले थे। दाऊद की वंशावली के द्वारा परमेश्वर अपने कुंवारी–उत्पन्न पुत्र, यीशु मसीह, को इस धरती पर लाने वाला था और वह पुत्र अन्ततः इस संसार पर राजाओं के राजा और प्रभुओं के प्रभु के रूप में राज करने वाला था।

अंतिम दिनों में जब परमेश्वर का राज्य धरती पर स्थापित होगा और जब मसीह सारे संसार पर राज्य करेगा तब यरुशलेम ही वह शहर है जिसको परमेश्वर ने सब बातों का केन्द्र होने के लिए चुना है।

"अन्त के दिनों में ऐसा होगा कि यहोवा के भवन का पर्वत सब पहाड़ों पर दृढ़ किया जाएगा, और सब पहाड़ियों से अधिक ऊँचा किया जाएगा; और हर जाति के लोग धारा की नाईं उसकी ओर चलेंगे। और बहुत जातियों के लोग जाएँगे, और आपस में कहेंगे, आओ, हम यहोवा के पर्वत पर चढ़कर, याकूब के परमेश्वर के भवन में जाएँ, तब वह हम को अपने मार्ग सिखाएगा, और हम उसके पथों पर चलेंगे। क्योंकि यहोवा की व्यवस्था सिय्योन से और उसका वचन यरूशलेम से निकलेगा" (मीका 4:1–2)।

सारा इतिहास इस्राएल के मसीहा व राजा की जीत की दिशा में बढ़ रहा है और जब तक हम इस्राएल के लिए परमेश्वर द्वारा बनाई गई योजना को नहीं समझेंगे तब तक हम पवित्रशास्त्र की सही तरीके से व्याख्या नहीं कर सकेंगे।

इस्राएल, बिना कोई शक, अद्वितीय है। कोई और देश उसके साथ तुलना में आ ही नहीं सकता। इस्राएल परमेश्वर द्वारा चुना गया माध्यम था जिसके द्वारा उद्धार मानवजाति तक पहुँच सके। पुराने नियम के समयों में अन्यजातियों के साम्राज्य जो मूर्तिपूजा से भरे हुए थे उनसे जो भी बचना चाहता था उन सबके लिए इस्राएल शरणस्थान था और नए नियम के समयों मे इस्राएल ने ही यीशु मसीह की कलीसिया को जन्म दिया।

इस्राएल के नबी, परमेश्वर द्वारा चुने हुए ऐसे पुरुष थे जिनको प्रभु का वचन सौंपा गया था, ताकि वह वचन याजकीय वर्ग के शास्त्रियों द्वारा लिखित रूप में सम्भाला जा सके। इस्राएल को दिए गए ये शास्त्र ही इस ब्रह्माण्ड़ की उत्पत्ति और मानव जाति के इतिहास का एकमात्र विश्वसनीय ब्यौरा है। और यही पवित्रशास्त्र, भविष्य संबंधी एकमात्र उजियाला है।

अदृश्य जगत का ज़ान, संजोए जाने हेतु यहूदी नबियों को सौंपा गया, वरना उनकी गवाही के बिना हम कब्र के उस पार की बातों के विषय में अंधविश्वास और अज्ञानता में होते। पौलुस ने पूछा,

"अतः यहूदी की क्या बड़ाई, या खतने का क्या लाभ हर प्रकार से बहुत कुछ। ***पहले तो यह कि परमेश्वर के वचन उन को सौंपे गए"*** (रोमियों 3:1-2)।

मूसा ने इस्राएल को उनकी विशेषाधिकार वाली पदवी याद दिलाई। उसने कहा,

"क्योंकि तू अपने परमेश्वर यहोवा के लिये एक पवित्र समाज है, और यहोवा ने तुझ को ***पृथ्वी भर के समस्त देशों के लोगों में से*** *अपनी निज सम्पति होने के लिये चुन लिया है"* (व्यवस्था. 14:2)।

परमेश्वर ने इस्राएल को क्यों चुना यह बात साफ-साफ दर्ज हैः

"यहोवा ने जो तुम से स्नेह करके तुम को चुन लिया, इसका कारण यह नहीं था कि तुम गिनती में और सब देशों के लोगों से अधिक थे, किन्तु तुम तो सब देशों के लोगों से गिनती में थोड़े थे; यहोवा ने जो तुम को बलवन्त हाथ के द्वारा दासत्व के घर में से और मिस्र के राजा फिरौन के हाथ से छुड़ाकर निकाल लाया, इसका यही करण है कि वह तुम से प्रेम रखता है, ***और उस शपथ को भी पूरी करना चाहता है जो उसने तुम्हारे पूर्वजों से खाई थी"*** (व्यवस्था. 7:7-8)।

परमेश्वर विश्वासयोग्य और वाचा को पूरा करने वाला परमेश्वर है जिसने ऐसे वायदे किए हैं जिन्हे वह कभी तोड़ेगा नहीं। इन वायदों ने परमेश्वर को कर्तव्यबद्ध कर दिया है कि वह अपने वचनानुसार ही काम करे ताकि मनुष्य पूरे आश्वासन के साथ अपने आप को आँक सकें कि वे परमेश्वर के साथ किस स्थिति में हैं। यदि हम उन वाचाओं को समझ नहीं पाए जो परमेश्वर ने मनुष्यों के साथ बाँधी हैं तो हम परमेश्वर की मानव-उद्धार की योजना को बिल्कुल भी समझ नहीं पाएँगे और न यह जान पाएँगे कि मनुष्यों के लिए भविष्य में क्या रखा है। यहाँ तक कि जब इस्राएल ने पाप किया और परमेश्वर से दूर भी हो गए तब भी उसकी वाचा के वायदे कायम थे और प्रभु ने कहाः

"क्योंकि मैं यहोवा बदलता नहीं, इसी कारण, हे याकूब की सन्तान तुम नष्ट नहीं हुए" (मलाकी 3:6)।

पूरे इतिहास में, जब भी इस्राएल ने प्रभु के विरुद्ध पाप किया तो परमेश्वर ने उनपर कष्ट भेजा। उसने अपने *चार दर्द भरे दण्ड़* इस्तेमाल किएः तलवार, अकाल, जंगली जानवर, और मरी। ये दण्ड़ थे, परन्तु ये इस्राएल के प्रति प्रेम से प्रेरित थे और इस मकसद से भेजे जाते थे कि यह राष्ट्र मन-फिराए और पुनः आशीष पा सके।

यहूदियों की पिछले 2500 वर्षों की व्याकुलता और सताव, *"याकूब का संकट काल"* (यिर्मयाह 30:7) यानि महाक्लेश के समय के साथ समाप्त हो जाएँगी जब वे उन सब बातों का पछतावा करेंगे जो उन्होंने अपने मसीहा और राजा के साथ किया। वे पूरी तरह से प्रभु में पुनःस्थापित हो जाएँगे और दुनिया के राष्ट्रों का सिर बनेंगे।

अध्याय 2 – इस्राएल की वाचाएँ

अब्राहम की वाचा

परमेश्वर ने अब्राहम के साथ एक वाचा बाँधी जो उसके बाद इसहाक के साथ, याकूब के साथ और उसकी सन्तानो के साथ भी बाँधी गई। इस्राएली लोगों की ग़ैर-ज़िम्मेदारी के बावजूद भी परमेश्वर ने अपने आप को, उस वाचा को पूरा करने के लिए, वचनबद्ध किया हुआ है। परमेश्वर ने यह वादा किया थाः

"और मैं तुझ से एक बड़ी जाति बनाऊँगा, और तुझे आशीष दूँगा, और तेरा नाम बड़ा करूँगा, और तू आशीष का मूल होगा। और जो तुझे आशीर्वाद दें, उन्हें मैं आशीष दूँगा, और जो तुझे कोसे, उसे मैं शाप दूँगा और भूमण्डल के सारे कुल तेरे द्वारा आशीष पाएँगे" (उत्पत्ति 12:2-3)।

"उसी दिन यहोवा ने अब्राम के साथ यह वाचा बाँधी, कि मिस्र के महानद से लेकर परात नामक बड़े नदी तक जितना देश है..." (उत्पत्ति 15:18)।

"और मैं तेरे साथ, और तेरे पश्चात पीढ़ी पीढ़ी तक तेरे वंश के साथ भी इस आशय की ***युग युग की वाचा*** *बाता हूँ, कि मैं तेरा और* ***तेरे पश्चात तेरे वंश का भी*** *परमेश्वर रहूँगा। और मैं तुझ को और* ***तेरे पश्चात तेरे वंश*** *को भी, यह सारा कनान देश, जिस में तू परदेशी हो कर रहता है, इस रीति दूँगा कि वह* ***युग युग उनकी निज भूमि*** *रहेगी और मैं उनका परमेश्वर रहूँगा"* (उत्पत्ति 17:7-8)।

दुनिया के बाकी राष्ट्रों को भी परमेश्वर ने अब्राहम के द्वारा आशीषित किया है। परमेश्वर ने कहाः

"यह जो मैं करता हूँ उसे क्या इब्राहीम से छिपा रखूँ? इब्राहीम से तो निश्चय एक बड़ी और सामर्थी जाति उपजेगी और ***पृथ्वी की सारी जातियाँ उसके द्वारा आशीष पाएँगी"*** (उत्पत्ति 18:17-18)।

जब अब्राहम ने मोरिय्याह की पहाड़ियों में से एक पर इसहाक का अर्पण परमेश्वर को किया तो प्रभु ने कहा,

"यहोवा की यह वाणी है, *कि मैं अपनी ही यह शपथ खाता हूँ, कि तू ने जो यह काम किया है कि अपने पुत्र, वरन अपने एकलौते पुत्र को भी नहीं रख छोड़ा, इस कारण मैं निश्चय तुझे आशीष दूँगा और निश्चय तेरे वंश को आकाश के तारागण और समुद्र के तीर की बालू के किनकों के समान अनगिनित करूँगा और तेरा वंश अपने शत्रुओं के नगरों का अधिकारी होगा और पृथ्वी की* ***सारी जातियाँ अपने को तेरे वंश के कारण धन्य मानेंगी, क्योंकि तू ने मेरी बात मानी है"*** (उत्पत्ति 22:16-18)।

यह सर्वशक्तिमान परमेश्वर द्वारा स्पष्ट की हुई बात है कि वह दुनिया के देशों को इस्राएल द्वारा आशीष देना चाहता है और वे देश जो यहूदियों के प्रति नफ़रत से भरे हुए हैं वे अपने आप को परमेश्वर के शाप के नीचे लाएँगे।

फिलिस्तीनी वाचा (व्यवस्था विवरण 28-30)।

वायदे के देश में कदम रखने से कुछ पहले इस्राएलियों के साथ जो बाँधी गई उसमें तीन बातें थीं:

1. यदि इस्राएल प्रभु की बात को मानता है तो वह उस देश में **आशीषित रहेगा जो देश** अब्राहम को और उसके वंश को वायदे में दिया गया (व्यवस्था.28:1-14)।

2. यदि इस्राएल प्रभु की वाणी के प्रति अनाज्ञाकारी रहता है तो वह उस **देश से निकाला जाएगा** और दुनिया के देशों में तित्तर-बित्तर कर दिया जाएगा (व्यवस्था.28:15-68; 29:29)

3. जब इस्राएल राष्ट्रों के बीच तित्तर-बित्तर कर दिया जाए तब यदि वह प्रभु की तरफ लौट आता है तो परमेश्वर उसको क्षमा करेगा और उसको **उसके स्वदेश में लौटा ले आएगा** और जितने श्राप इस्राएल पर आए थे वे सब उसके दुश्मनों पर ड़ाल दिए जाएँगे। (व्यवस्था.30:1-20)।

जब हम इस्राएल के इतिहास को देखते हैं तो हम पाएँगे कि जबसे यहोशू के नेतृत्व में इस्राएल ने उस देश में कदम रखा तब से परमेश्वर ने इस वाचा के अनुसार ही उनके साथ बर्ताव किया है। अब्राहम से की गई वाचा के अनुसार इस्राएल का उस देश पर तो अधिकार बनता है परन्तु वहाँ का आनन्द नष्ट हो सकता है। ज़मीन परमेश्वर की है (योएल 3:2) परन्तु इस्राएल को वहाँ रहने का हक दिया गया है **जब तक वह प्रभु की आज्ञा का पालन करता रहेगा।**

फिलिस्तीनी वाचा में भविष्यसूचक कुछ ऐसी बात है जिससे अंदाज़ा लग सकता है कि **मसीह के साथ सहस्राब्दी (1000 वर्ष) शासन करने से पहले इस्राएल दो बुआईयों में से होकर जाएगा।** पहला बेबीलोन में और दूसरा तब जब रोम उसको दुनिया के सभी राष्ट्रों में छितरा देगा।

1. **बेबीलोन की बुआई** व्यवस्था.28:36-37 में बताई गई है:

*"यहोवा तुझ को **उस राजा समेत, जिस को तू अपने ऊपर ठहराएगा,** तेरी और तेरे पूर्वजों से अनजानी एक जाति के बीच पहूँचाएगा और उसके मध्य में रहकर तू काठ और पत्थर के दूसरे देवताओं की उपासना और पूजा करेगा। और उन सब जातियों में जिनके मध्य में यहोवा तुझ को पहूँचाएगा, वहाँ के लोगों के लिये तू चकित होने का और दृष्टान्त और शाप का कारण समझा जाएगा।"*

586 ई.पू. में नबूकदनेस्सर ने इस्राएल के आखिरी राजा, सिदकिय्याह को कैद कर लिया और उसकी आँखें फोड़कर उसको बन्दी बनाकर बेबीलोन ले गए जहाँ वह क़ैद में ही मर गया। चूँकि ई.पू. 586 के पश्चात् इस्राएल का कोई राजा नहीं रहा, इसलिए यह बात केवल बेबीलोन की बँधुआई पर ही सही साबित होती है।

2. **रोम की बँधुआई** का ज़िक्र व्यवस्था. 28:49-68 में है:

*"यहोवा तेरे विरुद्ध दूर से वरन पृथ्वी के छोर से **वेग उड़ने वाले उकाब** सी एक जाति को चढ़ा लाएगा जिसकी भाषा को तू न समझेगा; उस जाति के लोगों का व्यवहार क्रूर होगा... तब घिर जाने और उस सकेती के समय जिस में तेरे शत्रु तुझ को डालेंगे, तू अपने निज जन्माए बेटे.बेटियों का माँस जिन्हें*

तेरा परमेश्वर यहोवा तुझ को देगा खाएगा। और तुझ में जो... और यहोवा तुझ को ***नावों पर चढ़ाकर मिस्र में*** *उस मार्ग से लौटा देगा जिसके विषय में मैं ने तुझ से कहा था कि वह फिर तेरे देखने में न आएगा और वहाँ तुम अपने शत्रुओं के हाथ दास-दासी होने के लिये बिकाऊ तो रहोगे परन्तु तुम्हारा कोई ग्राहक न होगा।।"*

70 ईसवीं में रोमी सेनाओं ने, **उकाब पक्षी वाले रोमी राजचिन्ह** के नीचे, यहूदियों के सारे शहरों को घेर लिया और यहूदी इतिहासकार, जोसेफस ने अपनी किताब "द जुइश वॉर्स" में संकेत दिया है कि उस घेराबंदी के समय यरुशलेम में यहूदियों को अपने ही बच्चों को मारकर खाना पड़ा। यरुशलेम के गिरने के बाद 97,000 बंदियों में से अधिकतर को मिस्र की खानों में मज़दूरी करने के लिए गुलामों की तरह बेच दिया गया! गुलाम गिनती में इतने ज़्यादा थे कि खरीदार कम पड़ गए और तब वह भविष्यद्वाणी भी पूरी हुई कि "तुम्हारा कोई ग्राहक न होगा।"

परन्तु मूसा ने इस्राएल से व्यवस्था.4:30-31 में कहा था,

"अन्त के दिनों में जब तुम संकट में पड़ो *और ये सब विपत्तियाँ तुम पर आ पड़ेंगी, तब तुम अपने परमेश्वर यहोवा की ओर फिरो और उसकी मानना क्योंकि तेरा परमेश्वर यहोवा दयालु ईश्वर है, वह तुम को न तो छोड़ेगा और न नष्ट करेगा और जो वाचा उसने तेरे पितरों से शपथ खाकर बाँधी है उसको नहीं भूलेगा।"*

इस्राएल पिछले 2000 से छितराया हुआ है, पर इस बात का मतलब यह नहीं कि परमेश्वर ने इस राष्ट्र को तज दिया है क्योंकि मूसा ने नबूवत में बताया था कि ***"अंतिम दिनों"*** में इस्राएल पुनःस्थापित हो सकता है! अन्य भविष्यवाणियों में और विस्तार से इस्राएल की पुनर्स्थापना के बारे में बताया गया है कि पहले अविश्वास की दशा में ही उनको उनकी ज़मीन दी जाएगी (यहेज, 36:22-24) और उसके पश्चात् उनका शुद्धिकरण और उद्धार होगा (यहेज. 39:22-29)। होशे ने लिखाः

"उसके बाद *वे अपने* ***परमेश्वर यहोवा और अपने राजा दाऊद को फिर ढूँढ़ने*** *लगेंगे और* ***अन्त के दिनों*** *में यहोवा के पास और उसी उत्तम वस्तुओं के लिये थरथराते हुए आएँगे"* (होशे 3:5)।

अन्य भविष्यवाणियों में बताया गया है कि कैसे परमेश्वर अंतिम दिनों में इस्राएल के साथ एक *"नई वाचा"* (यिर्मयाह 31:31) में स्थापित करेगा जो कि एक *"शान्ति की वाचा"* (यहेजकेल 34:25; 37:26) और एक *"हमेशा की वाचा"* (यशायाह 55:3) होगी जिसमें से इस्राएल दुबारा कभी भटकेगा नहीं। परमेश्वर इस्राएल को उसकी सारी अशुद्धता से साफ करेगा और वह वायदा करता है किः

"मैं तुम को जातियों में से ले लूँगा और देशों में से इकट्ठा करूँगा और तुम को तुम्हारे निज देश में पहूँचा दूँगा। मैं तुम पर शुद्ध जल छिड़कूँगा और तुम शुद्ध हो जाओगे और मैं तुम को तुम्हारी सारी अशुद्धता और मूरतों से शुद्ध करूँगा। मैं तुम को नया मन दूँगा और तुम्हारे भीतर नई आत्मा उत्पन्न करूँगा और तुम्हारी देह में से पत्थर का हृदय निकाल कर तुम को माँस का हृदय दूँगा। और मैं अपना आत्मा तुम्हारे भीतर देकर ऐसा करूँगा कि तुम मेरी विधियों पर चलोगे और मेरे नियमों को मान कर उनके अनुसार करोगे। तुम उस देश में बसोगे जो मैं ने तुम्हारे पितरों को दिया था और तुम मेरी प्रजा ठहरोगे और मैं तुम्हारा परमेश्वर ठहरूँगा" (यहेजकेल 36:24-28)।

परमेश्वर ने इस्राएल के साथ जो शपथ खाई थी उसमें असफलता निर्णायक नहीं है और परमेश्वर को उसके पूर्वज्ञान में मालूम था कि जब महाक्लेश के समय ताड़ना होगी तो इस्राएल लौट आएगा। यह तब होगा जब अंतिम दिनों के महाक्लेश के प्रारम्भिक समय में *"उत्तर की सेना"* (योएल 2:20), गोग और मागोग के नेतृत्व में, अनेक मुस्लिम देशों के साथ मिलकर इस्राएल पर चढ़ाई करेगी जैसा यहेजकेल के 38 और 39 अध्यायों में बताया गया है।

महाक्लेश के प्रारम्भ में ही इस्राएल की ज़मीन पर सारे यहूदियों के विनाश की यह कोशिश ही संसार भर के अल्पसंख्यक धर्मियों को परमेश्वर को पुकारने के लिए उत्तेजित करेगी और तब छुटकारा होगा। *"उस दिन से आगे इस्राएल का घराना जान लेगा कि यहोवा हमारा परमेश्वर है"* (यहेजकेल 39:22)।

यशायाह ने भी भविष्य में एक ऐसे दिन की बात की हुई है।
"पर तुम यहोवा के याजक कहलाओगे, ***वे तुम को हमरो परमेश्वर के सेवक कहेंगे*** *और तुम अन्यजातियों की धन.सम्पत्ति को खाओगे उनके वैभव की वस्तुएँ पाकर तुम बड़ाई करोगे"* (यशायाह 61:6)।

जकर्याह एक ऐसे दिन के बारे में बोलता है जब यहूदियों के विरुद्ध होने वाली नफरत खत्म हो जाएगी।
"सेनाओं का यहोवा यों कहता है, उस दिनों में भाँति भाँति की भाषा बोलने वाली सब जातियों में से दस मनुष्य, एक यहूदी पुरुष के वस्त्र की छोर को यह कहकर पकड़ लेंगे, कि हम तुम्हारे संग चलेंगे, क्योंकि ***हम ने सुना है कि परमेश्वर तुम्हारे साथ है"*** (जकर्याह 8:23)॥

यशायाह ने एक ऐसे दिन के विषय में लिखा है जब यरुशलेम संसार भर की सरकार का केन्द्र होगा।
"अन्त के दिनों में ऐसा होगा कि यहोवा के भवन का पर्वत सब पहाड़ों पर दृढ़ किया जाएगा, और सब पहाड़ियों से अधिक ऊँचा किया जाएगा और ***हर जाति के लागे धारा की नाईं उसकी ओर चलेंगें।*** *और बहुत देशों के लोग आएँगे और आपस में कहेंगे: आओ, हम यहोवा के पर्वत पर चढ़कर, याकूब के परमेश्वर के भवन में जाएँ, तब वह हम को अपने मार्ग सिखाएगा, और हम उसके पथों पर चलेंगे। क्योंकि* ***यहोवा की व्यवस्था सिय्योन से और उसका वचन यरूशलेम से निकलेगा।*** *वह जाति जाति का न्याय करेगा और देश देश के लोगों के झगड़ों को मिटाएगा और वे अपनी तलवारें पीट कर हल के फाल और अपने भालों को हँसिया बनाएँगे तब एक जाति दूसरी जाति के विरुद्ध फिर तलवार न चलाएगी, न लोग भविष्य में युद्ध की विद्या सीखेंगे"* (यशायाह 2:2–4)।

मसीहत के द्वारा उन वायदों को जो इस्राएल से किए गए हैं एक आत्मिक व्याख्या देकर कलीसिया के लिए अपनाना ढिठाई और अविश्वास की बात है जो मसीहत को उस श्राप के नीचे लाती है जिसके विषय में परमेश्वर ने अब्राहम से कहा था कि *"जो तुझे आशीष देंगे उन्हें मैं आशीष दूँगा और जो तुझे शाप देंगे उन्हें मैं शाप दूँगा"* (उत्पत्ति 12:3)। यह वायदा केवल अब्राहम तक ही सीमित नहीं था बल्कि यह तब भी दोहराया गया था जब इसहाक ने याकूब को आशीषित किया (उत्पत्ति 27:29) और बाद में, बालाम ने जब ऊपर से इस्राएल के तम्बुओं को देखा तो इस प्रकार कहा:

"उसको मिस्र में से परमेश्वर ही निकाले लिये आ रहा है... जो कोई तुझे ***आशीर्वाद दे सो आशीष पाए, और जो कोई तुझे शाप दे वह स्त्रापित हो"*** (गिनती 24:8–9)।

राष्ट्रों का उत्थान और पतन इस बात पर तय होता है कि वे इस्राएल के साथ कैसा बर्ताव करते हैं। यहाँ तक कि जब इस्राएल **स्वयं परमेश्वर की ताड़ना के अधीन हो** तब भी इस्राएल को बददुआ देने का दुःसाहस नहीं करना चाहिए।

अम्मोनियों को इसलिए दण्ड़ दिया गया क्योंकि उन्होंने ऐसा कहा, *"तुम ने जो मेरे पवित्रस्थान के विषय जब वह अपवित्र किया गया, और इस्राएल के देश के विषय जब वह उजड़ गया, और यहूदा के घराने के विषय जब वे बँधुआई में गए, अहा, अहा! कहा!"* (यहेजकेल 25:3)। इसी तरह मोआबियों को इस वजह से दण्ड़ दिया गया क्योंकि उन्होंने कहा, *"देखो, यहूदा का घराना और सब जातियों के समान हो गया है"* (यहेजकेल 25:8) और एदोमियों के दण्ड़ की वजह यूं लिखी हुई है: *"एदोम ने जो यहूदा के घराने से पलटा लिया और उन से बदला ले कर बड़ा दोषी हो गया है"* (यहेजकेल 25:12)। जब पलिश्तियों ने *नफरत भरे दिल के साथ बदला लिया* (यहेजकेल 25:15), तब परमेश्वर ने कहा, *"और मैं जलजलाहट के साथ मुक़द्दमा लड़ कर, उन से कड़ाई के साथ पलटा लूँगा..."* (यहेजकेल 25:17)।

सूर नामक शहर यरुशलेम के विध्वंस के बारे में सुनकर आनन्दित होकर कहने लगा, *"अहा, अहा। जो देश देश के लोगों के फाटक के समान थी, वह नाश हो गई"* (यहेजकेल 26:2) जिस वजह से परमेश्वर ने कहा कि वह *"उसके उजड़ जाने से मैं भरपूर हो जाऊँगा! इस कारण परमेश्वर यहोवा कहता है, हे सोर, देख, मैं तेरे विरुद्ध हूँ, और ऐसा करूँगा कि बहुत सी जातियाँ तेरे विरुद्ध ऐसी उठेंगी जैसे समुद्र की लहरें उठती हैं"* (यहेजकेल 26:3)।

जब कोई व्यक्ति या कोई राष्ट्र परमेश्वर के चुने हुए लोग यानि इस्राएल को कोसने का दुस्साहस करे तो वह कभी भी परमेश्वर के कोप से बच नहीं सकता क्योंकि मानव उद्धार के लिए परमेश्वर की योजना में इस्राएल की केन्द्रीय भूमिका है। अंततः जब मसीहा इस संसार में राजाओं का राजा और प्रभुओं का प्रभु होगा तब इस्राएल ही इस दुनिया पर राज करेगा।

परमेश्वर ने अन्यजातियों में से बेबीलोन की सेना को यहूदा के विरुद्ध भेजा उनको उनकी दुष्टता का दण्ड़ देने के लिए, परन्तु जब 70 सालों की बँधुआई पूरी हुई तो परमेश्वर ने कहा, *"और जो जातियाँ सुख से रहती हैं, उन से मैं क्रोधित हूँ, क्योंकि मैं ने तो थोड़ा से क्रोध किया था, परन्तु* ***उन्होंने विपत्ति को बढ़ा दिया।*** *इस कारण यहोवा यों कहता है, अब मैं दया कर के यरूशलेम को लौट आया हूँ, मेरा भवन उस में बनेगा, और यरूशलेम पर नापने की डोरी डाली जाएगी, सेनाओं के यहोवा की यही वाणी है"* (जकर्याह 1:15–16)।

अन्यजातियों के किसी राष्ट्र के लिए, अपने ख़ुद के ऊपर परमेश्वर का कोप लाने का सबसे परखा हुआ तरीका है यहूदियों पर अपना गुस्सा उतारना। भले ही यह काम तब क्यों न हो जब यहूदी परमेश्वर से

दूर हों। ताड़ना के दौरान भी इस्राएल परमेश्वर की चुनी हुई प्रजा है। परमेश्वर इस्राएल को कभी तजेगा नहीं, और बाइबल की भविष्यवाणियों के अनुसार, वर्तमान युग खत्म होगा जब इस्राएल अपने प्रभु के पास लौटकर आएगा और फिर अपनी ज़मीन पर मसीह के साथ सहस्राब्दी साम्राज्य में शासन करेगा।

दाऊद की वाचा

न केवल परमेश्वर ने अब्राहम को और उसके वंश को चुना है उसकी विशेष प्रजा होने के लिए और उनको वह ज़मीन हमेशा की सम्पत्ति के रूप में सौंपी है बल्कि उसने यहूदा के गोत्र से एक परिवार को भी चुना है परमेश्वर की विरासत पर राज करने के लिए। जब इस्राएल का पहला राजा, शाऊल, असफल हुआ तब परमेश्वर ने बेतलहम से दाऊद नामक एक चरवाहे लड़के को चुन लिया प्रभु के दिल के अनुसार एक व्यक्ति होने के लिए (1 शमूएल 13:14)।

परमेश्वर ने दाऊद के साथ एक वाचा बाँधी और उसके सिंहासन को एक अविनाशी सिंहासन के रूप में स्थापित कर दिया। परमेश्वर ने कहाः
"वरन तेरा घराना और तेरा राज्य मेरे सामने सदा अटल बना रहेगा, तेरी गद्दी ***सदैव*** *बनी रहेगी"* (2 शमूएल 7:16)।

पुनः हमें यह याद दिलाया जा रहा है कि इस्राएल, उसकी ज़मीन, और दाऊद का सिंहासन यह सब परमेश्वर ने हमेशा के वायदों के रूप में उन्हें दिया है। जो यह सिखाते हैं कि परमेश्वर ने इस्राएल के साथ अपना काम खतम कर दिया है और उसकी जगह पर कलीसिया को परमेश्वर की प्रजा के रूप में प्रतिस्थापित कर दिया है, ऐसे लोग पवित्रशास्त्र की स्पष्ट बातों का इन्कार कर रहे हैं। किसने इन लोगों को जीवित परमेश्वर के वचन के शाब्दिक अर्थ को आत्मिक व्याख्या देकर बदलने का अधिकार दिया?

निश्चय ही जब ये असहस्राब्दीवादी (सहस्राब्दी पर विश्वास न करने वाले) स्वधर्मत्यागी देखते हैं कि यहूदी अविश्वास की दशा में अपने स्वदेश को लौट रहे हैं बिल्कुल वैसे ही जैसे परमेश्वर ने यहेजकेल अध्याय 36 में कहा था, तो इनको अपने धर्मविज्ञान की प्रणाली पर पुनःविचार करना चाहिए। परन्तु ऐसा प्रतीत होता है कि ये असहस्राब्दीवादी अपने "परिष्कृत धर्मविज्ञान" रूपी ईश्वर से इस तरह विवाह-बंधन में बँधे हुए हैं कि ये विश्वास ही नहीं कर सकते कि इनके परिष्कृत धर्मविज्ञान के आराध्य पुरुष कभी ग़लत भी हो सकते हैं।

यहेजकेल ने स्पष्ट कर दिया था कि सिदकिय्याह के बेबीलोन ले जाए जाने के बाद दाऊद का सिंहासन *तब तक खाली रहेगा जब तक कि उसका सही दावेदार प्रकट नहीं होगा* (यहेजकेल 21:27)।

जब जिब्राईल ने मरियम को बताया कि वह *"पुत्र को जन्म देगी और उसका नाम यीशु रखना"* तब उसने यह भी कहा कि
"वह महान होगा, और परमप्रधान का पुत्र कहलाएगा और प्रभु परमेश्वर उसके पिता दाऊद का

*सिंहासन उस को देगा। और वह याकूब के घराने पर **सदा** राज्य करेगा, और उसके राज्य का **अन्त न होगा''*** (लूका 1:32-33)।

परमेश्वर ने मरियम को इस स्पष्ट मकसद के साथ चुना कि उसके द्वारा परमेश्वर का पुत्र जगत में भेजा जा सके जो संसार का उद्धारकर्ता बने और इस्राएल के बारह गोत्रों के ऊपर दाऊद के सिंहासन पर विराजमान होकर राजाओं का राजा बनकर सम्पूर्ण धरती पर राज करे।

अंतिम दिनों में दाऊद के सिंहासन का पुनर्स्थापित होना

अमोस ने भविष्य में एक ऐसे समय के विषय में भविष्यद्वाणी की जिसमें परमेश्वर कहता है कि

*''उस समय मैं दाऊद की **गिरी हुई** झोंपड़ी को खड़ा करूँगा, और उसके बाड़े के नाकों को सुधारूँगा और उसके खण्डहरों को फिर बनाऊँगा और **जैसा वह प्राचीनकाल से था,** उसको वैसा ही बना दूँगा''* (अमोस 9:11)।

अमोस ने यहूदा के राजा उजिय्याह के दिनों में नबूवत की जो कि दाऊद के सिंहासन के गिरने से करीब 200 साल पहले का समय था। परन्तु परमेश्वर ने उसको यह प्रकट किया कि न केवल दाऊद का सिंहासन गिरने वाला है बल्कि अन्त के दिनों में फिर से स्थापित किया जाएगा। यरुशलेम के प्रेरितों का प्रतिनिधित्व करते हुए याकूब ने यह घोषणा की कि परमेश्वर अन्यजातियों में से अपने लिए लोगों के एक समूह को अलग कर रहा है और यह कि यीशु लौटकर आयेगा और

''इस के बाद मैं फिर आकर दाऊद का गिरा हुआ डेरा उठाऊँगा और उसके खंडहरों को फिर बनाऊँगा और उसे खड़ा करूँगा'' (प्रेरितों 15:16)।

याकूब ने आमोस की भविष्यद्वाणी का हवाला दिया और यह साफ किया कि **कलीसिया के पूर्ण होने** पर मसीहा फिर से लौट कर आएगा और इस्राएल पुनःस्थापित होगा।

दाऊद से की गई वाचा के अंतर्गत यह स्पष्ट प्रावधान है कि इस्राएल राष्ट्र पर शाब्दिक तौर पर एक सिंहासन हमेशा होगा और यह भी कि उस पर बैठने वाला आखिरी राजा कोई और नहीं बल्कि प्रभु यीशु मसीह ही होगा। यह बात पूरी तब होगी जब इस्राएल अंतिम दिनों में बचाया जाए और मसीह यरुशलेम से राज करने हेतु लौट कर आए।

पवित्रशास्त्र से यह स्पष्ट होता है कि सहस्राब्दी शासन के दौरान प्रभु यीशु के नीचे, दाऊद इस्राएल का राजकुमार होगा (यहेज. 34:23-24; 37:24; यिर्म. 30:9)। चूँकि पुराने नियम के सारे संत तब जिलाए जा चुके हैं जब यीशु मुर्दों में से जी उठा (मत्ती 27:52-53), इसलिए दाऊद के पास फिलहाल पुनरुत्थान-प्राप्त देह है और महाक्लेश के तुरन्त बाद मसीह के द्वितीय आगमन पर वह भी लौट कर आएगा।

''यहोवा यों कहता है, यदि दिन और रात के विषय मेरी वाचा अटल न रहे, और यदि आकाश और पृथ्वी के नियम मेरे ठहराए हुए न रह जाएँ, तब ही मैं याकूब के वंश से हाथ उठाऊँगा और इब्राहीम,

इसहाक और याकूब के वंश पर प्रभुता करने के लिये अपने दास दाऊद के वंश में से किसी को फिर न ठहराऊँगा। परन्तु इसके विपरीत मैं उन पर दया करके उन को बँधुआई से लौटा लाऊँगा" (यिर्मयाह 33:25.26)।

"सम्पूर्ण इस्राएल का उद्धार होगा"

32 ईसवीं में पिन्तेकुस्त के दिन कलीसियाई युग का उद्घाटन हुआ और इस युग में मसीह की दुल्हन तैयार की जा रही है। जब *अन्यजातियों की संख्या की पूर्णता* कलीसिया में आ जाएगी तो दुल्हन स्वर्ग में मेमने के विवाह के लिए उठा ली जाएगी। इस बारे में पौलुस ने यूं कहा,

"और इस रीति से सारा इस्राएल उद्धार पाएगा...और उन के साथ मेरी यही वाचा होगी, जब कि मैं उन के पापों को दूर कर दूँगा" (रोमियो 11:26-27)।

कलीसिया के उठा लिए जाने के यानि स्वर्गारोहण के तुरन्त बाद, सर्वप्रथम, यहूदियाँ में से 144,000 पुरुष होंगे जो प्रभु को स्वीकार करेंगे और ये *"राज्य का सुसमाचार"* का प्रचार करेंगे।

*"और राज्य का यह सुसमाचार **सारे जगत में** प्रचार किया जाएगा, कि **सब जातियों** पर गवाही हो, तब अन्त आ जाएगा"* (मत्ती 24:14)।

कलीसिया का स्वर्गारोहण के तुरन्त बाद ये बचाए जाएँगे हम ऐसा इसलिए कह पाते हैं क्योंकि इनमें से दो गवाह यरुशलेम के पुनर्निर्मित मंदिर में 1260 दिनों तक गवाही देंगे और तत्पश्चात् महाक्लेश के बीचोंबीच ये विरोधी-मसीह के द्वारा मार ड़ाले जाएँगे (प्रकाशित. 11:3)। इन 144,000 को पहले ही "परमेश्वर के सेवक" के रूप में प्रस्तुत किया जा चुका है (प्रकाशित 7:3) और इन पर मुहर लगाई जाएगी ताकि तुरही वाली विपत्तियों से **पहले** की महाक्लेश की विपत्तियों में ये सुरक्षित रहें। हम यह भी जानते हैं कि स्वर्गारोहण के तुरन्त बाद शुरू होने वाली मुहर-वाली विपत्तियों के दौरान बहुत से लोग विश्वास के लिए शहीद होंगे (प्रकाशित 6:9-11)।

इन 144,000 गवाहों के दल में विशेष तौर पर इस्राएल के 12 गोत्रों में से हर एक गोत्र से 12,000 गवाह होंगे और इनको इस्राएल में से *"परमेश्वर और मेमने के लिए **पहला-फल**"* कहा गया है (प्रकाशित 14:4)। उनकी सेवकाई विश्व भर में फैली हुई होगी और आज की जनसंख्या के हिसाब से प्रत्येक 48600 लोगों के लिए एक प्रचारक होगा। 42 महीनों में आज की तकनीकी सुविधाओं के चलते एक प्रचारक के लिए इतना काम कर पाना मुश्किल नहीं होगा। इन 144000 में से हर एक महाक्लेश के बीच तक शहीद हो जाएगा क्योंकि महाक्लेश के दूसरे भाग की शुरुआत की कटोरे-वाली विपत्तियों से पहले हम इन सबको स्वर्ग में परमेश्वर के सिंहासन के चारों ओर देखते हैं (प्रकाशित 14:1-5)।

मिस्र जैसा देश जहाँ करीब 10 करोड़ लोग हैं उनके बीच 2000 यहूदी प्रचारक होंगे जो परमेश्वर के राज्य का सुसमाचार सुनाएँगे और स्त्री-पुरुषों से गुहार लगायेंगे कि *"मन फिराओ क्योंकि स्वर्ग का राज्य निकट है।"* महाक्लेश के प्रथम अर्धांश में तीव्र सताव के बीच बहुत ही अद्भुत रूप से सुसमाचार

प्रचार होगा।

आज विश्व-जनसंख्या तीव्र गति से बढ़ रही है, ख़ासकर, अफ्रीका, मध्य-पूर्व और एशियाई देशों में, परन्तु महाक्लेश के प्रारम्भ से ही युद्ध, अकाल, मरी, और अन्य विपत्तियों के कारण संसार की जनसंख्या बहुत कम हो जाएगी। महाक्लेश के 7 वर्षों के बीच के समय तक संसार की जनसंख्या का आधे से ज़्यादा भाग ख़त्म हो जाएगा।

144,000 की संख्या को शाब्दिक तौर पर ही लेना होगा। परमेश्वर जानता है कि पूरे संसार में 42 महीनों में सुसमाचार पहुँचाने के लिए कितने प्रचारकों की ज़रूरत पड़ेगी। किन्तु असहस्राब्दीवादी लोगों के अन्दर बाइबल को शाब्दिक तौर पर लेने में बहुत विरूचि है और माईकल विल्कोक नामक उनके एक शिक्षक ने इन 144000 यहूदी गवाहों की एक विचित्र प्रतीकात्मक व्याख्या का कहीं से उद्धरण दिया है। उसने लिखाः

"यह 144000 मसीह की पूरी कलीसिया का प्रतीक है। पवित्रशास्त्र के अनुसार, वह कहते हैं, 3 परमेश्वर का अंक है; 4 सृष्टि का या संसार का; 3 गुणा 4 होता है 12 यानि कलीसिया का अंक (कलीसिया के द्वारा परमेश्वर संसार में काम कर रहा है); 12 गुणा 12 है 144 यानि की पूरी कलीसिया; 10 का मतलब है पूर्णता; 10 गुणा 10 गुणा 10 से मिलता है 1000, जो कि तीन दायरों (डायमैन्शन्स्) की पूर्णता को दिखाता है; अतः 12 गुणा 12 गुणा 1000 यानि 144000 का मतलब है कलीसिया की पूर्णता" (*आई सॉ हैवन ओपन्ड,* पृष्ठ 60)।

हिप्पो के अगस्टिन ने भी इसी तरह के मूर्खतापूर्ण तर्कों का इस्तेमाल करते हुए मसीह के पुनरागमन पर होने वाले 1000 सालों के शाब्दिक शासन को अपनी मनगढ़ंत व्याख्या से कुछ और ही बना ड़ाला।

कब सम्पूर्ण इस्राएल का उद्धार होगा?

वास्तव में बाइबल हमें सटीक तौर वह समय बताती है जब सम्पूर्ण इस्राएल राष्ट्र का उद्धार होगा। मूसा ने कहा,

"अन्त के दिनों में जब तुम संकट में पड़ो, और ये सब विपत्तियाँ तुम पर आ पड़ेंगी, तब तुम अपने परमेश्वर यहोवा की ओर फिरो और उसकी मानना... वह तुम को न छोड़ेगा (व्यवस्था. 4:30.31)।

यहेजकेल की पुस्तक से पता चलता है कि इस्राएल प्रभु के पास लौटेगा जब रूस और इस्लामी देशों का आक्रमण होगा।

*"**उस दिन से आगे** इस्राएल का घराना जान लेगा कि यहोवा हमारा परमेश्वर है"* (यहेजकेल 39:22)।

योएल के दूसरे अध्याय में उस समय के बारे में बताया गया है जब पवित्रात्मा इस्राएल पर उण्ड़ेला जाएगा। यह *"प्रभु के दिन"* (महाक्लेश का दूसरा नाम) में होगा और यह महाक्लेश के पहले अर्धान्श में होगा जब *"उत्तर दिशा की सेना"* देश पर चढ़ आएगी (योएल 2:20)। रूस की उत्तरी सेना तुर्की, ईरान, लिबिया और सूड़ान (बाइबल में एथियोपिया) के अपने इस्लामी सहयोगियों के साथ उस समय ईश्वरीय हस्तक्षेप द्वारा नष्ट कर दी जाएगी जब इस्राएल प्रभु की दुहाई देगा। आक्रमणकारियों के छः में से केवल एक भाग ही बच कर सईबेरिया की तरफ निकल पाएगा (यहेजकेल 39:2; योएल 2:20)।

मागोग (रूस) जला दिया जाएगा और उसके साथ वे भी जो *द्वीपों पर लापरवाही से रहते हैं* (यहेजकेल 39:6)।

सात साल के महाक्लेश के दूसरे अर्धांश में विरोधी-मसीह अपनी सेनाओं को इस्राएल के विरुद्ध एकत्रित करेगा जो अंत में हर-मगिद्दोन युद्ध का कारण बनेगा (योएल 3) और यह युद्ध चर्मसीमा पर होगा जब मसीह अपनी स्वर्गीय सेना के साथ अपने छुड़ाए हुए लोगों के बचाव के लिए प्रगट होगा (जकर्याह 14:1,2)।

इस्राएल की पुनरुत्थापना के तीन चरण - यहेजकेल अध्याय 37

यहेजकेल को एक भविष्यद्वाणी दी गई थी जिसमें उसने इस्राएल को देखा एक बड़ी घाटी में बहुत सी छितराई हुई सूखी हड्डियों के रूप में। हमें कोई शक नहीं है कि यह भविष्यद्वाणी इस्राएल के विषय में है, वास्तव में सभी 12 गोत्रों के विषय में, क्योंकि परमेश्वर ने उससे कहाः

"हे मनुष्य के सन्तानए ये हड्डियाँ इस्राएल के सारे घराने की उपमा हैं" (यहेजकेल 37:11)।

उत्तरी साम्राज्य के 10 गोत्र इसमें हैं ही और यह तब बिल्कुल स्पष्ट हो जाता है जब उस अध्याय में ही यहेजकेल से कहा गया दो लकड़ियों को लेने के लिए और एक पर उत्तरी साम्राज्य के लिए 'यूसुफ' लिखने के लिए और दूसरी पर 'यहूदा' लिखने के लिए। परमेश्वर ने कहा कि वह दोनों लकड़ियों को जोड़ देगा और कहाः

*"मैं उन को उस देश अर्थात इस्राएल के **पहाड़ों पर एक ही जाति** कर दूँगा और उन सभों का एक ही राजा होगा, और वे फिर दो न रहेंगे और न दो राज्यों में कभी बटेंगे"* (यहेजकेल 37:22)।

ब्रिटिश-इस्राएल अवधारणा का नामोनिशान नहीं बचेगा क्योंकि परमेश्वर जानता है कि 10 गोत्र के लोग मध्य एशिया में कहाँ-कहाँ राष्ट्रों के बीच में तित्तर-बित्तर हुए हैं और वे सब दक्षिणी साम्राज्य 'यहूदा' के यहूदियों के साथ लौट आएँगे जब प्रभु का पुनरागमन होगा।

इस्राएल की पुनरुत्थापना का **पहला चरण** तब हुआ जब 1897 में स्विट्ज़रलैंड़ के बसिल में "पहला ज़ायनिस्ट कान्ग्रेस" सम्पन्न हुआ जो एक ऐसा सम्मेलन था जिसमें यहूदियों के कई नेता पहली बार एक साथ एकत्रित हुए यहूदियों के लिए एक स्वदेश की योजना बनाने के लिए।

यहेजकेल से कहा गया था घाटी में छितरायी पड़ी उन सूखी हड्डियों पर भविष्यद्वाणी करने के लिए और जब उसने ऐसा किया तो एक भूकंप हुआ और *हड्डियाँ इकट्ठी होने लगीं और एक हड्डी दूसरी हड्डी से जुड़ने लगी* (यहेजकेल 37:7)।

1897 में यहूदी पूरी तरह से यहूदी-विरोधीवाद से झकझोर दिए गए थे और वे एकत्रित हुए अपने स्वदेश लौटने की योजना बनाने के लिए।

इस्राएल की पुनरुत्थापना का **दूसरा चरण** तब पूरा हुआ जब 1948 में इस्राएल फिर से एक राष्ट्र बना उसी ज़मीन पर जो परमेश्वर ने अब्राहम को दी थी।

जब यहेजकेल ने कंकालों पर भविष्यद्वाणी की तो वे माँस, नस और चर्म से ढ़ांपे गए पर उनमें श्वास न था। इसके द्वारा इस्राएल की आज की दशा एक सफल और सशक्त राष्ट्र के रूप में दर्शाया गया है, परन्तु आज यह देश आत्मिक तौर पर मृत है। रूढ़िवादी यहूदी पूरी तरह से यीशु मसीह के विरोधी हैं और दुनियावी यहूदी एक नास्तिक पदार्थवादी जीवन व्यतीत करते हैं। यहूदियों में से केवल एक छोटा सा भाग ही यीशु मसीह के पास लौट कर आया है और मसीह की देह का भाग बना है।

इस्राएल के पुनस्थापन का **आखिरी चरण** यहेजकेल ने दर्शन में देखा जब उससे मृत देहों पर भविष्यद्वाणी करने के लिए कहा गया। जब वह भविष्यद्वाणी करने लगा तब एक जीवित सेना तैयार होकर खड़ी हो गई (यहेज 37:10)। आत्मिक तौर पर मृत राष्ट्र पर पवित्रात्मा उण्ड़ेला जाएगा और *सारा इस्राएल उद्धार तब पाएगा* जब रूस और इस्लामी देशों की सेना उनकी ज़मीन पर महाक्लेश के पहले अर्धान्श में आक्रमण करेंगे (यहेज 39:22-29)।

जब इस्राएल परमेश्वर को पुकारेगा तब उसके शत्रुओं का विनाश होगा। एक वैश्विक भूकम्प, बड़े-बड़े ओले, मरी और ''हर व्यक्ति की तलवार उसके ही भाई के विरुद्ध होगी'' आक्रमण करने वाली रूस-इस्लामी देशों की संगठित सेना को इस्राएल की पहाड़ियों पर नष्ट करने के लिए (यहेज 38 :18 – 23)। जब भी इस्राएल ने प्रभु की बात मानी है उसको एक भी युद्ध में हार का सामना करना नहीं पड़ा है।

इस्राएल की पुनर्स्थापना के पहले दो चरणों के हम गवाह बन चुके हैं और अब केवल तीसरा चरण ही बचा हुआ है और हम जानते हैं कि वह आखिरी चरण कलीसिया के धरती पर से उठाए जाने के बाद यानि स्वर्गारोहण के बाद पूरा होगा।

आज 2019 की बात करें तो रूस, ईरान और तुर्की ने अपनी-अपनी फौज को इस्राएल पर चढ़ाई करने के लिए तैयार कर रखा है। दिसम्बर 2018 में राष्ट्रपति ट्रम्प ने उन आखिरी 2000 अमरीकी फौजियों को भी, इस्राएल की उत्तरी सीमा पर, सिरिया से वापस बुलाने का फैसला सुनाया। लेबानोन के हैज़बोल्लाह को ईरान हथियार देकर तैयार कर रहा है। सिरिया में रूसी जल-सेना और वायु-सेना के अड्डे पहले से ही हैं।

2018 में अनुमान लगाया गया था कि हैज़बोल्लाह ने 150000 मिसाईलों को इस्राएल की तरफ तैनात रखा है। कुछ अनुमान यह बताते हैं कि सिरिया में करीब 70000 ईरान के सैनिक हैं।

2018 में एक छोटे से समय के भीतर 'हमस' उग्रवादियों ने दक्षिणी इस्राएल में 400 मिसाईलें दागी थीं।

इस्राएल का दावा है कि वह मध्य-पूर्व में कहीं भी हमला बोलने की क्षमता रखता है और यह कि हैज़बोल्लाह द्वारा कोई भी हमला उनके देश के हर सैन्य ठिकाने की बर्बादी का कारण बनेगा। इस्राएल परमेश्वर की घड़ी है और यह भविष्यद्वाणी की घड़ी बताती है कि कलीसिया का स्वर्गारोहण यानि उठाया जाना बहुत ही निकट है। एक दुष्ट संसार पर महाक्लेश अचानक से आ पड़ेगा।

नई वाचा

इस्राएल ने उस सीनै पहाड़ वाली वाचा तोड़ दी थी जो परमेश्वर ने उनके साथ तब बाँधी थी जब वह मिस्र से बाहर निकला था। और बाद में फिलिस्तीनी वाचा के अंतर्गत यह परिणाम निकला कि

इस्राएल उस ज़मीन से बाहर खदेड़ा गया जो परमेश्वर ने अब्राहम को और उसके वंश को दिया था। परन्तु इस्राएल का मन-फिराव और रूपाँतरण हमेशा परमेश्वर के मन में रहा है। इस वजह से ही "रिफार्मड थियोलोजी" (मसीही धर्मविज्ञान का एक विचार-संप्रदाय) सम्पूर्णतः अन्यायपूर्ण है।

सर्वशक्तिमान परमेश्वर ने सौगंध खाई है कि वह कभी भी इस्राएल का परित्याग न करेगा और अगर वह लोग पृथ्वी के चारो कोनों में भी छितराये हुए क्यों न हों, हमेशा यह आशा बनी रहती है कि परमेश्वर उनको 'मनफिराए हुए और नम्र राष्ट्र' की तरह लौटा ले आएगा।

यिर्मयाह ने लिखाः

*"जिसने दिन को प्रकाश देने के लिये सूर्य को और रात को प्रकाश देने के लिये चन्द्रमा और तारागण के नियम ठहराए हैं, जो समुद्र को उछालता और उसकी लहरों को गरजाता है, और जिसका नाम सेनाओं का यहोवा है, वही यहोवा यों कहता है: **यदि ये नियम मेरे साम्हने से टल जाएँ तब ही यह हो सकेगा कि इस्राएल का वंश मेरी दृष्टि में सदा के लिये एक जाति ठहरने की अपेक्षा मिट सकेगा"*** (यिर्मयाह 31:35-36)।

इससे पहले कि परमेश्वर इस्राएल को त्याग दे, सूरज को रोशनी देना बंद करना होगा। और फिर भी ये विश्वास न "करनेवाले" असहस्राब्दीवादी दुस्साहस करके "स्थानांतरित धर्मविज्ञान" (रिप्लेसमैंट थियोलोजी) सिखाते हैं जिसके मुताबिक कलीसिया ने इस्राएल को प्रतिस्थापित कर दिया है और यह कि परमेश्वर ने यहूदियों को त्याग दिया है!

परमेश्वर ने वादा किया है कि वह अंत के दिनों में इस्राएल के साथ **नई वाचा** बाँधेगा।

*"फिर यहोवा की यह भी वाणी है, सुनए ऐसे दिन आने वाले हैं जब मैं **इस्राएल और यहूदा के घरानों से नई वाचा बूंगा।** वह उस वाचा के समान न होगी जो मैं ने उनके पुरखाओं से उस समय बाँधी थी जब मैं उनका हाथ पकड़ कर उन्हें मिस्र देश से निकाल लाया क्योंकि यद्यपि मैं उनका पति था, तौभी उन्होंने मेरी वह वाचा तोड़ डाली। परन्तु जो वाचा मैं उन दिनों के बाद इस्राएल के घराने से बूंगा, वह यह है: **मैं अपनी व्यवस्था उनके मन में समवाऊँगा, और उसे उनके हृदय पर लिखूंगा और मैं उनका परमेश्वर ठहरूँगा और वे मेरी प्रजा ठहरेंगे, यहोवा की यह वाणी है"*** (यिर्म. 31:31-33)।

कलीसिया जैतून वृक्ष (इस्राएल) की *"जड़ की चिकनाई"* में से भागी हुई (रोमियों 11:17) परन्तु अंतिम दिनों में नई वाचा तो इस्राएल के साथ ही होगी! और यह वाचा इस्राएल के पूरे घराने के लिए होगी यानि 'इस्राएल (उत्तर के 10 गोत्र) और यहूदा (दक्षिण के 2 गोत्र)' दोनों के लिए।

इसलिए जब पौलुस कहता है कि *सम्पूर्ण इस्राएल का उद्धार होगा* (रोमियों 11:26), वह तुरन्त समझाता है: *"उनके साथ मेरी यही वाचा होगी, जब मैं उनके पापों को दूर कर दूँगा"* (रोमियो 11:27)।

यहेजकेल ने भविष्यद्वाणी की कि इस्राएल अपनी ज़मीन पर अविश्वास की दशा में ही लौटेगा। यह फिलिस्तीनी वाचा के अंतर्गत नहीं होगा क्योंकि उसमें आशीष से पहले मन-फिराव अनिवार्य है। परमेश्वर ने कहा,

"इस कारण तू इस्राएल के घराने से कह, परमेश्वर यहोवा यों कहता है, हे इस्राएल के घराने, मैं इस को तुम्हारे निमित्त नहीं, परन्तु अपने पवित्र नाम के निमित्त करता हूँ जिसे तुम ने उन जातियों में अपवित्र

ठहराया जहाँ तुम गए थे'' यहेज 36:22,32।

और मैं अपने बड़े नाम को पवित्र ठहराऊँगा, जो जातियों में अपवित्र ठहराया गया, जिसे तुम ने उनके बीच अपवित्र किया, और जब मैं उनकी दृष्टि में तुम्हारे बीच पवित्र ठहरूँगा, तब वे जातियाँ जान लेंगी कि मैं यहोवा हूँ, परमेश्वर यहोवा की यही वाणी है। मैं तुम को जातियों में से ले लूँगा, और देशों में से इकट्ठा करूँगा, और तुम को तुम्हारे निज देश में पहूँचा दूँगा। मैं तुम पर शुद्ध जल छिड़कूँगा, और तुम शुद्ध हो जाओगे और मैं तुम को तुम्हारी सारी अशुद्धता और मूरतों से शुद्ध करूँगा। मैं तुम को नया मन दूँगा, और तुम्हारे भीतर नई आत्मा उत्पन्न करूँगा, और तुम्हारी देह में से पत्थर का हृदय निकाल कर तुम को माँस का हृदय दूँगा। और मैं अपना आत्मा तुम्हारे भीतर देकर ऐसा करूँगा कि तुम मेरी विधियों पर चलोगे और मेरे नियमों को मान कर उनके अनुसार करोगे। तुम उस देश में बसोगे जो मैं ने तुम्हारे पितरों को दिया था, और तुम मेरी प्रजा ठहरोगे, और मैं तुम्हारा परमेश्वर ठहरूँगा। और मैं तुम को तुम्हारी सारी अशुद्धता से छुड़ाऊँगा, और अन्न उपजने की आज्ञा देकर, उसे बढ़ाऊँगा और तुम्हारे बीच अकाल न डालूँगा। मैं वृक्षों के फल और खेत की उपज बढ़ाऊँगा, कि जातियों में अकाल के कारण फिर तुम्हारी नामधराई न होगी। तब तुम अपने बुरे चालचलन और अपने कामों को जो अच्छे नहीं थे, स्मरण कर के अपने अधर्म और घिनौने कामों के कारण अपने आप से घृणा करोगे। परमेश्वर यहोवा की यह वाणी है, तुम जान लो कि मैं इस को तुम्हारे निमित्त नहीं करता। हे इस्राएल के घराने अपने चालचलन के विषय में लज्जित हो और तुम्हारा मुख काला हो जाए'' (यहेजकेल 36:22,32)।

किन्तु जब वे **अविश्वास में ही लौटेंगे** उसके पश्चात् क्या होगा उसके विषय में परमेश्वर ने कहा, *''मैं तुम को जातियों में से ले लूँगा, और देशों में से इकट्ठा करूँगा, और तुम को तुम्हारे निज देश में पहूँचा दूँगा। मैं तुम पर शुद्ध जल छिड़कूँगा, और तुम शुद्ध हो जाओगे और मैं तुम को तुम्हारी सारी अशुद्धता और मूरतों से शुद्ध करूँगा। मैं तुम को नया मन दूँगा, और तुम्हारे भीतर नई आत्मा उत्पन्न करूँगा, और तुम्हारी देह में से पत्थर का हृदय निकाल कर तुम को माँस का हृदय दूँगा। और मैं **अपना आत्मा तुम्हारे भीतर देकर** ऐसा करूँगा कि तुम मेरी विधियों पर चलोगे और मेरे नियमों को मान कर उनके अनुसार करोगे''* (यहेजकेल 36:24–27)।

परमेश्वर ने इस्राएल से बहुत से वायदे किए हैं और इनको अनदेखा करना बहुत बड़ी ग़लती है और परमेश्वर के वचन का तिरस्कार है। इस्राएल अब अपने स्वदेश में लौट चुका है और बहुत जल्दी ही उत्तर की दिशा से उस पर आक्रमण होगा और देश के दो–तिहाई यहूदी मारे जाएँगे (जकर्याह 13:8–9)। परन्तु जो शेष बचेंगे वे प्रभु को पूरे दिल से पुकारेंगे और परमेश्वर उनकी सुनकर उनको बचाएगा। मूसा ने इस्राएल को याद दिलाया था कि उनका मन–परिवर्तन तब होगा *जब अंतिम दिनों में वे सताव और उपद्रव में होंगे''* (व्यवस्था. 4:30)।

सारा संसार इस्राएल के मन–परिवर्तन का इंतज़ार कर रहा है क्योंकि उनके द्वारा ही सारी दुनिया आशीषित होगी। पौलुस ने इसको *''मृत्यु में से जीवन''* कहा है (रोमियों 11:15)।

दो चरणों में स्वदेश को वापसी

बाइबल सिखाती है कि अंतिम दिनों में दो चरणों में यहूदी अपने स्वदेश को वापस जाएँगे। हमने उस

पहली वापसी के बारे में बता दिया है जो अविश्वास की दशा में होगी और हमने देखा कि इस वापसी का मकसद होगा इस्राएल को दण्ड़ में से ले जाना ताकि वह मन-फिराव तक पहुँच सके। महाक्लेश के प्रथम अर्धांश में परमेश्वर रूस और इस्लामी राष्ट्रों को इस्तेमाल करेगा इस्राएल का गुरूर मिटाने के लिए।

पहली वापसी न केवल अविश्वास की दशा में होगी बल्कि यह अधूरी वापसी होगी। जब 1948 में इस्राएल एक राष्ट्र बना तो वहाँ केवल छः लाख यहूदी थे परन्तु 2018 में 65 लाख से ज़्यादा यहूदी इस्राएल में थे।

संसार भर के यहूदियों की गिनती स्पष्ट नहीं है परन्तु 2018 में यह गिनती लगभग 1 करोड़ 45 लाख है। करीब 60 लाख यहूदी अमरीका में रहते हैं और बाकी के लोग लगभग 100 देशों में तित्तर-बित्तर हैं।

कलीसिया के उठाए जाने के बाद जो 144,000 यहूदी पुरुष मसीह की तरफ मुड़ेंगे और जो परमेश्वर के राज्य का सुसमाचार *सारी दुनिया* और *सारे देशों* को सुनायेंगे वे, सारी संभावना में, दुनिया भर के यहूदी समुदायों में से होंगे और, इस कारण, उनके पास सभी भाषाओं में क्षमता होगी सुसमाचार को उनके संगी यहूदियों व सभी अन्य-जातियों को सुनाने के लिए।

हम जानते हैं कि अमरीका में रहने वाले बहुत से यहूदियों का मन-परिवर्तन होगा और वे महा-क्लेश में बचे रहेंगे क्योंकि यशायाह ने भविष्यद्वाणी की थीः

"निश्चय द्वीप मेरी ही बाट देखेंगे, पहिले तो तर्शीश के जहाज आएँगे, कि तेरे पुत्रों को सोने चान्दी समेत तेरे परमेश्वर यहोवा अर्थात इस्राएल के पवित्र के नाम के निमित्त दूर से पहूँचाए, क्योंकि उसने तुझे शोभायमान किया है" (यशायाह 60:9)।

"तरसुस के जहाज़" की जो बात की गई है वह ब्रिटेन और अमरीका से ही संबंधित है क्योंकि इस्राएल के बाहर सबसे ज़्यादा यहूदी इन्ही दो जगहों में रहते हैं। न्यू यॉर्क में बहुत ज़्यादा धन है यहूदियों का और यशायाह की नबूवत से लगता है कि प्रभु के पुनरागमन के पश्चात् यह धन इस्राएल में भेज दिया जाएगा।

जब पवित्रशास्त्र कहता है कि *सम्पूर्ण इस्राएल का उद्धार होगा* को यक़ीनन इसमें वे यहूदी भी होंगे जो इस्राएल प्रान्त के **बाहर** रहते हैं। कलीसिया के स्वर्गारोहण के पश्चात् एक ऐसा दिन आएगा जब पृथ्वी पर का प्रत्येक यहूदी या तो एक अविश्वासी के तौर पर नाश हो जाएगा वरना मसीह की ओर मुड़ आएगा। जकर्याह 13:8-9 के अनुसार दो-तिहाई यहूदी मर जाएँगे। हमें यह बताया नहीं गया है कि इस्राएल के बाहर कितने यहूदी मारे जाएँगे।

परन्तु जब मसीह राज करने हेतु वापस आएगा तो दुनिया भर में से हर एक बचा हुआ यहूदी अपनी ज़मीन पर लौट आएगा। मत्ती ने यह बात बताई है जब उसने लिखाः

"तब मनुष्य के पुत्र का चिन्ह आकाश में दिखाई देगा, और तब पृथ्वी के सब कुलों के लोग छाती पीटेंगे और मनुष्य के पुत्र को बड़ी सामर्थ्य और ऐश्वर्य के साथ आकाश के बादलों पर आते देखेंगे। और वह तुरही के बड़े शब्द के साथ अपने दूतों को भेजेगा, ***और वे आकाश के इस छोर से उस छोर***

तक, चारों दिशा से उसके चुने हुओं को इकट्ठे करेंगे'' (मत्ती 24:30–31)।

''और तब वे जान लेंगे कि यहोवा हमारा परमेश्वर है, क्योंकि मैं ने उन को जाति–जाति में बँधुआ कर के फिर उनके निज देश में इकट्ठा किया है। ***मैं उन में से किसी को फिर परदेश में न छोड़ूँगा''*** (यहेजकेल 39:28)।

महाक्लेश के अंत में जब प्रभु अपने छुड़ाए हुए लोगों को वापस स्वदेश लाएगा तब बहुत सी अचरज भरी बातें होंगी। ऐसा भी हो सकता है कि आज दुनिया भर में यहूदी लोगों की जो गिनती का अनुमान लगाया जा रहा है वह पूरी तरह से ग़लत साबित हो जाए। परमेश्वर जानता है कि कहाँ उसने इस्राएल के गोत्रों को गाड़ा हुआ है क्योंकि इस्राएल की *''खेत में गड़े हुए ख़ज़ाने''* से तुलना की गई है (मत्ती 13:44)। आज खोए हुए सभी गोत्र उस दिन पाए जाएँगे। यशायाह यहूदियों के उस अचरज को अभिव्यक्त करता है जब परमेश्वर हर एक छुड़ाए हुए यहूदी को स्वदेश ले आएगाः

''अपनी आँखें उठा कर चारों ओर देख, वे सब के सब इकट्ठे हो कर तेरे पास आ रहे हैं। यहोवा की यह वाणी है कि मेरे जीवन की शपथ, तू निश्चय उन सभों को गहने के समान पहिल लेगी, तू दुल्हिन की नाईं अपने शरीर में उन सब को बा लेगी।। तेरे जो स्थान सुनसान और उजड़े हैं, और तेरे जो देश खण्डहर ही खण्डहर हैं, उन में अब निवासी न समाएँगे, और तुझे नष्ट करने वाले दूर हो जाएँगे। तेरे पुत्र जो तुझ से ले लिए गए वे फिर तेरे कान में कहने पाएँगे कि यह स्थान हमारे लिये सकेत है, हमें और स्थान दे कि उस में रहें। तब तू मन में कहेगी किस ने इन को मेरे लिये जन्माया? मैं तो पुत्रहीन और बांझ हो गई थी, दासत्व में और यहाँ वहाँ मैं घूमती रही, इन को किस ने पाला? देख, मैं अकेली रह गई थी, फिर ये कहाँ थे?'' (यशायाह 49:18 – 27)।

वर्तमान इस्राएल देश का अधिकतर भाग रेगिस्तानी है और एक बड़ी जनसंख्या के भरण–पोषण के लिए पर्याप्त नहीं है परन्तु जब परमेश्वर अपने उद्धार पाए हुए लोगों को स्वदेश लौटा ले आएगा तब ज़मीन पर बारिश भी लौटेगी और मरूभूमि समृद्ध हो जाएगीः

''यहोवा का यह वचन मेरे पास पहूँचाए हे मनुष्य के सन्तान, अपना मुँह सेईर पहाड़ की ओर कर के उसके विरुद्ध भविष्यद्वाणी कर'' (यशायाह 35 :1–2)।

स्वदेश में यहूदियों की पहली वापसी अविश्वास की दशा में है और अधूरी है। 1850 में प्रारम्भ हुए ज़ायनिस्ट आंदोलन के अंतर्गत यह वापसी हम तब से ही देखते आए हैं और ख़ासकर 1948 के पश्चात्।

फिलिस्तीनी वाचा के अंतर्गत प्रत्येक यहूदी का स्वदेश में लौटना तब पूरा होगा जब महाक्लेश के दौरान इस्राएल मसीह की ओर मुड़ेगा (व्यवस्था. 30:1–3)। 2018 में रूस, ईरान और तुर्की इस्राएल की उत्तरी सीमा पर तैनात हैं इसलिए हो सकता है कि स्वर्गारोहण (कलीसिया का स्वर्गारोहण) बहुत ही निकट हो। कलीसिया का हटाया जाना अनिवार्य है इस्राएल के छुड़ाए जाने से पहले, और तब परमेश्वर इस्राएल के साथ नई वाचा बाँधेगा।

अध्याय 3 – यहूदियों और यरुशलेम के लिए परमेश्वर की "70-सप्ताहों" की योजना

पूर्वज्ञान ईश्वरत्व की पहचान है। केवल परमेश्वर ही भविष्य को जानता है और वही अपने भविष्यद्वक्ताओं को ये बातें बता सकता है। यशायाह ने लिखाः

"प्राचीनकाल की बातें स्मरण करो जो आरम्भ ही से है, क्योंकि ईश्वर मैं ही हूँ, दूसरा कोई नहीं, मैं ही परमेश्वर हूँ और मेरे तुल्य कोई भी नहीं है। ***मैं तो अन्त की बात आदि से और प्राचीनकाल से उस बात को बताता आया हूँ जो अब तक नहीं हुई।*** *मैं कहता हूँ, मेरी युक्ति स्थिर रहेगी और मैं अपनी इच्छा को पूरी करूँगा"* (यशायाह 46:9-10)।

परमेश्वर ने यिर्मयाह को यह प्रकट किया था कि इस्राएल की बेबीलोन की बँधुआई 70 सालों की होगी और यह भी कि उसके बाद यहूदियों की उनके स्वदेश में वापसी होगी। बँधुआई के दौरान दानिय्येल बेबीलोन में रहने वाला एक बूढ़ा आदमी था और जब वह प्रार्थना कर रहा था और अपने लोगों के पापों को अंगीकार कर रहा था तब जिब्राईल स्वर्गदूत उसके पास आया और उसने उसको उसके लोगों और यरुशलेम के भविष्य के बारे में समझ दी। जिब्राईल ने कहाः

"तेरे लोगों और तेरे पवित्र नगर *के लिए सत्तर सप्ताह ठहराए गए हैं कि उनके अन्त तक (1) अपराध का होना बन्द हो, और (2) पापों का अन्त और (3) अधर्म का प्रायश्चित किया जाए, और (4) युगयुग की धार्मिकता प्रगट हो; और (5) दर्शन की बात पर और भविष्यद्वाणी पर छाप दी जाए, और (6) परमपवित्र का अभिषेक किया जाए"* (दानि. 9:9-24)।

केवल पाँच आयतों में वह भविष्यद्वाणी दर्ज है जिसमें **445 ईसा पूर्व से लेकर यहूदियों और यरुशलेम का परमेश्वर के राज्य में आशीषित होने तक इस्राएल के सारे इतिहास की रूपरेखा दी गई है।** छः बिन्दुओं में वह लक्ष्य बताया गया है जिसकी तरफ इस्राएल समय में से सफर करता हुआ अग्रसर हो रहा है। अंततः इस्राएल परमेश्वर की दया का अनुभव करेगा, उसके पाप माफ किए जाएँगे, वह परमेश्वर के नियमों का उल्लंघन करना छोड़ देगा, और फिर हमेशा एक धर्मी राष्ट्र बना रहेगा। यरुशलेम के विषय में की गई सभी भविष्यद्वाणियाँ पूरी होंगी और परमेश्वर उनके बीच में वास करेगा।

मसीहत ने और धर्म-संप्रदायों ने इस भविष्यद्वाणी को मसीह के पहले आगमन पर ही रोक दिया और उसके बाद "स्थानातंरित धर्मविज्ञान" का प्रचार करने लग गए यह कल्पना करते हुए कि कलीसिया ही अब "आत्मिक इस्राएल" है और यह भी कि परमेश्वर ने अपने चुनी हुई प्रजा के रूप में इस्राएल को देखना छोड़ दिया है। इस निष्कर्ष तक पहुँचने के लिए पवित्रशास्त्र को तोड़ा-मरोड़ा गया है ताकि असहस्राब्दीवादी सिद्धान्तों को जगह दी जा सके और इसके लिए इतिहास के तथ्यों को बड़ी आसानी से नज़रअंदाज़ भी कर दिया गया है।

यदि शब्दों से कोई अर्थ निकाला जा सकता है तो दानिय्येल की इस भविष्यद्वाणी का अंत "यहूदियों और यरुशलेम" के अनन्त आशीष के साथ ही होगा।

"तेरे लोगों (इस्राएल) और तेरे पवित्र नगर (यरुशलेम) के लिए सत्तर सप्ताह (सात) ठहराए गए हैं" (दानि. 9:24)।

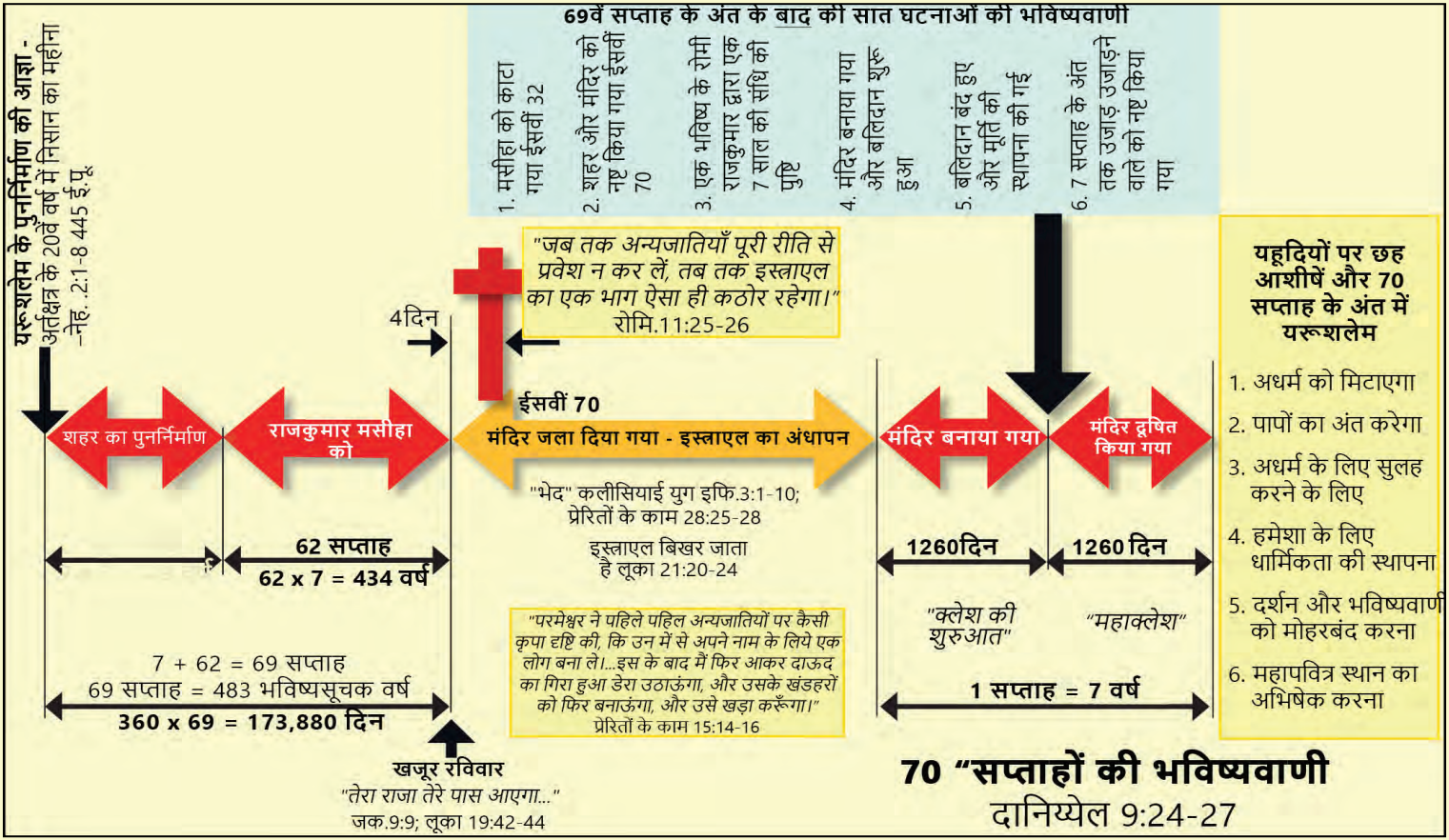

भविष्यद्वाणी के प्रारम्भ का समय

"सो यह जान और समझ ले, ***कि यरूशलेम के फिर बसाने की आज्ञा के निकलने से ले कर अभिषिक्त प्रधान के समय*** *तक सात सप्ताह बीतेंगे। फिर बासठ सप्ताहों के बीतने पर चौक और खाई समेत वह नगर कष्ट के समय में फिर बसाया जाएगा"* (दानि. 9:25)।

मादी दारा के प्रथम वर्ष में यानि करीब 538 ईसा पूर्व में दानिय्येल ने भविष्यद्वाणी की। 536 ई.पू. में कुस्रू सम्राट ने एक आज्ञा दी जिसके अंतर्गत ज़रूब्बाबेल को यरुशलेम लौटने और **मंदिर का पुनर्निर्माण** करने की अनुमति मिली। जब ज़रूब्बाबेल आया तो उसको सामरी लोगों के विरोध का सामना करना पड़ा और काम 20 सालों तक टलता गया। तब जाकर दारा महान के द्वारा 522 ई.पू. में निकाली गई एक और आज्ञा के बाद मंदिर का काम पूरा हो सका।

हम जानते हैं कि इस समय यरुशलेम शहर का पुनर्निर्माण **नहीं** हुआ था। हम पाते हैं कि इसके करीब 70 वर्ष बाद राजा अर्तक्षत्र के दरबार में उसके पिलानेहारा, नहेमायाह, का चेहरा राजा की उपस्थिति में उदास था। जब उससे पूछा गया कि उसका चेहरा क्यों उदास है तो उसने जवाब दिया, *"जब* ***वह नगर जिस में मेरे पुरखाओं की कबरें हैं, उजाड़ पड़ा है*** *और उसके फाटक जले हुए हैं, तो मेरा मुँह क्यों न उतरे?"* (नहेमायाह 2:3)।

हम सटीक तौर पर जानते हैं कि यह घटना कब घटित हुई क्योंकि बाइबल बताती है कि वह फसह का महीना यानि निसान का महीना था और अर्तक्षत्र राजा का 20वाँ साल था (445 ई.पू.)। अर्तक्षत्र ने आज्ञा पारित की कि नहेमायाह **यरुशलेम जाकर नगर का पुनर्निर्माण कर सकता है।** इससे हम "सत्तर सप्ताहों" की भविष्यद्वाणी के प्रारम्भ का सही समय तय कर सकते हैं।

कुछ धर्म-संप्रदाय इस भविष्यद्वाणी के प्रारम्भ की तिथि को अर्तक्षत्र का 7वाँ वर्ष मानते हैं यानि 457 ई.पू. जब एज्रा उस मंदिर में, जिसका निर्माण पूरा हो चुका था, व्यवस्था सिखाने के लिए आया। किन्तु जब **13 वर्ष बाद** नहेमायाह आया तो उसका पहला काम था, कारीगरों की सुरक्षा के लिए, शहर के चारों ओर शहरपनाह को बनाना। फिर वह कहता है:

"नगर तो लम्बा चौड़ा था, परन्तु उस में लोग थोड़े थे, ***और घर नहीं बने थे।*** (नहेमायाह 7:4)।

शहर की हालात इतनी खराब थी कि नहेमायाह को अपनी सवारी के ऊपर से उतरना पड़ा क्योंकि वहाँ जगह नहीं थी। *"परन्तु मेरी सवारी के पशु के लिये आगे जाने को स्थान न था।"* (नहेमायाह 2:14)।

बिना किसी शक के, अर्तक्षत्र की आज्ञा जो निसान महीने में 445 ई.पू. में निकली वही उन "सत्तर सप्ताहों" की शुरुआत है जो परमेश्वर ने **यरुशलेम और यहूदियों** के लिए ठहराए हैं इस्राएल राष्ट्र को मसीह के अनन्त साम्राज्य की आशीष तक पहूँचाने के लिए।

मसीहा यानि राजपुत्र तक 69 सप्ताह होंगे

जिस इब्रानी शब्द का *'सप्ताह'* अनुवाद किया गया है उसका वास्तव में अर्थ होता है *'सात'*। और 70 'सात' को तीन भागों में बाँटा हुआ है। सात सात (49) के साथ बासठ सात (434) जुड़कर 69 सात (483) बनते हैं और एक सात भविष्य का है। उनहत्तर सातों का पूरा होना ज़रूरी था मसीहा के यरुशलेम में राजकुमार अथवा यहूदियों के राजा के रूप में प्रकट होने तक।

दानिय्येल 10:2-3 में हम देखते हैं कि दानिय्येल *"तीन पूरे सप्ताहों"* तक यानि 21 दिनों तक शोक मना रहा था। यहाँ इब्रानी भाषा में लिखा है ***"दिनों के** तीन सात"*। दानिय्येल 9:24 से 27 में हम *"दिन"* शब्द नहीं पाते; वहाँ केवल ऐसा लिखा है *"सत्तर सात"*। और सात *"सात"* (49 वर्ष) जो प्रतिकूल समय में नगर के निर्माण के लिए चाहिए उससे यह समझ आता है कि यहाँ "सात" का तात्पर्य सात सालों के हैं। विपरीत परिस्थितियों में नगर के पुनर्निर्माण में 49 सालों का समय लगना स्वाभाविक है।

इस भविष्यद्वाणी के दूसरे चरण में हम देखते हैं कि 434 और वर्षों के बीतने पर हम *"राजकुमार और मसीह"* तक पहुँच जाते हैं। सर रोबर्ट एँडरसन ने इससे जुड़े हुए आँकड़े और गणित दिए हैं। भविष्यद्वाणी के वर्ष में 360 दिन होते हैं और 483 भविष्यद्वाणी-वर्ष का मतलब होता है 1,73,880 दिन।

यहूदी लोग चन्द्र-पंचांग का इस्तेमाल करते थे और उसमें निसान का महीना पहला महीना होता है। जबकि "445 ई.पू." ग्रैगोरियन सौर-कैलेंडर पर आधारित है। 445 ई.पू. निसान महीने के 10वें दिन से लेकर 32 ईसवीं निसान महीने के 10वें दिन तक सटीक तौर पर 173880 दिन होते हैं। और वह दिन था खजूर-रविवार जब मसीह ने यरुशलेम में, जकर्याह की भविष्यद्वाणी के अनुसार, इस्राएल देश के सामने अपने आप को **उनके राजा** के रूप में प्रस्तुत किया:

*"हे सिय्योन बहुत ही मगन हो। हे यरूशलेम जयजयकार कर! क्योंकि **तेरा राजा तेरे पास आएगा,** वह धर्मी और उद्धार पाया हुआ है, वह दीन है, और गदहे पर वरन गदही के बच्चे पर चढ़ा हुआ आएगा"* (जकर्याह 9:9)।

प्रभु ने अपनी सेवा के दौरान कभी भी अपने आप को इस्राएल के राजा के रूप में उनके सामने प्रस्तुत नहीं किया था सिवाय उस इतवार के जो फसह-सप्ताह की शुरुआत में निसान महीने का दसवाँ दिन था। आश्चर्य की बात यह है कि जब देश के नेता यीशु को मार ड़ालने का षड़यंत्र रच रहे थे तब साधारण लोगों ने उसको अपने राजा के रूप में स्वीकारते हुए कहा,

*"कि धन्य है वह **राजाए** जो प्रभु के नाम से आता है, स्वर्ग में शान्ति और आकाश मण्डल में महिमा हो।"* (लूका 19:38)।

इस तरह उस "पाम सन्डे" यानि खजूर-इतवार तक 69 *"सात"* पूरे हो चुके थे और भविष्यद्वाणी के अनुसार कुछ और घटनाओं का अभी होना बाकी था।

"और उन बासठ सप्ताहों के बीतने पर अभिषिक्त पुरुष काटा जाएगा, और उसके हाथ कुछ न लगेगा" (दानि. 9:26)।

कुछ लोग 69वें सप्ताह का अंत यीशु के बपतिस्मा को समझते हैं परन्तु यह व्याख्या की ग़लती है और इतिहास को समझने की ग़लती है। बपतिस्मा के वक्त यीशु ने अपने आप को राष्ट्र के सामने राजपुत्र-मसीह के रूप में नहीं अपितु परमेश्वर के मेमने के रूप में प्रस्तुत किया। जकर्याह 9:9 की भविष्यद्वाणी से भी स्पष्ट होता है कि वह समय जब यीशु ने गदही के बच्चे पर सवार होकर यरुशलेम में **यहूदियों के राजा** की तरह प्रवेश किया वह पाम सन्डे ही था।

"यातना सप्ताह" के इतवार, सोमवार और मंगलवार को यीशु ने यरुशलेम में सेवा की। उस बुधवार को यीशु बेतनिय्याह में रहे और शमौन कोढ़ी के घर पर थे जब एक स्त्री ने संगमरमर के पात्र में बहुमूल्य इत्र से यीशु का, उसके गाड़े जाने के लिए, अभिषेक किया। देर बुधवार को प्रभु ने अपने दो चेलों को यरुशलेम में भेजा कि वे कमरा तैयार करें ताकि वह अपने चेलों के साथ फसह के पर्व को मना सके।

फसह का वह दिन जब मेम्नों का वध किया जाता था वह था निसान महीने का 14वाँ दिन और उस दिन की शुरुआत **बुधवार के सूर्यास्त से होती है।** "अंतिम-भोज" यानि प्रभु-भोज बुधवार की संध्या को मनाया गया और जब फसह की रोटी खाने के बाद यीशु गतसमनी के बाग में गए तो वहाँ उसे पकड़ लिया गया। प्रभु को प्रधान याजकों के सामने, पिलातुस और फिर हेरोद के सामने और पुनः एक बार पिलातुस के सामने पेश किया गया। अंततः गुरुवार की सुबह नौ बजे यीशु को क्रूस पर चढ़ाया गया और दोपहर तीन बजे, जब मंदिर में मेम्नों को बध किया जा रहा था तब, प्रभु ने अपना प्राण त्याग दिया। गुरुवार को सूर्यास्त से पहले ही यीशु को दफनाया गया। गाड़े जाने और जी उठने के दिन को मिलाकर देखें तो तीन दिन और तीन रात के बाद वह सप्ताह के पहले दिन सूर्योदय से पहले मुर्दों में से जी उठा।

मसीह के *"काटे जाने"* के बाद अगली घटना जो दानिय्येल द्वारा बताई गई वह थी यरुशलेम की तबाही जो 66 से 70 ईसवीं तक चले गृह-युद्ध में हुई जिसके अंत में 70 ईसवीं में यरुशलेम पर रोमी जनरल, तीतुस, ने कब्ज़ा कर लिया।

70 ईसवीं में यरुशलेम के पतन के बाद केवल *"उजड़ जाना तय है"* (दानिय्येल 9:26)। जब हम यरुशलेम के इतिहास को देखते हैं तो इस भविष्यद्वाणी को पूरा होते हुए पाते हैं। जो उजाड़ यरुशलेम के लिए परमेश्वर ने ठहराया उसमें निम्नलिखित बातें समाई हुई हैं:

- सन् 66 ई. में एक गृह युद्ध यरुशलेम में प्रारम्भ हुआ जिसने उस शहर की बहुत बुरी हालत कर दी और अंततः सन् 70 में रोमी सेना ने उसको बर्बाद कर दिया।

- 135 ई. में रोमी सम्राट हैड्रियन ने उस शमौन बार कोखबा की सेनाओं को परास्त किया जो अपने आप को मसीहा कहता था। हैड्रियन ने 580000 यहूदियों को मार ड़ाला। जब यरुशलेम के पास यहूदियों का बेथार गढ़ गिरा तब बार कोखबा मारा गया।

- मीका नबी ने जैसी भविष्यद्वाणी की थी, रोमी कमाँडर टर्नस रूफस ने यरुशलेम के टैम्पल माउन्ट को रौंद दिया (मीका 3:12) और वहीं पर ऐलिया कैपिटोलिनस नामक एक रोमी शहर बनाया रोमी सैनिकों के लिए जो रोमी देवता जुपिटर को समर्पित था। यहूदियों को साल में केवल एक दिन

कैपिटोलीना में प्रवेश करने की अनुमति थी – आव महीने के 9वें दिन जो कि वह दिन था जब मंदिर तोड़ा गया था।

• यरुशलेम का इतिहास बिल्कुल वैसा है जैसा दानिय्येल ने भविष्यद्वाणी की थी – लगातार उजड़ते रहने की कहानी। *एनसाईक्लोपीडिया विकीपीडिया* में लिखा है:
"यरुशलेम को दो बार नाश किया गया है, 23 बार उसकी घेराबंदी हुई है, 52 बार उस पर आक्रमण हुए हैं, और उस पर 44 बार कब्ज़ा बदला है।"

2018 में भी यहूदी विश्वभर में तित्तर-बित्तर हैं। यरुशलेम के आशीषित होने से पहले के 7 साल तब प्रारम्भ होंगे जब एक रोमी राजपुत्र इस्राएल के साथ एक सात साल की **संधि बाँधेगा** जो कि इस्राएल का आखिरी "सप्ताह" होगा।

दानिय्येल द्वारा बताया गया सालों का आखिरी "सप्ताह" तब तक नहीं शुरू हो सकता जब तक कि एक भावी राजकुमार, जिसके लोगों ने *"शहर को और उस पवित्रस्थान"* को 70 ईसवीं में नाश किया था, खड़ा होकर एक वाचा नहीं स्थापित करेगा (दानिय्येल 9:26)। वह व्यक्ति एक मुसलमान नहीं होगा बल्कि एक रोमी शासक होगा।

69वें और 70वें सप्ताह के बीच एक फ़ासला

इससे पहले बताई गई घटनाओं की श्रृंखला से यह स्पष्ट हो जाता है कि **69वें और 70वें सप्ताह के बीच एक दैविक रूप से स्थापित अन्तर है।** 70वाँ सप्ताह अभी शुरू नहीं हुआ पर जब होगा तब यरुशलेम के पुनर्निर्मित मंदिर में फिर से बलियों का चढ़ाया जाना शुरू हो जाएगा। उन अंतिम 7 सालों के बीचोंबीच आने वाला रोमी शासक, जिसके लोगों ने 70 ई. में मंदिर और पवित्रस्थान को नष्ट किया था, *"मेलबलि और अन्नबलि को बन्द करेगा; और कंगूरे पर उजाड़ने वाली घृणित वस्तुएँ दिखाई देंगी"* (दानिय्येल 9:27)।

असहस्राब्दीवादी इस आयत को मसीह के बलिदान के साथ जोड़ते हैं। पर वहाँ बलियों को रोकने का कारण यह लिखा है कि *"घृणित वस्तुओं को खड़ा किया जाएगा"।* निश्चय ही यीशु ने यहूदी बलियों को *"घृणित वस्तुओं को खड़ा"* करवाने के लिए नहीं रुकवाया।

इब्रानी भाषा के जिस शब्द का अनुवाद *"घृणित वस्तु"* किया गया है उसका संबंध मूर्तिपूजा से है और हम जानते हैं कि जो रोमी शासक 7 साल की संधि बांधने के लिए प्रगट होगा वह *"पाप का पुरुष"* यानि मसीह-विरोधी होगा जो, 2 थिस्सलुनीकियों 2:4 के अनुसार, अपनी ही मूर्ति मंदिर में स्थापित करेगा और दावा करेगा कि वह ही परमेश्वर है। यही है वह *"घृणित वस्तु"* और यह कहना ईश-निन्दा होगी कि यीशु मारा गया ऐसी दुष्टता को खड़ा करने के लिए।

इस वक्त यहूदी लोग मंदिर के पुनर्निर्माण की तैयारी कर रहे हैं। 2019 में टैम्पल इन्स्टिट्यूट के पास मंदिर की आराधना में इस्तेमाल होने वाली सभी चीज़ें तैयार हैं और 10 दिसम्बर 2018 को यहूदी

महासभा ने 70 देशों को निमंत्रित किया होमबलि की वेदी के समर्पण को देखने के लिए जो टैम्पल माउन्ट के बाहर वेलिन्ग वॉल के समीप खड़ा किया गया।

असहस्राब्दीवादी और धर्म-संप्रदाय के लोग 69वें और 70वें सप्ताह के बीच के इस स्पष्ट अंतर को नज़रअंदाज़ कर देते हैं और यह मानते हैं कि मसीह की मृत्यु के तुरन्त बाद 70वाँ सप्ताह पूरा हो चुका है। प्रिटैरिस्ट, यानि जो यह मानते हैं कि लगभग सभी बाइबल भविष्यद्वाणियाँ इतिहास में पूरी हो चुकी हैं, कहते हैं कि परमेश्वर का साम्राज्य धरती पर 70 ईसवीं में स्थापित हो चुका है। बाकी के कुछ लोग मानते हैं कि पिन्तेकुस्त के दिन परमेश्वर का साम्राज्य स्थापित हुआ था। असहस्राब्दीवादी यह मानते हैं कि वर्तमान में हम सहस्राब्दी साम्राज्य में जी रहे हैं और इसी समय साथ-साथ महाक्लेश भी चल रहा है।

असहस्राब्दीवादी शिक्षक इस बात हो बड़ी आसानी से भूल जाते हैं कि यह सारी भविष्यद्वाणी *"तेरे **(दानिय्येल के)** लोगों और तेरे **(दानिय्येल के)** पवित्र नगर के लिए"* (दानिय्येल 9:24) यानि यहूदियों और यरुशलेम के लिए। इसका कलीसिया से कोई लेना देना नहीं है।

इस गड़बड़ी का नतीजा यह है कि इस्राएल के लिए किए गए सभी वायदे - जिनसे पुराना नियम भरा हुआ है - अब शाब्दिक तौर पर नहीं लिए जा सकते और सबको आत्मिक व्याख्या देकर कलीसिया पर, जिसको "आत्मिक इस्राएल" समझा जा रहा है, प्रयोग करना पड़ता है। इसकी वजह है गलतियों की पत्री की एक आयत जिसमें पौलुस ने आशीष देते वक्त *"परमेश्वर के इस्राएल"* पर शान्ति और करुणा की घोषणा की। जबकि पौलुस वहाँ **अन्यजातियों में से आए हुए विश्वासियों** की नहीं बल्कि उनकी बात करना चाहता है जो इस्राएल में **प्रभु के है** यानि **यहूदी विश्वासी।**

असहस्राब्दीवादी शिक्षा का कपट तब प्रगट हो जाता है जब वे आत्मिक व्याख्या देकर इस्राएल के लिए कही गई **आशीषों** को कलीसिया के लिए इस्तेमाल करते हैं परन्तु **शापों को इस्राएल** के लिए और शाब्दिक तौर पर यहूदियों के लिए इस्तेमाल करते हैं।

प्रेरित पौलुस ने यह बिल्कुल साफ किया कि इस्राएल के इतिहास में बीच में एक फासला है। जैतून के पेड़ की स्वाभाविक ड़ालियाँ तोड़ी गईं और अन्यजाति, जिनको पौलुस जंगली जैतून कहता है, उस अच्छे जैतून के पेड़ में साटे गए। वहाँ उसने यह भी कहा कि परमेश्वर सक्षम है **उन काटे गए स्वाभाविक ड़ालियों को दुबारा जैतून के पेड़ में साटने के लिए** (रोमियों 11:23) और यह भी कि इस्राएल का *"अंधापन"* केवल तब तक ही रहेगा जब तक कि अन्यजातियाँ पूरी रीति से प्रवेश न कर लें (रोमियो 11:25)।

यहाँ यह बात स्पष्ट होती है कि **एक ऐसा युग या समय रहेगा** जब *"स्वाभाविक जैतून की ड़ाली"* यानि इस्राएल तोड़ ड़ाला जाएगा और *"जंगली जैतून की ड़ाली"* यानि अन्यजातियाँ साटी जाएँगी। आगे यह भी लिखा है कि जब *अन्यजातियों की पूर्णता* अन्दर आ जाएगी तब *सारा इस्राएल उद्धार पाएगा* (रोमियों 11:26)। तब एक नई वाचा के अंतर्गत इस्राएल के पाप माफ किए जाएँगे (रोमियों 11:27)।

इस्राएल के इतिहास में जो अंतर या फासला है उसको कलीसियाई युग कहते हैं। पौलुस कहता है कि कलीसिया *एक भेद है जो जगत की उत्पत्ति के समय से परमेश्वर में* ***छिपा*** *हुआ है* (इफि.3:9) लेकिन *"अब उसके पवित्र प्रेरितों और भविष्यद्वक्ताओं पर प्रगट किया गया है। अर्थात यह कि मसीह यीशु में सुसमाचार के द्वारा* ***अन्यजातीय लाग मीरास में साझी और एक ही देह के और प्रतिज्ञा के भागी हैं..."*** (इफि.3:5-6)। कलीसिया *न तो यहूदी है और न यूनानी,* परन्तु *सब मसीह यीशु में एक हैं* (गलतियों 3:28)।

यहूदियों पर और यरुशलेम पर सहस्राब्दी की छः आशीषें

70वें सप्ताह का समापन होगा यरुशलेम और यहूदियों पर परमेश्वर की आशीषों की बौछार के साथ। फिलिस्तीनी वाचा में दिए गए तमाम वायदे, आत्मिक और भौतिक, हक़ीक़त में बदल जाएँगे जब इस्राएल मन-फिराएगा।

न केवल इस्राएल आशीष पाएगा बल्कि अन्यजाति भी शान्ति और बहुतायत का अनुभव करेंगे जैसा पहले कभी सुना ही नहीं गया। अब्राहम की वाचा में वादा किया गया था कि *"तुझ में* ***संसार की सभी*** *जातियाँ आशीष पाएँगी"* (उत्पत्ति 22:18)।

योएल नबी ने बताया था कि कैसे पूरा इस्राएल मन फिराएगा जब *उत्तर की सेना* (रूस के नेता गोग की अगुवाई में) उनकी ज़मीन पर चढ़ाई करेगी। योएल की पुस्तक के दूसरे अध्याय में यह बात हम देख पाते हैं और वहाँ उसने यह भी बताया कि अन्यजातियाँ भी आशीष पाएँगी।

"उन बातों के ***बाद*** *मैं* ***सब प्राणियों*** *पर अपना आत्मा उण्डेलूँगा; तुम्हारे बेटे.बेटियाँ भविष्यद्वाणी करेंगी और तुम्हारे पुरनिये स्वप्न देखेंगे, और तुम्हारे जवान दर्शन देखेंगे। तुम्हारे दास और दासियों पर भी मैं उन दिनों में अपना आत्मा उण्डेलूँगा"* (योएल 2:28-29)।

प्रभु के पुनरागमन पर इस्राएल मन फिराएगा, पुनर्स्थापित होगा और छुड़ाया जाएगा। महाक्लेश में अन्यजातियों में से जो उद्धार पाते हैं वे भी सहस्राब्दी साम्राज्य में आशीषित होंगे। ये हैं वे "भेड़" राष्ट्र जो प्रभु के आगमन पर उसके सामने खड़े रहेंगे और उसके साथ राज करेंगे और उन से प्रभु कहेगाः

"हे मेरे पिता के धन्य लोगों, आओ, ***उस राज्य के अधिकारी हो जाओ*** *जो जगत के आदि से तुम्हारे लिये तैयार किया हुआ है"* (मत्ती 25 :34)।

अंततः पवित्रात्मा उन *सब राष्ट्रों* पर उण्ड़ेला जाएगा जो परमेश्वर के साम्राज्य में प्रवेश करेंगे।

अध्याय 4 – रोमी बिखराव की यशायाह द्वारा भविष्यद्वाणी

ज़रुब्बाबेल के नेतृत्व में बेबीलोन की बँधुआई से यहूदी 536 ई.पू. में लौटे और 516 ई.पू. तक **मंदिर** का पुनर्निर्माण पूरा हुआ। इसके बाद क्षयर्ष राजा (486–465 ई.पू.) के काल में हामान ने पूरे फ़ारसी साम्राज्य में से यहूदियों का नामोनिशान मिटाने की योजना बनाई थी। भारत से लेकर एथियोपिया तक के 127 प्रान्तों के लिए ये नरसंहार की योजना बनी थी जिसको मोर्दैके और एस्तेर द्वारा असफल किया गया।

एज़्रा, जो एक शास्त्री था, 457 ई.पू. में यरुशलेम लौटा और उसके द्वारा एक जागृति लोगों में आई परन्तु इसके 13 साल बाद (445 ई.पू.) जब नहेमायाह आया तो लोगों का आत्मिक स्तर गिर रहा था। जब नहेमायाह की अगुवाई में यरुशलेम **नगर** का पुनर्निर्माण प्रारम्भ हुआ तब एक और आत्मिक जागृति लोगों में आई।

यरुशलेम का पुनर्निर्माण 49 सालों तक यानि मलाकी नबी के दिनों तक चला। मलाकी पुराने नियम का आखिरी नबी था और जब 400 ई.पू. के करीब वह अपनी भविष्यद्वाणियाँ करने लगा तब तक यहूदी फिर से आत्मिक पतन की हालत में पहुँच चुके थे और केवल बाह्य दिखावे के धर्म का अनुकरण कर रहे थे।

पुराने नियम और नए नियम के बीच में 400 शान्त वर्ष थे जिनमें कोई लिखने वाला भविष्यद्वक्ता नहीं था। इस दौरान इस्राएल राष्ट्र अन्यजाति के शासकों के अधीन कराहता रहा।

यूनानियों की अधीनता में यहूदी

सिकंदर महान (333–323 ई.पू.) ने यहूदियों को काफी सहूलियतें दी थीं मुख्यतः इस वजह से कि उसने मकिदुनिया में एक सपना देखा था फ़ारसियों के विरुद्ध अपना सैन्य अभियान प्रारम्भ करने से पहले। वह यरुशलेम में आया तो था यहूदियों से बदला लेने की मनसा से क्योंकि सूर नगर की घेराबंदी के दौरान यहूदियों ने उसकी इच्छा के अनुसार उसके सैनिकों के लिए प्रबंध नहीं किया था। तब महायाजक ने यरुशलेम के फाटक खोल दिए और सिकंदर से मुलाकात के लिए सारे याजकों को सामने ले आया। सिकंदर ने महायाजक को देखते ही तुरन्त पहचान लिया कि वह वही व्यक्ति था जिसने स्वप्न में प्रगट होकर उससे कहा था कि परमेश्वर उसको फ़ारसियों पर विजय देने जा रहा है। इस तरह यरुशलेम को बर्बाद करने की जगह, यहूदियों को विशेष रियायतें देकर सिकंदर आगे निकल गया। और इस तरह जर्कयाह नबी की नबूवत पूरी हुई जिसने लिखाः *"तब मैं उस सेना के कारण जो **पास से हो कर जाएगी** और फिर लौट आएगी, अपने भवन के आस पास छावनी किए रहूँगा और कोई सताने वाला फिर उनके पास से हो कर न जाएगा क्योंकि मैं ये बातें अब भी देखता हूँ"* (जकर्याह 9:8)।

323 ई.पू. में सिकंदर की मृत्यु के पश्चात् यहूदियों को बहुत बुरी परिस्थितियों में से होकर गुज़रना पड़ा जिसकी मुख्य वजह थी उनकी भौगोलिक स्थिति जिसके कारण वे मिस्र के टॉलेमी शासक और

सिरिया के सैल्यूसिड शासकों के युद्धों के बीच में फंस गए। एँटियोकस एपिफनीस (175–163 ई.पू.) ने तो बहुत ही बुरा हाल किया। 2 मक्काबी 5:14 में एँटियोकस के विषय में ऐसा लिखा है:

"वह अपशब्द कहता हुआ मंदिर के गर्भगृह में गया और सोने–चाँदी के सारे पात्र ले गया.....और 1800 तोड़े सोना ले गया.....उसके बाद उसने बलिवेदी पर सुअर की बलि चढ़ाई और एक माँस का टुकड़ा उबालकर उस जल को पूरे मंदिर में छिड़कवाया" (बार्नेस नोट्स, पृष्ठ 234)। अंततः उसने मंदिर का नाम बदलकर उसको जुपिटर देवता को समर्पण करके उसका नाम जुपिटर ऑलम्पियस रखा।

'मक्काबी' याजकों के वर्ग में से थे जो बाद में संगठित होकर उठे और 165 ई.पू. में उन्होंने मंदिर का पुनः पवित्रीकरण किया। मंदिर के उस शुद्धिकरण को यहूदी लोग हर साल दिसम्बर में स्थापन (समर्पण) पर्व के रूप में याद करते हैं। यूहन्ना 10:22 में जैसा लिखा है यीशु ने भी ऐसे एक स्थापन पर्व में भाग लिया था।

यहूदियों में फरीसियों और सदूकियों के गुट 165 ई.पू. में मंदिर के इस पुनःस्थापन के कुछ बाद उभर कर आए। सदूकी केवल लिखी हुई व्यवस्था का पालन करते थे परन्तु फरीसी मौखिक रूप से प्राप्त नियमों का भी पालन करते थे। चलते–चलते दोनों पंथों ने एक ऐसे यहूदी धर्म की स्थापना की जो केवल कर्म–काण्डों तक ही सीमित रहा और जिसमें परमेश्वर के साथ हृदय का कोई रिश्ता न था और यही वजह थी कि वे प्रभु यीशु से इतनी नफ़रत करते थे। यीशु ने अपने शिष्यों से कहा:

*"यदि मैं न आता और उन से बातें न करता तो वे पापी न ठहरते परन्तु **अब उन्हें उन के पाप के लिये कोई बहाना नहीं। जो मुझ से बैर रखता है, वह मेरे पिता से भी बैर रखता है"*** (यूहन्ना 15:22–23)।

बाह्य दिखावे का धर्म परमेश्वर तक पहुँचने का कोई रास्ता नहीं है। एक टूटे हुए दिल और पिसे हुए हृदय की परमेश्वर कभी उपेक्षा नहीं करता है। और उद्धार अनुग्रह के कारण मसीह पर विश्वास से है।

रोमी छितराव और इस्राएल का अंधापन

यशायाह ने प्रभु का दर्शन जब पाया, जिसके बारे में यशायाह अध्याय 6 में लिखा है, तब उसने रोमी शासन काल में होने वाले इस्राएली छितराव के विषय में भी भविष्यद्वाणी की। उससे कहा गया कि वह जाए और इस्राएल को बताए,

*"सुनते ही रहो, परन्तु न समझो, देखते ही रहो, परन्तु न बूझो। तू इन लोगों के मन को मोटे और उनके कानों को भारी कर और उनकी आँखों को बन्द कर, ऐसा न हो कि वे आँखों से देखें और कानों से सुनें और मन से बूझें और मन फिरावें और चंगे हो जाएँ। तब मैं ने पूछा, **हे प्रभु कब तक?** उसने कहा, **जब तक नगर न उजड़े और उन में कोई रह न जाए**"* (यशायाह 6:9–11)।

जब यीशु आया तो उसने कहा कि उसके आने से वह भविष्यद्वाणी पूरी हो गई है और ज़मीन **बहुत समय** तक उजाड़ पड़ी रहेगी! इस उजाड़ को अब 2000 साल पूरे हो चुके हैं।

यीशु ने यशायाह की इस भविष्यद्वाणी को उद्धर्त किया और कहा कि **उसके समय में यह भविष्यद्वाणी पूरी हो चुकी है।** उसने कहा:

"और उन के विषय में यशायाह की यह भविष्यद्वाणी पूरी होती है कि तुम कानों से तो सुनोगे, पर समझोगे नहीं; और आँखों से तो देखोगे, पर तुम्हें न सूझेगा" (मत्ती 13:14; यूहन्ना 12:37)।

जब रोम के यहूदियों ने मसीह के सुसमाचार को ठुकराया तो पौलुस ने भी पहचाना कि यशायाह की भविष्यद्वाणी पूरी हुई है। पौलुस ने कहा,

*"...पवित्र आत्मा ने **यशायाह भविष्यद्वक्ता के द्वारा तुम्हारे बापदादों से** अच्छा कहा कि जाकर इन लोगों से कह कि सुनते तो रहोगे परन्तु न समझोगे और देखते तो रहोगे परन्तु न बुझोगे। क्योंकि इन लोगों का मन मोटा और उन के कान भारी हो गए और उन्होंने अपनी आँखें बन्द की हैं, ऐसा न हो कि वे कभी आँखों से देखें और कानों से सुनें और मन से समझें और फिरें और मैं उन्हें चंगा करूँ। सो तुम जानो कि परमेश्वर के इस उद्धार की कथा अन्यजातियों के पास भेजी गई है और वे सुनेंगे"* (प्रेरितों 28 :25 – 28)।

जब रोमी शासकों ने यरुशलेम का नाश किया तब उन्होंने दस लाख से ज़्यादा यहूदियों को मार ड़ाला और 95000 यहूदी बंदियों को गुलाम बाज़ार में बेचा। परमेश्वर ने **अस्थाई रूप से इस्राएल को तब तक के लिए अनदेखा किया है** जब तक कि यीशु को मसीह और उद्धारकर्ता के रूप में ठुकराने की अपनी ग़लती से इस्राएल मन न फिरा ले।

70 सप्ताह की भविष्यद्वाणी में **69वें और 70वें सप्ताह के बीच जो अंतर या फासला है वही इस्राएल के छितराव का समय है। यही समय कलीसियाई युग भी है** जो *"जगत के आरम्भ से छुपा हुआ भेद"* था (रोमियों 16:25)। इस्राएल को उस *"स्वाभाविक जैतून की ड़ाली"* के रूप में देखा गया है जो तोड़ा गया ताकि अन्यजाति जिनको *"जंगली जैतून की ड़ाली"* कहा गया है वे जैतून के पेड़ में उनकी जगह पर साटे जाएँ। इस्राएल का आत्मिक अंधापन तब तक चलेगा जब तक कि *अन्यजातियों में से उद्धार पाने वालों की गिनती पूरी नहीं हो जाती* (रोमिये 11:25)। बहुत जल्द मसीह की दुल्हन, जो अन्यजातियों में से है, स्वर्ग पर उठा ली जाएगी और यहूदियों व यरुशलेम के लिए निर्धारित वह 70वाँ सप्ताह तुरन्त आरम्भ हो जाएगा।

कलीसिया के स्वर्गारोहण के तुरन्त बाद 144000 यहूदी पुरुष मसीह की तरफ मुड़ेंगे। वे परमेश्वर के *राज्य का सुसमाचार* सम्पूर्ण जगत में प्रचार करेंगे ताकि *जगत के सारे राष्ट्रों तक गवाही पहुँच सके* (मत्ती 24:14)। उनके **साथी यहूदी** उनका भरसक विरोध करेंगे और उनको *"महासभाओं में सौंपेंगे और अपनी पंचायतों में कोड़े मारेंगे,"* यीशु ने कहा, ***"तुम इस्राएल के सब नगरों में न फिर चुकोगे कि मनुष्य का पुत्र आ जाएगा"*** (मत्ती 10:17–23)।

सात साल के महाक्लेश के बीचोंबीच तक ये 144000 गवाह शहीद हो जाएँगे और महाक्लेश के **पहले अर्धान्श में** ही रूस के नेता, गोग, के नेतृत्व में उसकी सेना इस्लामी सहयोगियों के साथ मिलकर इस्राएल पर चढ़ाई करेगी (यहेजकेल 38/39) जिसमें दो–तिहाई यहूदी मार ड़ाले जाएँगे और बचा हुआ एक–तिहाई यहूदियों का समूह प्रभु की शरण में आएगा और इस तरह *पूरा इस्राएल उद्धार पाएगा* (रोमियो 11:26)। जब मसीह का पुनरागमन होगा तो संसार का हर एक यहूदी अपने स्वदेश को लौट चुका होगा (मत्ती 24:31; यहेज. 39:28; यशा.49:18–23; 60:9)।

अध्याय 5 – मसीह को ठुकराने की कीमत

यीशु ने यहूदियों से कहा कि यरुशलेम कुचला जाएगा और मंदिर नष्ट किया जाएगा क्योंकि *"तूने उस अवसर को जब तुझ पर कृपा दृष्टि की गई न पहिचाना"* (लूका 19:44)। उसने कहा,

"हे यरूशलेम, हे यरूशलेम, तू जो भविष्यद्वक्ताओं को मार डालता है और जो तेरे पास भेजे गए उन्हें पथराव करता है, ***कितनी ही बार मैं ने*** *चाहा कि जैसे मुर्गी अपने बच्चों को अपने पंखों के नीचे इकट्ठे करती है, वैसे ही मैं भी तेरे बालकों को इकट्ठे कर लूँ परन्तु* ***तुम ने न*** *चाहा। देखो, तुम्हारा घर तुम्हारे लिये उजाड़ छोड़ा जाता है"* (मत्ती 23:37–38)।

यहूदियों ने ऊँचे स्वर से कहा, *"कैसर के अलावा हमारा कोई राजा नहीं है!"* (यूहन्ना 19:15)। और जब पिलातुस ने अपने हाथ धोकर अपने ऊपर से ज़िम्मेदारी हटा दी तो यहूदी चिल्लाकर कहने लगे, *"उसका लोहू हम पर और हमारे बच्चों पर हो"* (मत्ती 27:25)। और ऐसा ही हुआ भी।

पिछले 2000 सालों में यहूदी एक के बाद एक यातनाओं को सहते आ रहे हैं जैसा कि पहले ही फिलिस्तीनी वाचा के अंतर्गत कहा गया था:

"तुझ में से थोड़े ही मनुष्य रह जाएँगे...और जिस भूमि के अधिकारी होने को तुम जा रहे हो उस पर से तुम उखाड़े जाओगे। और यहोवा तुझ को पृथ्वी के इस छोर से ले कर उस छोर तक के सब देशों के लोगों में तित्तर बित्तर करेगा...तुझ को जीवन पर नित्य सन्देह रहेगा और तू दिन रात थरथराता रहेगा और तेरे जीवन का कुछ भरोसा न रहेगा" (व्यवस्था.28:62–66)।

सताव और अन्यजाति रोम के अधीन छितराव

66 ईसवीं में यहूदियों ने विद्रोह कर दिया और नीरो सम्राट ने वैसपासियन को आज्ञा दी कि 60000 सैनिकों को लेकर जाए और बलवे को दबाए। उन दिनों जब सम्राट नीरो ने आत्महत्या की तो वैसपासियन सिंहासन पर अपनी दावेदारी पेश करने के लिए शीघ्र रोम वापस पहुँचा। उसकी सेना को बढ़ाकर 80000 कर दिया गया था और उसके काबिल पुत्र, तीतुस, के हाथ में बागडोर सौंपी गई। तीतुस ने यरुशलेम के चारों ओर पाँच महीनों तक घेराबंदी की और इस तरह प्रभु यीशु के कहे हुए वचन पूरे हुए (मत्ती 22:7; 23:38; लूका 19:43–44; 20:16; तुलना करें दानिय्येल 9:26 से)।

70 ईसवीं में यरुशलेम गिर गया। नगर के भीतर तीन विभागों में गृह–युद्ध चला और जोसेफस ने लिखा है कि 1100000 यहूदी मारे गए और 97000 बंदी बनाए गए (*वॉर्स ऑफ द ज्यूज़,* बुक 6, अध्याय 9)।

यरुशलेम की इस तरह बर्बादी के बाद बचे हुए यहूदी चारों तरफ तित्तर–बित्तर हो गए और बहुतों को मिस्र ले जाया गया वहाँ की खानों में काम करने के लिए (*वॉर्स ऑफ द ज्यूज़,* बुक 6, अध्याय 9)। यह सब वैसा ही हुआ जैसा मूसा ने भविष्यद्वाणी की थी:
"और यहोवा तुझ को नावों पर चढ़ाकर मिस्र में उस मार्ग से लौटा देगा... और वहाँ तुम अपने शत्रुओं के हाथ दास–दासी होने के लिये बिकाऊ तो रहोगे परन्तु तुम्हारा कोई ग्राहक न होगा" (व्यवस्था.28:68)।

यहूदियों का आखिरी गढ़ जो गिरा वह था मसादा जिसको यहूदियों के ज़ीलट्स नाम के एक पंथ

के लोगों ने रोमियों से 66 ई. में जीत लिया था। मृत सागर के समीप एक एकांत पहाड़ के पूरे ऊपरि हिस्से में बसा था मसादा। यह पहाड़ समुद्र तल से करीब 434 मीटर की ऊँचाई पर था और 18 एकड़ में इसका ऊपरी भाग फैला हुआ था और इस पहाड़ पर महान हेरोद (जिसकी मृत्यु 1 ई.पू. में हुई) ने महल भी बनवाए थे।

फ्लैवियस सिल्वा के नेतृत्व में 15000 सैनिकों की रोमी फ़ौज को करीब दो साल लगे मसादा को जीतने में जिसकी रक्षा स्त्रियों और बच्चों समेत 1000 से भी कम लोग कर रहे थे। रोमियों ने फान्द बनाकर इस गढ़ को 15 अप्रैल, 73 ई. में जीत लिया। पर ऊपर पहुँचकर क्या देखा कि सारे ज़ीलट्स ने अपनी जान ले ली थी। अपनी आपबीती बताने के लिए केवल दो महिलाएँ और पाँच बच्चे बचे थे।

मसादा यहूदी राष्ट्रीय शौर्य का प्रतीक है और आज सैलानियों की पसंदीदा जगह। किन्तु बहुत से लोग मसादा की कहानी में भावी में घटने वाली एक घटना के प्रतिबिंब को देखते हैं जिसके बारे में प्रकाशितवाक्य की पुस्तक में लिखा हुआ है –
"पर उस स्त्री को बड़े उकाब के दो पंख दिए गए कि साँप के सामने से उड़ कर जंगल में उस जगह पहुँच जाए, जहाँ वह एक समय और समयों और आधे समय तक पाली जाए...और अजगर (शैतान) *स्त्री* (इस्राएल) *पर क्रोधित हुआ और उसकी शेष सन्तान से जो परमेश्वर की आज्ञाओं को मानते और यीशु की गवाही देने पर स्थिर हैं, लड़ने को गया। और वह समुद्र के बालू पर जा खड़ा हुआ"* (प्रकाशित.12:13–17)।

अन्यजाति रोम यहूदियों को 70 ई. से 313 ई. तक कुचलता रहा। बीच में कुछ समय फिर एक विद्रोह चला जिसको बार कोखबा (122–135 ई.) ने नेतृत्व दिया जो खुद को मसीह कहता था। 135 ई. में सम्राट हैड्रियन ने बड़ी ही क्रूरता से इस विद्रोह को दबा दिया और यरुशलेम को उजाड़ कर दिया गया (मीका 3:12)। पाँच लाख से अधिक यहूदी मार डाले गए और बड़ी संख्या में बचे हुए लोगों को गुलामी में धकेला गया।

बईज़ैन्टाईन क्रिस्चियन चर्च द्वारा सताव

जब कॉन्स्टैन्टाईन रोम के सम्राट और चर्च के प्रमुख बने (324 ई. के बाद) तो मसीहत ने वहाँ से शुरू कर दिया जहाँ से अन्यजाति रोम ने छोड़ा था और यहूदियों का सताव जारी रहा। बईज़ैन्टाईन साम्राज्य ने यहूदियों के साथ कोई हमदर्दी नहीं दिखाई और उनको यरुशलेम जाने से भी मना कर दिया। यहूदियों ने अपने मानव अधिकार भी खो दिए। यदि एक यहूदी एक ग़ैर–यहूदी से विवाह कर लेता था तो उसकी सज़ा थी मौत। सन्हेद्रिन यानि सर्वोच्च यहूदी परिषद की बैठकों पर भी पाबंदी लग गई।

इस्लाम के अधीन यहूदियों का नीचा स्तर

जब मुसलमानों ने 638 ई. में यरुशलेम पर कब्ज़ा कर लिया तो पहाड़ी मंदिर पर यहूदियों को जाने की इजाज़त दी। प्रारम्भ में यहूदियों को जबरन इस्लाम कबूलने के लिए नहीं कहा गया परन्तु उन्हें कुछ ऐसे नियम स्वीकार करने पड़े जिनके तहत वे निम्न स्तर के गिने जाते थे। एक यहूदी एक मुस्लिम से ऊँचे स्थान पर खड़ा नहीं हो सकता था।

जब एक मुस्लिम रास्ते से निकलता था तो यहूदी को किसी गड्ढे में या गर्त में उतरना पड़ता था। यहूदियों

का धर्मस्थल यानि सिनागोग किसी भी मस्जिद से ऊँचा नहीं हो सकता था। और किसी भी न्यायालय में कोई यहूदी किसी मुसलमान के विरुद्ध गवाही नहीं दे सकता था।

चमड़े की कारीगिरी, धातुओं का काम, दवाईयों का काम और गहनों की कारीगिरी में यहूदी बहुत आगे थे और इस बात को मुसलमानों ने आदर दिया। जब एक मुस्लिम और ईसाई के बीच कोई लेन-देन की बात होती थी तो यहूदी बिचवई का काम कर सकता था। इस दौर में यहूदियों पर सबसे बड़ा सताव मसीहत के द्वारा आया।

711 ई. से स्पेन मुस्लिम नियंत्रण में आ गया था और 12वीं शताब्दी में यहूदियों को तीन विकल्प दिए गए:

(क) इस्लाम कबूलना, (ख) देश छोड़ना, या (ग) मृत्यु

जब 1492 में मुस्लिमों को स्पेन से बाहर खदेड़ा गया तब राजा फरडिनैन्ड़ और रानी इसाबैला ने यहूदियों को भी देश छोड़ने की आज्ञा दी और उनकी सारी सम्पत्ति जप्त कर ली। 1492 में कोलम्बस समुद्री रास्ते से अमरीका पहुँचा जब यहूदी स्पेन से पलायन कर रहे थे। यहूदियों का बाहर निकाला जाना 2 अगस्त 1492 (यानि यहूदी पंचांग में आव महीने का 9वाँ दिन) को प्रारम्भ हुआ जो कि वही दिन था जब पहला और दूसरा यरुशलेम का मंदिर तोड़ा गया।

पोप की आज्ञा से 1 नवम्बर 1478 को स्पैनिश इन्क्वीज़ीशन (कैथोलिक चर्च द्वारा न्यायिक जाँच) की शुरुआत हुई उन यहूदियों को ठिकाने लगाने के लिए जो कह रहे थे कि उन्होंने मसीहत को स्वीकार कर लिया है परन्तु अब भी यहूदी अनुष्ठानों का पालन कर रहे थे। इसके बाद पोप की इस आज्ञा के निशाने पर वे मसीही भी आ गए जो पोप के वर्चस्व को स्वीकार करने के लिए तैयार नहीं थे जिन्हे "हेरेटिक्स" कहा जाता था। लगभग 200000 यहूदियों ने देश छोड़ा और अपने पीछे बहुत सारी सम्पत्ति स्पेन के राजसी परिवार और कैथोलिक चर्च के लिए छोड़ गए। कुछ समय बाद पुर्तगाल ने भी यहूदियों को ऐसी ही चेतावनी दी।

यूरोप में यहूदी बस्तियाँ

11वीं शताब्दी से लेकर 16वीं शताब्दी तक यहूदियों को समाज से हटाकर ऐसी पृथक बस्तियों में रखा जाता था जिनको "गैट्टो" कहते थे। "गैट्टो" शब्द का मूल अर्थ होता है "लोहे का ढलाई-ख़ाना" और अकसर यह एक गन्दी जगह होती थी जिसकी सीमा किसी बाड़े से या नाले से तय की जाती थी। इन पृथक बस्तियों से बाहर निकलने का एक ही रास्ता था और वह था मसीहत में धर्मान्तरण कर लेना।

यहूदियों का निष्कासन

निम्नलिखित देशों ने सभी यहूदियों को निष्कासित कर दिया था:

1. इंगलैण्ड, 1290
2. फ्रान्स, 1306 और 1394
3. हंगरी, 1349 और 1360
4. जर्मनी, 1348 और 1498
5. ऑस्ट्रिया, 1421
6. लिथुआनिया, 1445 और 1495
7. स्पेन, 1492
8. पुर्तगाल, 1497

ब्लड़ लाइबल (खून संबंधित अपमान पत्र)

इंगलैंड के नोर्विच में 1144 में यहूदियों पर यह आरोप लगा कि उन्होंने एक बच्चे का अपहरण करके उसका खून निकाल लिया ताकि यहूदी पुरुष उसको पी सकें। यह अफवाह पूरे महाद्वीप में फैल गई और यहूदियों को सताया गया। बर्लिन के समीप बरलिट्स नाम के जगह पर एक पूरे यहूदी समुदाय को इस आरोप के अंतर्गत जला कर मार दिया गया। 1840 में डैमस्कस में यहूदियों पर आरोप लगा कि उन्होंने एक मसीही पुरोहित को और उसके सहायक को उनके लोहू के लिए मार दिया ताकि उस खून से यहूदियों के फसह-पर्व के लिए अख़मीरी रोटी या माट्ज़ा बनाया जा सके। *"यरूशलेम पोस्ट"* ने 11 अक्तूबर 2002 को एक रिपोर्ट प्रकाशित किया कि 1991 में 'मद्रीद शान्ति सम्मेलन' में एक इस्राएली मध्यस्थ ने सिरिया के एक मंत्री द्वारा लिखित पुस्तक *"द माट्ज़ा ऑफ ज़ायन"* को सबके सामने दिखाया था।

"उस पुस्तक के मुख पृष्ठ पर दो मोटे कुरूप यहूदियों को एक पुरुष का गला काटते हुए दिखाया गया था जिसका खून एक तसले में इकट्ठा किया जा रहा था ताकि उससे फसह के लिए माट्ज़ा पका सकें।"

खून के अपमान पत्र का झूठ आज भी चल रहा है।

काला मरण (ब्लैक डैथ) महामारी का आरोप यहूदियों पर

1348-1349 के दौरान यूरोप में "ब्यूबोनिक प्लेग" नामक महामारी फैली थी जिसमें अनुमान लगाया जाता है कि ढाई करोड़ से 4 करोड़ लोग मारे गए यानि यूरोप की आधी जनसंख्या तबाह हो गई। इसका आरोप भी यहूदियों पर ही लादा गया जबकि यह महामारी उन संक्रमित चूहों के कारण आई थी जो दूर पूर्व से पानी के जहाज़ों के माध्यम से आए थे। इन्ही जहाज़ों की वजह से और स्वच्छता की कमी से एक बंदरगाह से दूसरे बंदरगाह तक यह बीमारी फैलती गई। अफवाहें फैलाई गई कि यहूदी लोग हवा में कुछ मिला रहे हैं या कुंओं में कुछ घोल रहे हैं जिससे ये मरी फैल रही थी और इस दोष में हज़ारों यहूदी मारे गए।

पोलैन्ड और यूक्रैन में सुरक्षा और सताव

जबकि पश्चिमी यूरोप में यहूदी सताए जा रहे थे ऐसे में पोलैंड ने अपने दरवाज़े भारी संख्या में आए यहूदियों के लिए खोल दिए। सन् 1000 के करीब पोलैंड मसीही राष्ट्र बन चुका था और वहाँ प्रशासन में लोगों की ज़रूरत थी इसलिए 1264 में राजा बोलेस्लाव ने यहूदियों को उसके देश में आने का न्यौता दिया और उन्हें सुरक्षा दी और न्याय के सामने समान दर्ज़ा दिया।

1650 में दुनिया भर के यहूदियों में से 30 प्रतिशत पोलैंड में रहने के लिए पहुँच चुके थे, जो कि करीब 1550000 थे। वहाँ यहूदियों को तोराह (व्यवस्था) सिखाने के लिए यशिवा (कॉलेज) प्रारम्भ करने की अनुमति मिल गई और वहाँ उनकी अपनी प्रशासन समीतियाँ बनीं जिनमें उनके रब्बी शामिल थे।

1569 में यूक्रेन, लिथुआनिया और बेलोरशिया भी पोलैंड के अधीन आ गए और तब यहूदी हुनर की आवश्यकता हुई इन प्रान्तों में अच्छे प्रशासन के लिए।

पोलैंड रोमन कैथोलिक था और यूक्रेन ऑर्थोडॉक्स मत को मानता था (1054 ई. में रोमन कैथोलिक चर्च से ऑर्थोडॉक्स विभाग अलग हुआ था जिसको "ग्रेट स्कीइज़्म" कहते हैं)। जब यूक्रेन के ऑर्थोडॉक्स मसीहियों ने वहाँ से कैथोलिक पोलैंड निवासियों को बाहर खदेड़ा तब यूक्रेन के नेता, खमिएलनिकी (जो एक कोसाक सैन्य योद्धा था), ने यहूदियों के विरुद्ध एक खूनी अभियान चलाया **और 1635 में एक लाख यहूदी मारे गए और उनके 300 समुदाय अत्यंत निर्ममतापूर्ण तरीकों से खतम कर दिए गए।**

यूरोप के धर्मसुधार से भी कोई राहत नहीं

धर्मसुधार का प्रारम्भ 1517 में तब हुआ जब लूथर ने अपनी 95 शिकायतों की सूची (थेसिस) को विट्टनबर्ग के चर्च के दरवाज़े पर टांग दिया। लूथर जानता था कि रोमन कैथोलिक चर्च ने किस अभद्रता के साथ यहूदियों से व्यवहार किया था और उसने सोचा कि यहूदी प्रभु यीशु को स्वीकार कर लेंगे क्योंकि लूथर इस सोच का व्यक्ति था कि कलीसिया या चर्च ही एक "आत्मिक" नज़रिए से वर्तमान में इस्राएल देश है। यहूदी अपने आप को अब्राहम के शाब्दिक वंशज के रूप में देखते थे और उनको नहीं लगा कि उन्हें किसी "आत्मिक" इस्राएल का अब भाग बनने की ज़रूरत है। परिणामस्वरूप लूथर ने कैथोलिक चर्च के वही यहूदी-विरोधी (एँटी-सैमिटिक) कड़वेपन को अपना लिया।

अपनी पुस्तक *"कनसर्निन्ग द ज्यूज एँड देयर लाईज़"* में लूथर ने अपने दिल की बात कहते हुए सलाह दी जो पढ़ने में बहुत ही डरावनी है। उसने कहा कि उनके धर्मस्थल जला दिए जाएँ, उनकी पुस्तकें बर्बाद कर दी जाएँ, उनकी सम्पत्ति जप्त कर ली जाए, इत्यादि। हिटलर ने अपने यहूदी विरोधी अभियान में लूथर की पुस्तकों का इस्तेमाल किया।

नैपोलियन की यहूदियों के प्रति हमदर्दी

नैपोलियन (1769-1821) जहाँ-जहाँ भी जीतता गया वहाँ-वहाँ यहूदियों को उनकी पृथक बस्तियों से आज़ाद करता रहा और उन्हें समाज में ऊँचा उठने की पूरी अनुमति दी। एक बार जब वह एक सिनागोग के करीब से जा रहा था तो उसने लोगों के रोदन की आवाज़ सुनकर अपने सहायक से पूछा, "वहाँ क्या चल रहा है?" जवाब आया, "आज *यहूदियों के आव महीने का नौवाँ दिन है* और यहूदी अपने मंदिर के टूटने का विलाप कर रहे हैं।"

नैपोलियन ने तब कहा, "उस घटना के सैंकड़ों सालों बाद आज भी अगर यहूदी उसके लिए रो रहे हैं तो मुझे निश्चय है कि ज़रूर एक दिन उनका मंदिर फिर बनेगा।"

जब 1799 में नैपोलियन ने फिलीस्तीन पर चढ़ाई की तो उसने यहूदियों से उसके झण्ड़े के नीचे मोर्चा बांधने के लिए कहा और उन्हें यरुशलेम नगर उनकी राजधानी के रूप में देने का वादा किया। उसने यह घोषणा करवाई:

"हे बँधुआई में पड़े यहूदियों, जल्दी करो! दुनिया की आबादी में तुम्हारे नागरिक अधिकारों को बहाल करने का अभी है वह मौका जो अगले हज़ारों सालों में तुम्हे न मिलेगा।"

यहूदियों में सुधार अभियान

अंधकार का युग बीता और 1350 एवं 1650 के बीच पुनर्जागरण काल आया। इस ज्ञानोदय से चर्च की ताकत पर प्रश्न उठने लगे। परन्तु उन दिनों मे जिसको ''विश्वास'' कहा जाता था वह पूरी तरह अंधविश्वास और अज्ञानता से भरी बातें थीं। जब लोगों की भाषा में उनको बाइबल उपल होने लग गई तब चर्च की ये कमियाँ साधारण लोग भी समझने लग गए।

हायर क्रिटिसिज़म (उच्च आलोचना) नामक एक साहित्यिक पद्धति द्वारा बाइबल के प्रेरित होने की बात का खण्ड़न किया गया और बाइबल की रचना एवं लेखन के बारे में विचित्र व्याख्याएँ दी जाने लगीं। इस युक्तिवादी और मानववादी विचारधारा का यहूदी समाज पर भी असर पड़ने लगा और जर्मनी में कुछ यहूदियों ने जर्मन भाषा में गीत लिखे और राष्ट्रवादी भावनाओं को जन्म दिया। कुछ सवाल करने लगे कि क्या उनके बच्चों का खतना करवाना ज़रूरी है! कुछ लोगों ने शनिवार की उनकी यहूदी आराधना को बदल दिया और इतवार के दिन चलाने लगे। इस तरह के सुधार अभियान ने पूर्वी यूरोप में ज़्यादा पकड़ नहीं बनाई परन्तु जर्मनी में ब्रन्सविक (1844) और फ्रैन्कफर्ट (1845) में सम्मेलन होने लगे। कुछ यहूदी जिनके विचारों में बदलाव आया 1830 के दशक में अमरीका चले गए। उनका लक्ष्य था कि अपने आप को बहुत ज़्यादा यहूदी रूढ़ीवादी न दिखाया जाए बल्कि समाज की मुख्यधारा में घुल मिल जाएँ।

ज़ारों के नीचे रूस में यहूदी

उन दिनों में रूस का साम्राज्य पोलैंड से लेकर यूक्रेन तक फैला हुआ था। 18वीं और 19वीं शताब्दी (1791–1915) में पूर्वी यूरोप में रूस की ''कैथरीन द ग्रेट'' के समय से ही यहूदियों को ऐसे अलग इलाके में रहने दिया जाता था जिनको ''पेल ऑफ सैटलमैन्ट'' या ''बॉर्डर्स ऑफ सैटलमैन्ट' कहते थे। यहूदियों को मोस्को और सैंट पीटर्सबर्ग से बेदखल करके ''पेल सैटलमैन्ट'' में सीमित किया गया। बाद में वहाँ से भी निकाल कर और भी पिछड़े इलाकों में भेजा गया। उनको उनके अलग ही बस्तियों (शेल्टर्स) में रहने को मजबूर किया गया। बेरोज़गारी बहुत ज़्यादा हो चुकी थी और 14 प्रतिशत से 22 प्रतिशत के बीच पहुँच गई थी।

यहूदी बस्तियों में समाज सेवी संस्थाओं का काम बहुत चलता था और बहुत से ग़ैर–यहूदी इस वजह से यहूदी बनना चाहते थे ताकि उन समाज सेवी संस्थाओं से मदद पा सकें इसलिए धर्मान्तरण पर भी रोक लगा दी गई थी। ज़ार निकोलास प्रथम (1825–1855) के समय में 12 से 18 साल के सभी यहूदी लड़कों को जबरन फौज में 25 सालों के लिए भर्ती करा दिया जाता था। फौज में तमाम कोशिशें की जाती थीं कि किसी तरह वे मसीहत को कबूल लें। कुछ माता–पिता अपने लड़कों की पहली ऊँगली काट देते थे ताकि वे बन्दूक का ट्रिगर न दबा सकें।

पोग्रोम यानि यहूदियों की सामूहिक हत्या रूस में ज़ारों के शासन काल में आम बात थी। **''पोग्रोम'' ऐसे दंगे होते थे जो यहूदियों को मारने के लिए चलाए जाते थे।** ये अचानक भी शुरू हो जाते थे और कई बार सरकार या चर्च के द्वारा भी नियंत्रित और पूर्वनियोजित होते थे।

ज़ार अलैक्सैंडर-तृतीय (1881-1894) ने कई ऐसे कार्यक्रम चलाए और ज़ार निकोलास-द्वितीय ने 1903 में बड़ा कार्यक्रम चलाया और उसके अगले चार सालों में और 284 ऐसे दंगे नियंत्रित किए। सताव इतना गहरा था कि 1881 और 1914 के बीच 25 लाख यहूदियों ने देश छोड़ दिया यानि प्रति वर्ष करीब 50000 लोगों ने। इनमें से अधिकतर को अमरीका ने ग्रहण किया। किन्तु रूसी साम्राज्य में यहूदियों की जनसंख्या उच्च जन्म दर की वजह से 50 लाख पर स्थाई रही।

एल्डर्स ऑफ ज़ायन की रीतियाँ या प्रोटोकॉल

''द प्रोटोकॉल्स ऑफ द लर्नड एल्डर्स ऑफ जॉयन'' नामक एक दस्तावेज़ के बारे में कहा गया कि वह उन यहूदी नेताओं की बैठकों का ब्यौरा था जो सौ सालों में पूरे विश्व पर अपना वर्चस्व बनाना चाहते थे। सच्चाई यह थी कि वह दस्तावेज़ रूसी गुप्त पुलिस का फर्जी काम था जो 1917 की साम्यवादी क्रान्ती से कुछ पहले प्रकाशित किया गया था। इसकी शुरूआत फ्रान्स में हुई थी इस शिकायत के साथ कि फ्रान्स की पूरी अर्थव्यवस्था पर काबू पाने की कोशिश की जा रही थी। उस दस्तावेज़ में जितने फ्रान्स के नाम थे उन सबको बदलकर दस्तावेज़ को फ्रान्स की जगह पूरे विश्व पर कब्ज़ा पाने की कोशिश का रूप दे दिया गया। मकसद यह था कि बोलशेविक क्रान्ति से पहले की रूस की आर्थिक बदहाली का आरोप यहूदियों पर थोपा जा सके। आज भी ''प्रोटोकॉल्स'' को यहूदी-विरोधी संगठन प्रकाशित करते रहते हैं।

अमरीका में हैनरी फोर्ड इस दस्तावेज़ के धोखे में आ गए और उसने उसको अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर बहुत फैलाया। डियरबोर्न, मिचिगन में उनकी फैक्टरी के बाहर एक बोर्ड भी लगाया गया जिसपर लिखा हुआ था, ''यहूदी अमरीका के गद्दार हैं।'

पहला विश्व युद्ध और रूसी क्रांति

1914-18 तक चले विश्व-युद्ध ने और 1917 की रूसी क्रांति ने यहूदियों को बहुत प्रभावित किया। अधिकतर जगह यहूदी जिस देश में रह रहे थे उसके लिए ही लड़े और उनमें से पंद्रह लाख लोगों ने युद्ध में भाग लिया। इस युद्ध में यहूदियों के बीच 140000 मौतें भी हुई।

रूस में सैक्यूलर यहूदियों ने धर्म का विरोध किया यहाँ तक कि यहूदी धर्म का भी। भारी संख्या में यहूदी तबाह हुए। कार्ल माक्र्स जो कि साम्यवाद का संस्थापक था और यहूदी था उसने पहले मसीहत में धर्मान्तरण किया और बाद में धर्म को ही पूरी तरह से त्याग दिया। लियोन ट्रोट्स्की (लैव डेविडोविच ब्रोनस्टीन), जिसने 1917 में बोलशेविक क्रांति को जन्म दिया, वह भी एक यहूदी था। साम्यवादी सरकार ने आगे धर्मनिर्पेक्षता का एक ऐसा रुख अपनाया जो लोगों पर जबरन थोपा जाता था।

स्टैलिन ने छंटाई की एक ऐसी श्रृंखला ही शुरू कर दी जिसमें ढ़ाई करोड़ लोग मारे गए और उसकी योजना थी **30 लाख यहूदियों को साईबेरिया भेजने** की जहाँ यह निश्चित था कि वे ठंड़ से मरेंगे ही। इससे पहले कि वह अपनी इस योजना को पूरा कर पाता रहस्यमयी तौर पर उसकी मृत्यु हो गई।

अध्याय 6 – ज़ायनिस्ट आंदोलन

यहेजकेल अध्याय 36 की भविष्यद्वाणी में यह स्पष्ट बताया गया है कि अंतिम दिनों में यहूदी अपने स्वदेश को लौटेंगे पर अविश्वास की दशा में। यह इसलिए नहीं होगा कि उन्होंने प्रभु पर विश्वास किया पर इसलिए होगा कि वे प्रभु पर विश्वास कर पाएँ। परमेश्वर ने कहा,

"परन्तु, हे इस्राएल के पहाड़ो, तुम पर डालियाँ पनपेंगी और उनके फल मेरी प्रजा इस्राएल के लिये लगेंगे, ***क्योंकि उसका लौट आना निकट है****...और मैं तुम पर बहुत मनुष्य अर्थात इस्राएल के सारे घराने को बसाऊँगा,* ***और नगर फिर बसाए*** *और खण्डहर फिर बनाएँ जाएँगे...परमेश्वर यहोवा यों कहता है, हे इस्राएल के घराने,* ***मैं इस को तुम्हारे निमित्त नहीं, परन्तु अपने पवित्र नाम के निमित्त करता हूँ*** *जिसे तुम ने उन जातियों में अपवित्र ठहराया जहाँ तुम गए थे...मैं तुम को जातियों में से ले लूँगा, और देशों में से इकट्ठा करूँगा, और तुम को तुम्हारे निज देश में पहूँचा दूँगा। मैं तुम पर शुद्ध जल छिड़कूँगा, और तुम शुद्ध हो जाओगे...परमेश्वर यहोवा यों कहता है,* ***इस्राएल के घराने में फिर मुझ से बिनती की जाएगी कि मैं उनके लिये यह करूँ:*** *अर्थात मैं उन में मनुष्यों की गिनती भेड़.बकरियों की बढ़ाऊँ"* (यहेज. 36:8–37)।

अविश्वास की दशा में यह वापसी शुरू हुई 1881 में ज़ायनिस्ट मूवमैन्ट के साथ जब यहूदियों ने शताब्दियों से चले आ रहे सताव से बचने के लिए अपने लिए फिलिस्तीन में एक स्वदेश की माँग रखी।

थियोडोर हेज़्ल (1869–1904), एक हंगरी निवासी यहूदी, पेशे से एक वकील थे। फ्रांस की फौज में अर्टिलरी कैप्टन रहे यहूदी, अल्फ्रेड़ डेफस, पर ग़लत आरोप लगाया गया कि उन्होंने जर्मनी को सैन्य रहस्य हस्तांतरित किए और इस आरोप के तहत उनकी 1893–1894 में न्यायिक जाँच हुई जिसमें थियोडोर ने भाग लिया। ऐसे में हेज़्ल को एहसास हुआ कि यहूदियों को कभी भी न्याय नहीं मिल सकता और संकल्प लिया कि वह एक ऐसे राज्य की स्थापना के लिए काम करेंगे जिसे यहूदी अपना कह सकें। उसने ज़ायनिस्ट मूवमैन्ट में मुख्य भूमिका निभाई। ज़ायनिस्ट मूवमैन्ट दुनिया के देशों में बिखरे हुए यहूदियों को उस देश में वापस लौटने के लिए प्रोत्साहित करता है जो देश परमेश्वर ने अब्राहम को दिया था। थियोड़ोर ने स्विट्ज़रलैंड के बसिल में पहला ज़ायनिस्ट कान्ग्रेस 1897 में आयोजित किया। वहाँ उस कान्ग्रेस ने फिलीस्तीन में यहूदियों के लिए राष्ट्रीय स्वदेश स्थापित करने का अपना लक्ष्य सबके सामने ऐलान किया।

पाँच अलियाह – 1882 से 1932

नवस्थापित ज़ायनिस्ट मूवमैन्ट के लक्ष्यों के अनुसार, इस्राएल राष्ट्र की स्थापना से पहले पाँच चरणों में यहूदी फिलिस्तीन को लौटे (हर वापसी को अलियाह कहते हैं)। ये पाँच अलियाह इस प्रकार थेः

1. प्रथम अलियाहः 1882–1903 – 25000 यहूदियों की वापसी
2. द्वितीय अलियाहः 1903–1914 – 30000 की वापसी
3. तृतीय अलियाहः 1919–1923 – 37000 की वापसी
4. चौथा अलियाहः 1924–1929 – 8000 की वापसी
5. पाँचवा अलियाहः 1930–1939 – नाज़ी सताव की वजह से 200000 से ज़्यादा यहूदियों ने वापसी की।

ब्रिटेन और बाल्फोर घोषणा

रोमियों ने 70 ई. में यरुशलेम की तबाही के बाद फिलिस्तीन का ऐसा नाम इसलिए रखा क्योंकि वे इसे पलिश्ती जाति के लोगों की ज़मीन मानते थे परन्तु पलिश्तियों के देश को पलिश्तीन नाम से यशायाह ने पुकारा था (यशा.14:29,31)। आज जिन फिलिस्तीनियों को हम जानते हैं उनसे इस ज़मीन का या इस नाम का कोई लेना–देना नहीं है। फिलिस्तीन पर ओटोमन तुर्क साम्राज्य के तहत 1917 तक यहूदियों और अरब निवासियों का कब्ज़ा था। फिलिस्तीन के अरब अन्य देश जैसे साउदी अरब, सिरिया, ईराक, जोर्डन और मिस्र के अरब लोगों से भिन्न नहीं हैं। ये अरब निवासी हाजिरा और केतूराह के द्वारा उत्पन्न हुए अब्राहम के ही वंशज है। उपरोक्त देशों में अरब लोग तब फैल गए जब सन् 632 में मोहम्मद की मृत्यु के बाद इन देशों पर मुसलमानों ने चढ़ाई की।

पहले विश्व युद्ध ने विश्व के राजनीतिक समीकरण को बदल दिया। रूस एक समाजवादी गणतंत्र बन गया; पोलैंड फिर से एक राष्ट्र बन गया; जर्मनी और ऑस्ट्रिया –हंगरी साम्राज्य टूट गए। मध्य–पूर्व ओटोमन तुर्क की हुकूमत से आज़ाद हो गया। मध्य–पूर्वी देश ब्रिटेन और फ्रांस को दिए गए कि उन पर लीग ऑफ नेशन्स के मैन्डेट के अनुसार शासन हो।

व्लादीमीर जबोटिन्स्की पहले विश्व–युद्ध के दौरान एक रूसी–यहूदी पत्रकार था जिसने जर्मनी के विरुद्ध में यहूदियों को इकट्ठा करना चाहा। जब ओटोमन साम्राज्य ने युद्ध में केन्द्रीय शक्तियों (जर्मनी) की तरफ से प्रवेश किया तो उसको फिलिस्तीन से तुर्कों को बाहर निकालने की संभावना नज़र आई और वहाँ यहूदियों के लिए ब्रिटेन के शासनादेश के अधीन एक स्वदेश की स्थापना की संभावना भी दिखी।

रूस के बहुत से रूढ़िवादी यहूदियों ने जबोटिन्स्की के इस प्रस्ताव का विरोध इस डर से किया कि कहीं ज़ारों की तरफ से और फिलिस्तीन में तुर्कों की तरफ से पलटवार न हो जाए।

जबोटिन्स्की लन्दन चला गया और वहाँ भी उसको लंदन के यहूदियों से कुछ–कुछ ऐसी ही प्रतिक्रिया मिली पर वह वहाँ बहुत से प्रभावशाली यहूदियों को अपने पक्ष में करने में सफल रहा। जैसे कि आरोसोह्न जो कि ब्रिटिश वॉर कैबिनेट के सदस्यों के सम्पर्क में रहता था और जिसका परिवार बहुत पहले वहाँ रहने आया था। यहूदी गुप्तचरों से सम्पर्क के परिणामस्वरूप वह ब्रिटेन को फिलिस्तीन में तुर्कियों के सैन्य आवागमन की जानकारी दे सका जिसकी बदौलत जनरल एलन्बी को मिस्र से ओटोमन साम्राज्य के विरुद्ध अभियान चलाने में सहारा मिला। इस गुप्तचरों के नेटवर्क का नाम था "एन आई एल आई" जो इब्रानी भाषा में उनके पासवर्ड "नेटज़ाच यिसराइल लो येशकर" के प्रारम्भिक

अक्षरों को जोड़कर बना था, जिसका अर्थ था "इस्राएल का अनन्त परमेश्वर झूठ नहीं बोलेगा" (*अ हिस्टरी ऑफ इस्राएल* बई सचर, पृष्ठ 104 देखें)।

यहूदियों के बीच ज़ायनिस्ट स्वदेश लौटने की बात को प्रथम विश्व-युद्ध के दौरान किए गए वायदों के आधार पर और 2 नवम्बर 1917 को ब्रिटेन द्वारा *बालफोर घोषणा* पर हस्ताक्षर करते वक्त दिए गए वायदों के आधार पर बढ़ावा दे रहे थे। उसमें ऐसा लिखा था:

"महामहिम की सरकार इस बात के पक्ष में है कि यहूदी लोगों के लिए फिलिस्तीन में एक राष्ट्रीय स्वदेश स्थापित हो सके।"

अर्ल अर्थर बालफोर प्रथम विश्व युद्ध के समय ब्रिटेन के विदेश सचिव थे और उन दिनों में ब्रिटेन की सेना को असीटोन नामक रसायन की कमी पड़ रही थी जो कि कोर्डाइट नामक विस्फोटक में इस्तेमाल होता था। चैम विज़मैन नाम के एक यहूदी रसायनज्ञ ने एक ख़ास तरीका निकाला जिससे ब्रिटेन विस्फोटक का उत्पादन कर सका और युद्ध जीत सका।

डॉ. चैम विज़मैन रूस में जन्मे हुए यहूदी थे जिन्होने विश्वविद्यालय की पढ़ाई जर्मनी और स्विटज़रलैंड में की थी और रूसी, इब्रानी और अंग्रेज़ी भाषाओं में प्रवाहशील थे। हॉवर्ड सचर की किताब *"हिस्ट्री ऑफ इस्राएल"* में उन्होंने डॉ. चैम के बारे में यूं लिखा:

"एक बहुत ही उम्दा वक्ता जिनके पास प्रतिपादन का ख़ास वरदान था .... एक ऐसे बोलनेवाले जिनकी बात पर गज़ब ढंग से यकीन हो जाता था।"

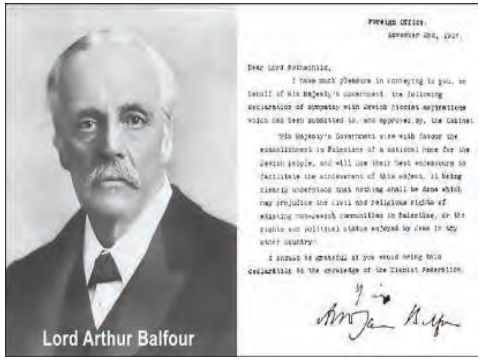

विज़मैन उस समय के ब्रिटिश वॉर कैबिनेट (युद्ध मंत्रालय) के कई सदस्यों से बहुत परिचित हो चुके थे और उनसे कहा गया था कि असीटोन की कमी का, जिससे युद्ध में रुकावट आ रही थी, कोई समाधान खोज निकाले।

प्रारम्भ में ब्रिटिश शासनादेश के मुताबिक यर्दन नदी के दोनों तरफ का इलाका यहूदियों के लिए एक राष्ट्र के रूप में देने का प्रावधान था परन्तु ब्रिटेन का अरब समुदाय से रिश्ते के बिगड़ने की संभावना थी। इसलिए ब्रिटेन ने पहले 1921 में ईराक राष्ट्र की स्थापना की अनुमति दी और राजा फैसल इब्न हुसैन के आधिपत्य में एक अरब राजतंत्र वहाँ कायम किया। 1927 में उनके भाई अब्दुल्ला इब्न हुसैन को ट्रान्सजोर्डन का राजा बनाया जिसका इलाका ईराक और यर्दन नदी के बीच का था। उनके पिता, हुसैन शरीफ, मक्का शहर के संरक्षक थे।

इब्न साउद को लगभग पूरा अरब प्रायद्वीप दे दिया गया और उसका साम्राज्य बाद में साउदी अरब कहलाया। ब्रिटेन ने अरब समुदाय का पक्ष लिया ताकि तेल की आपूर्ति में कोई कमी न आए।

द्वितीय विश्व युद्ध से पहले जब सताव बहुत तेज़ हो गया तब यहूदी अपने स्वदेश को बड़ी संख्या में लौटने लगे और ब्रिटेन ने प्रति वर्ष 12000 लोगों के ही लौटने की एक सीमा लगाई। परन्तु ब्रिटेन द्वारा

सड़क और समुद्री रास्तों पर लगा, गए सभी अवरोधों को पार करके 115000 लोग अवैध आप्रवासी के रूप में घुस आए। 1945 तक 565000 यहूदी अपने स्वदेश में बस चुके थे।

यहूदियों के फिलिस्तीन लौटते ही वहाँ उद्योग स्थापित होने लग गए और जीवन स्तर काफी ऊँचा उठने लगा। इससे कई ग़ैर-यहूदी भी आकर्षित हुए और अरब आप्रवासी भी पलिस्तीन में उमड़ पडे। अक्सर ये गरीब होते थे और शहरों में आकर बस जाते थे।

ब्रिटेन के खिलाफ अरब विद्रोह

साल 1929 महत्वपूर्ण था क्योंकि उस साल ब्रिटेन के खिलाफ फिलिस्तीन में अरब समुदाय ने विद्रोह किया। अरब बस्तियों में रहने वालों ने यहूदी ठिकानों पर हमला किया जिससे यहूदी विवश हुए अपनी सुरक्षा हेतु एक सैन्य बल स्थापित करने के लिए। यहूदियों से किए गए वायदे जब ब्रिटेन ने एक के बाद एक तोड़े तो यह साफ हो गया कि वह अब अरब समुदाय का साथ दे रहा था। ब्रिटिश द्वारा औपचारिक रूप से स्वीकृत यहूदी संस्था थी "ज्यूइश एजैन्सी" जिसका नेतृत्व डेविड़ बेन गुरियोन कर रहे थे। इस एजैन्सी ने एक भूमिगत विरोध अभियान चलाया जिसका नाम था "हगानाह"। कुछ और भी संस्थाएँ थीं जिनमे से एक था "स्टर्न गैन्ग" जिसके अगुवे थे यिट्ज़चक शमीर और एक दूसरा था "इरगन मूवमैन्ट" जिसको मेनाखैम बेगिन नेतृत्व दे रहे थे और यही बाद में इस्राएल के प्रधान मंत्री भी बने।

1929 के विद्रोह में यहूदियों को मारा गया और हेब्रोन में 133 यहूदियों की गला काटकर हत्या की गई। ब्रिटेन ने काफी बलपूर्वक इस विद्रोह को दबाया और अरब गांवों पर गोलीबारी की जिसमें 3000 लोगों की मौत हुई। इस विद्रोह को भड़काने वाले मुख्य लोग मुस्लिम मौलवी थे। यरुशलेम के ग्रैन्ड मुफ्ती, हज अमिन हुसैनी, देश से भाग निकला और यूरोप पहुँचकर हिटलर का सहयोगी बन गया और उसने बल्कन इलाके में यहूदियों को मारने के लिए बोसनियन एस.एस. यूनिट स्थापित की।

जबकि यहूदियों ने हज़ारों फैक्ट्रियों को स्थापित करके मित्र-देशों की ज़रूरतों की आपूर्ति की तौभी ब्रिटेन असमर्थ रहा हिटलर के होलोकॉस्ट (यहूदियों का नर-संहार) से लाखों यहूदियों को बचाकर निकालने में। यहूदी लोग एक यहूदी बैटालियन बनाकर ब्रिटिश सैनिकों के संग लड़ाई में भाग लेना चाहते थे परन्तु ब्रिटेन को लगा कि इससे अरब भड़क उठेंगे। युद्ध के अन्त के करीब एक यहूदी सेना तैयार की गई थी जिसने इटली में लड़ाई में भाग लिया। चर्चिल यहूदियों का पूर्ण सहयोगी था पर उसके प्रस्ताव नामंजूर कर दिए गए।

युद्ध के पश्चात् ब्रिटेन ने गरीब यहूदी शरणार्थियों को सईप्रस में बंदी-शिविरों में रखा या उन्हें विस्थापित व्यक्तियों (डी.पी यानि डिस्प्लेज़्ड पर्सन्स) के शिविरों में जर्मनी भेज दिया जैसा कि उन्होंने *एस.एस. एक्सोडस* जहाज़ के मामले में किया था।

एक्सोडस जहाज़ पूर्वी भूमध्य सागर में 1947 में 4500 यहूदियों के साथ पहूँचा। रॉयल जलसेना ने उसे रोका और उसको हाईफा बंदरगाह पहुँचा दिया। वहाँ होलोकॉस्ट से बच कर आए इन लोगों को एक दूसरे जहाज़ में जबरन बैठाया गया और उन्हें जर्मनी वापस भेज दिया गया। ब्रिटिश सैनिकों के इस बर्बतापूर्ण व्यवहार ने संयुक्त राष्ट्र के अधिकारियों के दिल को भी बेचैन कर दिया।

यदि ब्रिटिश अधिकारियों ने अनदेखा न किया होता तो लाखों यहूदी हिटलर के गैस चैम्बरों से बच जाते। यरुशलेम का मुफ्ती हिटलर के साथ मिला हुआ था और उससे यह वादा किया गया था कि जब भी हिटलर मध्य-पूर्वी देशों को जीतेगा तब उसको अरब समुदाय का प्रवक्ता बना दिया जाएगा। ब्रिटेन ने अरब के तेल के साथ और उसके बिना अपनी स्थिति का आँकलन करते हुए अरब समुदाय के साथ चलने का निर्णय लिया। द्वितीय विश्व युद्ध के बाद ब्रिटेन आर्थिक तौर पर लाचार हो चुका था और उसको तेल-उत्पादक देशों के सतत समर्थन की ज़रूरत थी। इस स्थिति में नुकसान यहूदियों का होता रहा। **यदि समय पर अमरीका का साथ न मिला होता तो इस्राएल की आगे की कहानी ही कुछ और होती।**

ब्रिटेन के एक लाख सैनिक फिलिस्तीन में थे जिनको वह वहाँ से निकालना चाहता था इसलिए उसने समस्या संयुक्त राष्ट्र को सौंप दिया। संयुक्त राष्ट्र ने 29 नवम्बर 1947 को ज़मीन का विभाजन कर दिया। अरब समुदाय ने उस विभाजन को अस्वीकार किया और दंगा कर दिया। इससे अरब देशों को संकेत मिल गया इस्राएल के विरुद्ध अपनी सेनाओं को एकत्रित करने का।

यहूदियों के लिए अमरीका का समर्थन

अमरीका देश की शुरुआत की कहानी अद्वितीय है। प्रारम्भ में वहाँ जाकर बसने वालों में बाइबल मानने वाले मसीही लोग थे जो इंगलैंड और यूरोप के धार्मिक सताव से बच कर भागे थे। पहला थैंक्सगिविंग डे (कृतज्ञता दिवस) 1621 में मनाया गया था *मेफ्लावर* जहाज़ के अमरीका पहुँचने के एक साल बाद। इंगलैंड में प्यूरिटन क्रांति के दौरान (1642-1648) उन्होंने असफल कोशिश की थी वहाँ के आम कानून को बदलकर बाइबल आधारित कानून व्यवस्था वहाँ स्थापित करने की। जब "न्यू हैवन" विधायकों ने पहला लीगल कोड़ (संविधान) बनाया तो उसमें 79 कानून थे और इनमें से आधों के साथ बाइबल की आयतों का उद्धरण था। वहाँ शुरुआत के शैक्षणिक संस्थाओं में बाइबल और इब्रानी भाषा का अध्ययन अनिवार्य था।

अमरीका में प्रथम यहूदी शरणार्थी 1654 में आए। वे ब्राज़ील से आए थे जहाँ कैथोलिक चर्च यहूदियों के सताव में जुटी हुई थी।

धीरे-धीरे यहूदियों की गिनती बढ़ती गई। अमरीका की आज़ादी की लड़ाई (1776) के समय वहाँ करीब 2000 यहूदी थे जो 1820 तक बढ़कर 6000 हो गए। 1850 तक इनकी गिनती 17000 हो गई जो 1880 तक 270000 हो गई क्योंकि पश्चिमी यूरोप से उदारवादी यहूदी भारी संख्या में यहाँ आने लग गए।

रूसी साम्राज्य से पूर्वी यूरोप के यहूदियों का भारी तादाद में पलायन 1882 में शुरू हुआ। उस समय दुनिया के कुल यहूदियों का 40 प्रतिशत पूर्वी यूरोप के यहूदी ही थे और 19वीं शताब्दी के अंत तक इनकी गिनती 12500000 पहुँच चुकी थी। 1881 और 1914 के बीच 2500000 रूसी यहूदी पूर्वी यूरोप से निकल चुके थे। **इनमें से अधिकतर अमरीका में आकर बस गए।**

अनुमान लगाया जाता है कि द्वितीय विश्व युद्ध की शुरुआत में संसार में 180 लाख यहूदी थे परन्तु 2001 में यही गिनती गिरकर 137 लाख हो चुकी थी जिसमें से 42 प्रतिशत अमरीका में थे और 37 प्रतिशत इस्राएल में। **यहूदियों को अमरीका में एक सुरक्षित घर मिला** और वहाँ राजनीती और व्यवसाय में उनका प्रभाव बहुत अधिक है। अमरीका ही पहला देश था जिसने 1948 में इस्राएल को एक राष्ट्र के रूप में स्वीकार किया। और उसके बाद आज तक अत्यधिक मात्रा में मदद पहुँचाता रहा है। संयुक्त राष्ट्र के विधानसभा में जब भी इस्राएल के विरुद्ध कोई भी कानून का प्रस्ताव रखा जाता तो अमरीका ने उन प्रस्तावों को खारिज करने के लिए बारम्बार अपने वीटो पावर का इस्तेमाल किया है।

इस्राएल की जो प्रबल मदद अमरीका ने अब तक की है उसकी वजह अमरीका की बाइबल आधारित जड़ें हैं। आज़ाद रूप से चलने वाले इवैन्जलिकल मसीही कुल अमरीका की जनसंख्या के 20 से 25 प्रतिशत बनते हैं। इनमें से अधिकतर विश्वास करते हैं कि परमेश्वर की योजना में इस्राएल का एक महत्वपूर्ण भविष्य है। वे मानते हैं कि इस्राएल का एक राष्ट्र के रूप में पुनःस्थापित होना बाइबल की भविष्यवाणियों के अनुरूप है और यह कि इस्राएल का विरोध करना परमेश्वर के वचन के विरुद्ध है।

अध्याय 7 – द होलोकॉस्ट (हिटलर द्वारा यहूदी नरसंहार)

हिटलर एक प्रबल वक्ता था, परन्तु उसको यहूदियों के प्रति नफरत की मानो मनोवैज्ञानिक समस्या थी। लोकतांत्रिक तरीके से 1932 में चुनाव जीतने के पश्चात् उसने जर्मनी को एकदलीय शासन वाले देश में बदल दिया। उसने अपने राजनैतिक विरोधियों के लिए डकाऊ नाम शहर में एक बंदी-शिविर बनाया, परन्तु बाद में उसे यहूदियों के लिए इस्तेमाल किया।

1935 में हिटलर ने नूरैमबर्ग कानून पारित किए जिनके अनुसार, यहूदी लोग देश के नागरिक नहीं बन सकते थे और न ही मताधिकार का इस्तेमाल कर सकते थे। यहूदी जर्मन-खून वाले किसी से विवाह नहीं कर सकते थे और कोई भी आम सार्वजनिक पद पर नियुक्त नहीं हो सकते थे।

9 नवम्बर 1938 को हिसा शुरू हो गई जिसको *"क्रिस्टलनक्ट"* (यानि टूटे शीशे की रात) कहते हैं। तब 171 सिनागोग नष्ट किए गए और 91 यहूदी मार डाले गए। तत्पश्चात्, जले पर नमक छिड़कने के लिए हिटलर ने 30000 अमीर यहूदियों को गिरफ्तार किया और जर्मन लोगों को हुए नुकसान की भरपाई के लिए उन पर सौ करोड़ मार्क (40 करोड़ अमरीकी डॉलर) का जुर्माना लगा दिया।

जब यहूदियों ने बचकर भागने का प्रयास किया तो अन्य देशों ने उन्हें स्वीकार नहीं किया। उस समय जो 8 लाख लोग जर्मनी से निकलकर भागे उनमें से 2 लाख यहूदियों को अमरीका ने अपने यहाँ पनाह दी।

द्वितीय विश्व युद्ध का प्रारम्भ 1 सितम्बर 1939 को तब हुआ जब पोलैंड पर चढ़ाई की गई। हिटलर ने अपनी पहले आक्रमण न करने के समझौते को अनदेखा किया और रूस पर चढ़ाई कर दी जहाँ भारी संख्या में यहूदी रहते थे। 22 जून 1940 को फ्रान्स ने समर्पण कर दिया और इससे फ्रान्स के यहूदी खतरे में आ गए। "आइन्सत्जग्रुप्पें" नामक विशेष सैन्य यूनिट बनाए गए जो यहूदियों का संहार करने लगे और 15 लाख यहूदी मारे गए।

हिटलर यहूदियों को मारने का इससे भी सुघड़ तरीका चाहता था परणिामस्वरूप 20 जनवरी 1942 को बर्लिन के निकट वैनसी में एक सम्मेलन में "आखिरी समाधान" पर अंतिम निर्णय लिया गया। यहूदियों को पूर्व में निर्वासित करके उन पर "आखिरी समाधान" लागू करना था – गैस चैम्बरों में मृत्यु। इस प्रकार के जो 24 मृत्यु-शिविर बनाए गए उनमें से छः शिविरों से प्राप्त मृत्यु के आँकड़ों से हिटलर के जुर्म की भयानकता साबित होती हैः

- आस्चविट्ज़ – 20 लाख (12000 मृत्यु प्रतिदिन)
- चैल्मनो – 3,60,000
- ट्रेबलिन्का – 8,40,000
- सोबिबोर – 2,50,000
- मैदनेक – 2,00,000
- बैल्ज़ेक – 6,00,000

बहुत से यहूदी तो मृत्यु शिविरों तक भी नहीं पहुँच सके परन्तु बीच रास्ते में ही ऐसे ट्रेनों में मर गए जिनमें

शौच का कोई प्रबंध नहीं था और उन्हें मवेशियों की तरह बिना भोजन के और बिना पर्याप्त वस्त्रों के ठूंसा जाता था। कड़ाके की ठंड़ में ट्रेनों को यहाँ-वहाँ बगल की पटरियों पर रोक दिया जाता था और ऐसे ही छोड़ दिया जाता था।

बेहोशी की दवा दिए बग़ैर इन लोगों पर चिकित्सा जगत के परीक्षण किए जाते थे और गैस चैम्बरों में भेजने से पहले इनके सारे कपड़े उतरवा दिए जाते थे। जो इनमें शारीरिक रूप से सुड़ौल होते थे उनको श्रम-शिविरों में गुलामों की तरह भेजा जाता था और तब तक उनसे काम लिया जाता था जब तक कि वे पूरी तरह से कमज़ोर नहीं हो जाते थे और उसके बाद उन्हें भी मार दिया जाता था। यदि कोई यहूदी बच कर भागने की कोशिश करता तो उसके साथ बदले की कारवाई होती थी। एक ऐसी घटना हुई 14 मार्च 1942 को यूक्रेन में जहाँ 900 यहूदियों को एक बिल्ड़िंग में भरकर ज़िन्दा जला दिया गया।

यहूदियों के प्रति हिटलर का द्वेष इस बात से भी स्पष्ट होता है कि वह रूस के मोर्चे की तरफ सैनिकों को ले जाती ट्रेनों की भी दिशा बदलवा देता था ताकि ज़्यादा से ज़्यादा यहूदियों को मृत्यु-शिविरों तक ले जाया जा सके। अपने कुछ अंतिम शब्दों में उसने देश के नेताओं से गुहार लगाई कि अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर यहूदियों का बर्बरतापूर्ण तरीके से विरोध किया जाए। विश्वसनीय अनुमानों के अनुसार होलोकॉस्ट में मारे गए यहूदियों की गिनती कम से कम 5950000 होगी।

नाज़ी यातना शिविर

1941 में द्वितीय विश्व युद्ध को दो साल बीत चुके थे। पूरे यूरोप में यहूदी फंस गए थे और उनके पीछे नाज़ी हत्यारे, शिकारियों की तरह, हाथ धोकर पड़े हुए थे। जर्मन सेनाओं को संपूर्ण यूरोप में ज़बरदस्त जीत हासिल हो रही थी और सेना पूर्व में रूस की तरफ बढ़ रही थी जिस कारण यहूदियों को पोलैंड, ऑस्ट्रिया, हंगरी, और चैकोस्लोवाकिया को भी छोड़ना पड़ा। ये लोग दनुबे नदी में नावों और बजरों के सहारे नीचे की ओर जाकर रोमानिया की पोर्ट-नगरी, कौन्स्टैन्टा, तक पहुँच जाते थे। उनका लक्ष्य होता था एकमात्र खुला रास्ता यानि काला-सागर और तुर्की होते हुए फिलिस्तीन तक पहुँचना।

युद्ध के दौरान "अरब पहलू" एक संवेदनशील मुद्दा था मित्र-देशों के लिए और एक्सिस-देशों के लिए भी। मध्य पूर्व के तेल के भण्ड़ारों पर हिटलर की नज़र थी और वह अरब देशों से समझौते की भरसक कोशिश करता रहा। उसने यरुशलेम के ग्रैन्ड मुफ्ती (फिलिस्तीन के अरब लोगों का सर्वोच्च धार्मिक चेहरा) से उसने वादा किया था कि यहूदियों को बचकर फिलिस्तीन जाने नहीं दिया जाएगा। यहूदियों से हिटलर की नफ़रत की वजह से अरब जगत में उसको काफी हमदर्दी मिली।

उस समय फिलिस्तीन ब्रिटिश शासनादेश के अधीन था जिस पर एक गवर्नर प्रशासनिक अधिकारी के रूप में नियुक्त था। उस समय की परिस्थितियों में ब्रिटिश नीति थी कि अरब लोगों को ठेस न पहूँचाई जाए। उनको इस बात का डर था कि ज़रा सा भी यहूदियों की तरफ झुकाव दिख जाए तो चारों तरफ अरब विद्रोह कर बैठेंगे।

इतना ही नहीं, यहूदी शरणार्थियों को फिलिस्तीन में स्वीकार करने से पूरे यूरोप और बाल्कन इलाके से प्रवासी यहूदियों की भीड़ उमड़ पड़ती जिससे उनको बसाने की चुनौती खड़ी हो जाती। इन कारणों से ब्रिटिश ने पूरे फिलिस्तीन में अवरोध लगा दिए थे ताकि अवैध रूप से घुसने वाले यहूदियों को भी रोका जा सके। उन्होंने बहाना यह लगाया कि यहूदी शरणार्थियों के भेष में जर्मन भेदिए अंदर घुसने की कोशिश कर सकते हैं।

वैश्विक युद्ध में तुर्की ने निष्पक्ष रवैया अपनाया हुआ था। मध्य-यूरोप में जर्मनी की चढ़ाई से बचकर भागने वाले शरणार्थियों से तुर्की पहले ही भर चुका था। ऊपर से ब्रिटिश, जर्मन और अरब देशों का बड़ा दबाव था तुर्की पर कि यहूदी शरणार्थियों को प्रवेश की अनुमति न दी जाए।

द्वितीय विश्व युद्ध से पहले रोमानिया में यहूदियों की जनसंख्या करीब 9 लाख थी जिसमें से 5 लाख युद्ध के दौरान मर गए। परन्तु रोमनिया में यहूदियों का सताव युद्ध से काफी पहले ही प्रारम्भ हो चुका था। रोमानिया के अयर्न गार्डस् (जर्मन एस.एस. के जैसी फौज) की क्रूरता की वजह से यहूदियों ने 1938 में ही कोन्स्टैन्टा बन्दरगाह से फिलिस्तीन के लिए पलायन शुरू कर दिया था। 1939 तक कोन्स्टैन्टा एक बहुत बड़े शरणार्थी शिविर की तरह बन चुका था और तब शुरू हुआ "ताबूत जहाज़ों" का समय। ये ऐसे जहाज़ थे जो समुद्र में उतरने लायक नहीं थे और न इनमें यात्रियों के लिए किसी भी प्रकार की सुविधा थी। इनकी क्षमता से पाँच से दस गुणा लोगों को इनमें भर दिया जाता था। रोमानिया के अधिकारियों ने इस परिस्थिति का भरपूर फायदा उठाया क्योंकि यात्रियों को भारी रकम देकर अवैध रूप से बच निकलना पड़ता था।

दिसम्बर 1940 के शुरुआती दिनों में *एस.एस.सैल्वाडोर* नामक एक जहाज़ जिसकी क्षमता 30-40 यात्रियों की थी तौभी 327 शरणार्थियों को लेकर बहुत ही अद्भुत तरीके से इस्तान्बुल तक तो पहुँच गया परन्तु जब आगे की यात्रा प्रारम्भ की तो मरमरा सागर में एक बड़ी आँधी आई और यह टूटा-फूटा जहाज़ 15 दिसम्बर 1940 को डूब गया। केवल 123 लोग बच पाए जिनको फिलिस्तीन जाते हुए *एस.एस.डैरियन-द्वितीय* नामक एक दूसरे जहाज़ ने बचा लिया जिसमें पहले ही 723 यात्री थे। *एस.एस.डैरियन द्वितीय* लगभग लक्ष्य तक पहुँच गया था किन्तु 19 मार्च 1941 के दिन ब्रिटिश ने फिलिस्तीन तट के समीप उसपर कब्ज़ा कर लिया और उसमें उपस्थित सब लोगों को क़ैद में ले लिया।

तुर्कों ने इस्तान्बुल में और शरणार्थी जहाज़ों के आने की अपेक्षा करते हुए इस समस्या के समाधान हेतु अमरीका को एक प्रस्ताव भेजा जिसमें रोमानिया से आ रहे 3 लाख यहूदियों को क्रमबद्ध तरीके से ब्रिटेन के सहयोग से तुर्की में से होते हुए फिलिस्तीन ले जाने की बात रखी। तुर्की का यह प्रस्ताव यह कहकर ठुकरा दिया गया कि पर्याप्त संख्या में जहाज़ नहीं थे और यह भी कि ऐसा प्रस्ताव ब्रिटेन द्वारा 1939 में प्रकाशित श्वेत-पत्र के विरुद्ध होगा जिसमें अगले पाँच सालों में केवल 75000 यहूदी शरणार्थियों को ही फिलिस्तीन में स्वीकार करने की अनुमति थी। उन्ही दिनों में एक शिपिन्ग कम्पनी ने फिलिस्तीन तक लक्ज़री जहाज़ में यात्रा का विज्ञापन दिया। उसके पर्चों और पोस्टरों में रानी मेरी की तस्वीर तक लगाई गई थी।

जर्मनी ने सारे जहाज़ अपने लिए माँग रखे थे पर *एस.एस.मसेडोनिया* नामक नदी के एक पुराने जहाज़ को ठुकरा दिया था क्योंकि उसकी हालत बहुत जर्जर थी और उसे एक बंदरगाह पर छोड़ दिया गया था। यह जहाज़ 74 साल पुराना था और उसकी लम्बाई केवल 50 फुट और चैड़ाई 20 फुट थी।

कुछ हल्की मरम्मत के बाद इस बोट को पनामा के झण्डे के नीचे *एस.एस.स्ट्रूमा* नाम से पंजीकृत किया गया। तुरन्त 769 यहूदियों ने इसमें रूची दिखाई क्योंकि उनसे कहा गया कि यह बोट उनको उस विज्ञापन वाले लक्ज़री जहाज़ तक पहूँचाएगा जिसपर अमरीकी झण्ड़ा होने की वजह से उसको रोमानिया के समुद्री-क्षेत्र से बाहर ही रखना पड़ रहा था।

12 दिसम्बर 1941 को *एस.एस.स्ट्रूमा* ने कोन्स्टैन्टा से सफर प्रारम्भ किया परन्तु खुले समुद्र में पहुँचने पर यात्रियों को कठोर सच्चाई का पता चला। वहाँ कोई लक्ज़री जहाज़ था ही नहीं जो उनका इन्तज़ार कर रहा हो। किसी तरह वे लोग 15 दिसम्बर 1941 को इस्तान्बुल पहूँचे एक खराब इंजन और रिसते हुए ढाँचे के साथ।

उस जहाज़ के कप्तान ने अधिकारियों से वहाँ बंदरगाह में तब तक ठहरने की इजाज़त माँगी जब तक जहाज़ की मरम्मत न हो जाए और उन्हें अनुमति मिल गई जबकि उस समय के नियमों में ऐसा प्रावधान नहीं था। जब जहाज़ की मरम्मत चल रही थी तब यात्रियों को नीचे उतरने की भी अनुमति दी गई। जब यह पता चला कि किसी भी यात्री के पास फिलिस्तीन में प्रवेश हेतु वीज़ा नहीं था तो तुर्की के विदेश कार्यालय ने अंकारा में ब्रिटेन के राजदूत से आश्वासन माँगा कि सभी यात्रियों को वीज़ा दे दिया जाएगा परन्तु ब्रिटिश अधिकारियों ने मना कर दिया।

एस.एस.स्ट्रूमा 71 दिनों तक इस्तान्बुल बन्दरगाह पर खड़ा रहा और इस दौरान 769 शरणार्थियों को वहाँ की स्थानीय संस्थाएँ मदद पहूँचाती रहीं। इस बीच तुर्की की सरकार इन यात्रियों के लिए ब्रिटिश अधिकारियों के साथ वार्ताओं में लगी रही। यह भी याद दिलाया गया कि उस साल का यानि 1942 का 10,000 शरणार्थियों का वार्षिक कोटा अभी पूरा नहीं हुआ था। ब्रिटेन ने इस माँग को यह कहकर खारिज कर दिया कि कोटा की घोषणा होने से पहले जो अप्रवासी यात्रा शुरू कर चुके थे उनपर वह कोटा लागू नहीं होता। जहाज़ पर मौजूद 70 बच्चों को ज़मीन के रास्ते फिलिस्तीन तक पहूँचाने के लिए वीज़ा प्राप्त करने की कोशिश भी नाकामयाब रही।

अंततः तुर्की की सरकार को समझ आ गया कि ब्रिटेन का रवैया बदलने वाला नहीं है। और 23 फरवरी 1942 को *एस.एस.स्ट्रूमा* के कप्तान को बंदरगाह से रवाना होने का हुक्म दिया गया और एक कर्षण-नौका ने जहाज़ को खींचकर समुद्र तक छोड़ दिया। अगले ही दिन यानि 24 फरवरी को सुबह नौ बजे दर्दभरी ख़बर पहूँची कि जब जहाज़ 'केप इग्ने अड़ा' से करीब चार या पाँच मील की दूरी पर था तब एक विस्फोट ने जहाज़ को पूरी तरह से ध्वस्त कर दिया। रोमानिया का एक 21-वर्षीय यहूदी, डेविड स्टोलियर, के अलावा बाकी सब लोग खतम हो गए थे।

विस्फोट के कारण को समझने के लिए अनेक अटकलें लगाई गईं। हो सकता है कि किसी पण्डुब्बी से छोड़े गए टारपीडो (जहाज़ तोड़ने वाला गोला) से विस्फोट हुआ हो।

इस मोड़ पर रोमानिया के अधिकारियों को सूझा कि यहूदियों का विनाश करने से बेहतर होगा उनको उनकी आज़ादी खरीदने का मौका देना। यही विकल्प *एस.एस.स्ट्रूमा* के मामले में भी आज़माया गया था और आर्थिक तौर पर काफी फ़ायदेमंद साबित हुआ था। जो भी हो, लोगों का फिलिस्तीन तक पहुँच पाना वैसे ही नामुमकिन जैसा था।

"विश्व यहूदी कांग्रेस" ने अमरीका के विदेश विभाग से स्विट्ज़रलैंड़ में से पैसे भेज पाने की अनुमति माँगी ताकि यहूदियों को यूरोप से, ख़ासकर रोमानिया से, छुड़ौती की रकम देकर बाहर निकाला जा सके। विदेश विभाग ने इस शर्त पर अनुमति दी कि जो लोग इस तरह निकाले जाएँगे उन लोगों को ब्रिटिश सरकार फिलिस्तीन में जाने की अनुमति दे। अमरीका के यहूदियों ने अपने लोगों को आज़ाद करने हेतु पैसे एकत्रित करने का अभियान शुरू कर दिया।

एक अमरीकी यहूदी संस्था ने *"न्यू यॉर्क टाइम्स"* में 16 फरवरी 1943 को पूरे पृष्ठ का इस तरह का विज्ञापन दियाः

"70,000 यहूदी मानवजाति को बिकाऊ हैं!
50 डॉलर प्रति इकाई की कीमत पर गारंटी के साथ इंसान मिलेंगे।"

फिर से ब्रिटिश सरकार ने सहयोग करने से इन्कार कर दिया और यह कोशिश भी नाकामयाब हो गई।

एस.एस.स्ट्रूमा वाले नुकसान से काफी हो-हल्ला हुआ और उसके बाद पलिस्तीन में प्रवेश करने की शर्तों में थोड़ी ढ़ील लाई गई। सिरिया पर उस समय मित्र-देशों का कब्ज़ा था और वहाँ से ज़मीनी रास्ता खोला गया। शरणार्थियाँ को समुद्री सफर केवल रोमानिया और इस्तान्बुल के बीच ही करना था और यह सफर छोटे जहाज़ों से भी तय किया जा सकता था। ब्रिटिश संसद में इस मुद्दे पर काफी बहस चली। *एस.एस.स्ट्रूमा* के 70 बच्चों को फिलिस्तीन में आने की अनुमति न देने की वजह से फिलिस्तीन के उच्चायुक्त का मलेशिया में स्थानांतरण कर दिया गया।

न्यू यॉर्क के हाईड पार्क में स्थित अमरीकी राष्ट्रपति-संबंधी पुरालेख में मौजूद दस्तावेज़ों से पता चलता है कि राष्ट्रपति रूज़वैल्ट ने 1944 की शुरुआत में नाज़ी-कब्ज़ा वाले दक्षिणी यूरोप से 50000 यहूदियों को बचाने का एक अभियान चलाया था। योजना यह थी कि उनको तुर्की की नावों में इस्तान्बुल तक लाया जाएगा और फिर ज़मीन के रास्ते से फिलिस्तीन तक ले जाया जाएगा। राष्ट्रपति रूज़वैल्ट ने 50 लाख डॉलर के सोने के सिक्के तुर्की में श्री आईरा हिस्क्रमन्न के पास भेजा ताकि तुर्की में नियुक्त रोमानिया के राजदूत के साथ एक सौदा तय किया जा सके। यदि यह रोमानिया का राजदूत यहूदियों को रोमानिया में से तुर्की के बोटों में निकालने में मदद करता है तो उसको और उसके परिवार को अमरीका का वीज़ा भी दिया जाने वाला था। सौदा मंजूर हो गया और आठ जहाज़ों में 2936 यहूदी शरणार्थी रोमानिया से इस्तान्बुल के लिए रवाना हुए। तुर्की अधिकारियों ने बीच रास्ते की आवश्यकता के अनुसार वीज़ा और इन यहूदियों को सीरिया तक पहूँचाने के लिए ट्रेनों का प्रबंध किया।

कुछ बोट बीच समुद्र में ही खराब हो गए और कुछ तुर्की के तट पर रेत में फंस गए पर तुर्की के कोस्ट-गाड्र्स ने सभी यात्रियों को सुरक्षित बचा लिया और एक की भी जान नहीं गई। इनकी अच्छी देखभाल हुई और इन्हे फिलिस्तीन तक पहूँचा दिया गया।

यह अभियान अगस्त 1944 तक सफलतापूर्वक चलता रहा। ऐसे में तुर्की का एक जहाज़, *एस.एस. मैफकुरे,* 350 यहूदियों को रोमानिया से इस्तान्बुल ले जाने के लिए किराए पर लिया गया था। इस जहाज़ पर तुर्की का भी झण्ड़ा था और रैड-क्रॉस का पताका भी था। दुर्भाग्य से *एस.एस.मैफकुरे* को एक अज्ञात युद्धपोत ने टारपीडो से उड़ा दिया और जो भी यात्री जल में बचने की कोशिश कर रहे थे उनको गोलियों से भून दिया गया। केवल पाँच यात्री ही इस संहार से बच सके। इस घटना की वजह से यहूदियों के पास यूरोप से बच निकलने का जो एकमात्र रास्ता था वह भी बंद हो गया। और हज़ारों यहूदी अपने भाग्य-भरोसे यूरोप में ही छूट गए।

परमेश्वर एक शेष भाग को बचा रहा है जैसा कि यशायाह ने लिखाः *"यदि सेनाओं का यहोवा हमारे **थोड़े से लोगों** को न बचा रखता, तो हम सदोम के समान हो जाते और अमोरा के समान ठहरते"* (यशा.1:9)। योएल ने अंतिम दिनों के विषय में कहाः *"उस समय जो कोई यहोवा से प्रार्थना करेगा, वह छुटकारा पाएगा; और यहोवा के वचन के अनुसार सिय्योन पर्वत पर और यरूशलेम में जिन **बचे हुओं** को यहोवा बुलाएगा, वे उद्धार पाएँगे"* (योएल 2:32)।

द ज्यूईश नेशनल फण्ड़

स्विट्ज़रलैंड़ के बसिल में पाँचवें ज़ायनिस्ट कांग्रेस ने 28 दिसम्बर 1901 को ज्यूईश नैशनल फण्ड़ (जे.एन.एफ.) की स्थापना की। जे.एन.एफ को यह ज़िम्मेदारी दी गई थी कि एरिट्ज़-यिस्राएल (इस्राएल की ज़मीन) में ज़मीन खरीदने के लिए यहूदी समुदायों से धन एकत्रित किया जाए। सन् 2001 में सरकार के बाद जे.एन.एफ के पास ही **इस्राएल में सबसे अधिक ज़मीन थी (पूरे क्षेत्र का 12.5 प्रतिशत भाग)**। जे.एन.एफ का दावा है कि उसकी शुरुआत से अब तक उसने इस्राएल में 24 करोड़ पेड़ लगा, हैं, 180 बांध और जलाशय बनाए हैं, ढ़ाई लाख एकड़ (1000 वर्ग कि.मी.) ज़मीन को विकसित किया है और 1000 से ज़्यादा पार्क बनाए है। जब जे.एन.एफ की स्थापना हुई तो हैम क्लैंमन

नाम के बैंक क्लर्क ने अपने ऑफिस में एक छोटा सा नीला बक्सा रखा जिसपर लिखा था ''केरन-ले-उमित'' (नैशनल फण्ड़) और हर एक यहूदी परिवार को अपने घर में ऐसा ही करने की सलाह दी।

ऐसे नीले ड़िब्बे (ब्लयू बॉक्स) सबसे पहले 1904 में बनाए गए। उनमें से एक थियोडोर हज़्ल के अध्ययन कक्ष में रखा गया और यह अब भी यरुशलेम में ''हज़्ल रूम'' में देखा जा सकता है। अनेकों सालों तक ये ''ब्लयू बॉक्स'', जिसका नाम उसके नीले और सफेद रंग से पड़ा, विश्व भर में छितराए हुए प्रत्येक यहूदी घर और संस्थान में देखा जा सकता था। एक विशेष डिब्बे में धन एकत्रित करने के इस प्रयास ने हर स्थान पर यहूदियों में इस्राएल की ज़मीन को लौटने की गहरी चाहत पैदा कर दी।

यशायाह ने भविष्यद्वाणी की थी कि इस्राएल के बंजर पड़े हुए स्थानों में अंतिम दिनों में पेड़ लगा, जाएँगे। परमेश्वर ने कहाः

''मैं जंगल में देवदार, बबूल, मेंहदी और जलपाई उगाऊँगा; मैं अराबा में सनौवर, तिधार वृक्ष और सीधा सनौबर इकट्ठे लगाऊँगा; जिस से लोग देखकर जान लें और सोचकर पूरी रीति से समझ लें कि यह यहोवा के हाथ का किया हुआ और इस्राएल के पवित्र का सृजा हुआ है'' (यशा.41:19-20)।

पेड़ों का रोपा जाना इस्राएल की ज़मीन को दुबारा हरा-भरा करने की परमेश्वर की योजना का भाग है। इसका पूरा स्वरूप तो तब दिखेगा जब मन-फिराए हुए राष्ट्र में मसीह लौट कर आयेगा। आज जो प्रगति दिख रही है वह आने वाली और बड़ी बातों का केवल पूर्व-संकेत है। यहेजकेल ने भविष्यद्वाणी कीः *''परमेश्वर यहोवा यों कहता है, जब मैं तुम को तुम्हारे सब अधर्म के कामों से शुद्ध करूँगा, तब तुम्हारे नगरों को बसाऊँगा और तुम्हारे खण्डहर फिर बनाए जाएँगे। और तुम्हारा देश जो सब आने जाने वालों के साम्हने उजाड़ है, वह उजाड़ होने की सन्ती जोता बोया जाएगा। और लोग कहा करेंगे,* ***यह देश जो उजाड़ था, सो एदेन की बारी सा हो गया*** *''* (यहेजकेल 36:33-35)।

अध्याय 8 – आज़ादी के लिए संघर्ष

1948 में ब्रिटिश फिलिस्तीन से बाहर हो गए परन्तु जाने से पहले उन्होंने यहूदी पुलिस को निशस्त्र कर दिया और सारा नियंत्रण अरब फौज के हाथ में सौंप दिया। 14 मई को यहूदियों ने अपने आप को एक राष्ट्र के रूप में घोषित कर दिया और डेविड़ बेन गुरियन की घोषणा के कुछ ही घण्टों में राष्ट्रपति ट्रूमन ने अमरीका की तरफ से मान्यता दे दी। कुछ समय बाद रूस ने भी स्वीकार कर लिया और इस्राएली झण्ड़ा दुनिया के देशों के बीच लहराने लगा।

डेविड़ बेन गुरियोन के द्वारा रेडियो पर पढ़ी गई **आज़ादी की घोषणा** इस प्रकार से थीः

"इस्राएल की ज़मीन यहूदी लोगों की जन्मभूमि थी। यहीं उनकी आत्मिक, धार्मिक, और राष्ट्रीय पहचान बनी थी। यहीं उन्होंने आज़ादी पाई थी और राष्ट्रीय एवं सार्वभौमिक महत्व वाली संस्कृति रची थी। यहीं उन्होंने बाइबल लिखी थी और दुनिया को दी थी। ... फिलिस्तीन से निर्वासित होकर यहूदी लोग जहाँ भी गए छितराव के सभी देशों में उसके प्रति वफादार रहे और प्रार्थना करना नहीं छोड़ा, न आशा छोड़ी कि एक दिन स्वदेश में लौटेंगे और राष्ट्रीय आज़ादी की पुनःस्थापना देखेंगे।

परिणामस्वरूप, हम जो राष्ट्रीय समीति के सदस्य हैं, आज हमारी बैठक हुई, और यहूदी लोगों के वास्तविक एवं ऐतिहासिक अधिकार के आधार पर और संयक्त राष्ट्र महासभा द्वारा पारित प्रस्ताव के समर्थन से, आज फिलिस्तीन प्रान्त में इस्राएल के नाम से एक यहूदी राष्ट्र की स्थापना की घोषणा करते हैं।

हम सभी पड़ोसी राष्ट्रों और उनके लोगों के सामने शान्ति और मित्रता का प्रस्ताव रखते हैं और सबको निमंत्रण देते हैं कि सब लोगों की भलाई के हित में इस आज़ाद यहूदी राष्ट्र के साथ सहयोग करें ... इस्राएल की चट्टान पर भरोसा करते हुए आज सब्त-पूर्व की संध्या, (ल्यार 5708 का 5वाँ दिन), 1948 मई महीने के 14वें दिन, टैल-अविव शहर में प्रोविश्नल स्टेट काउन्सिल की बैठक में हम इस घोषणा पर हस्ताक्षर करते हैं।"

बालफोर घोषणा के तहत यहूदियों को दी गई ज़मीन को काट-काटकर छोटा कर दिया गया था और समुद्र तट पर एक पतली पट्टी ही बची थी। एक दूसरा भाग था उत्तर में गलील के सागर के आसपास और फिर नेगेव (दक्षिण) की मरूभूमि। अरब समुदाय ने यह बँटवारा अस्वीकार किया और युद्ध की धमकी दी। 14 मई 1948 को इस्राएल द्वारा अपनी आज़ादी की घोषणा के अगले ही दिन, इस्राएल के पड़ोसी राष्ट्रों ने सीमा पर अपनी सेनाओं को एकत्रित कर दिया यहूदियों का नामोनिशान मिटाने के लिए। नवजात राष्ट्र को एकाएक लेबानोन, सिरिया, ईराक, मिस्र, और ब्रिटेन-प्रशिक्षित जोर्डन के अरब-सैनिकों की संयुक्त सैन्य शक्ति से मुकाबला करना पड़ा। आज़ादी की लड़ाई शुरू हो चुकी थी। अरब नेताओं ने अपने लोगों को लड़ाई खत्म होने तक छुट्टी लेने को कहा और उन इलाकों से हटने

के लिए बोला जहाँ अधिक संख्या में यहूदी थे। 11 जून तक ढ़ाई लाख अरब लोगों ने यहूदी इलाकों को छोड़ दिया था।

लड़ाई बहुत भीषण थी और संयुक्त-राष्ट्र द्वारा कई समझौते कराए गए जिनमें 11 जून को पहला समझौता हुआ। इससे इस्राएल को अपनी सेना को फिर से हथियारबंद करने का मौका मिला। सैन्य सामग्री और लोग विदेश से हवाई रास्ते से लाए गए। यहाँ तक कि ग़ैर-यहूदी किराए के सिपाही भी इस्राएली सेना के साथ शामिल हुए। जुलई तक वैस्ट-बैंक की अरब सेना में करीब 45000 सैनिक थे और दक्षिण के नेगेव में मिस्र ने एक बड़ी सेना जुटा ली थी।

इस्राएल ने उत्तेजित होकर नए सैनिकों को प्रशिक्षित किया और अक्तूबर तक उसके सैन्य बल की गिनती 90000 तक पहुँच गई जो कि मुख्यतः अमरीका और चैकोस्लोवाकिया द्वारा हथियारबंद किए गए थे। साथ ही साथ, एक स्थानीय हथियार उद्योग भी काम आया जो द्वितीय विश्व युद्ध के दौरान सक्रीय था। दिसम्बर 1948 तक इस्राएल के पास एक लाख से अधिक हथियारबंद सैनिक, कई छोटे युद्ध-पोत, और वायु सेना तैयार हो चुके थे।

तमाम बाधाओं के बावजूद भी इस्राएल युद्ध में विजयी रहा और उसकी सीमाएँ भी विस्तृत हुईं। किन्तु जोर्डन की सेना ने वैस्ट-बैंक पर कब्ज़ा कर लिया था और 1967 के छः-दिवसीय युद्ध तक यरुशलेम एक विभाजित शहर रहा। छः दिवसीय युद्ध में जोर्डन को यर्दन नदी के उस पास दखेल दिया गया था और तब से वैस्ट-बैंक इलाके को "अधिकृत क्षेत्र" कहते हैं।

3 अप्रैल 1949 को हस्ताक्षरित **"द रोड्स आर्मस्टिस अग्रीमैंट"** के तहत इस्राएल को 8000 वर्ग मील क्षेत्र दिया गया जो कि संयुक्त राष्ट्र द्वारा किए गए विभाजन में मिले क्षेत्र से 21 प्रतिशत अधिक था। संयुक्त राष्ट्र की सदस्यता के लिए दिए गए इस्राएल के आवेदन को 11 मार्च 1949 को स्वीकार किया गया और मई 1950 से सदस्यता लागू हो गई।

लड़ाईयों के समाप्त होने के बाद संयुक्त राष्ट्र के अनुसार अरब शरणार्थियों की गिनती 7,20,000 थी, परन्तु यहूदियों का दावा था कि केवल 5,38,000 ही रह गए थे। करीब 2,40,000 वैस्ट-बैंक में चले गए थे जो उस समय जोर्डन के कब्ज़े में था, 60,000 यर्दन नदी पार कर गए थे, 1,80,000 गाज़ा में जा चुके थे जो उस समय मिस्र के क्षेत्र में आता था, करीब 1,00,000 लेबानोन को भाग गए, 70,000 सिरिया को और छोटी संख्या में मिस्र और ईराक में भी पहुँच गए थे।

युद्ध के पश्चात् बेन गुरियोन ने कहा कि अरब शरणार्थियों को वापस आने नहीं दिया जाएगा। "युद्ध तो युद्ध है," उन्होंने कहा, "जिन्होने हम पर युद्ध की घोषणा की उनको अब पराजय के बाद अंजाम तो भुगतना ही पड़ेगा।"

यहूदी शरणार्थी

अरब देशों में यहूदियों पर सताव अब और गहरा होता रहा। 1948 और 1957 के बीच 467000 यहूदियों को मुस्लिम देशों में अपना घर-बार सब छोड़ने को विवश किया गया। इनमें से अधिकांश लोग इस्राएल में आकर बसे।

"यरूशलेम पोस्ट" में 12 जनवरी 2001 को आए एक रिपोर्ट में लिखा था:

"8,50,000 एक समय पर अरब देशों में रहते थे। इनमें से बहुतों की धन-सम्पत्ति सब छीन ली गई और उन्हें देश से बेदखल कर दिया गया। यह या तो 1948 में इस्राएल की स्थापना के परिणामस्वरूप हुआ या फिर बीसवीं शताब्दी में अलग-अलग समय पर अरब देशों में हुए राष्ट्रवादी उथल-पुथल की वजह से।

कुल मिलाकर, करीब 6 लाख यहूदी प्रवासी अरब देशों में से निकले जिनमे अधिकतर इस्राएल में आए। अनुमान लगाया जाता है कि 1922 और 1952 के बीच अरब देशों से बाहर निकले यहूदियों ने अपने पीछे वहाँ करीब 3000 करोड़ अमरीकी डॉलर की सम्पत्ति छोड़ी है।"

इस्राएल के युद्ध

1948-49 की आज़ादी की लड़ाई के बाद कई बार बहुत ही प्रतिकूल परिस्थितियों में इस्राएल को अपनी हिफाज़त करनी पड़ी है। 1956 में सुएज़ संकट, 1967 में छः-दिन का युद्ध, 1973 में योम-किप्पुर युद्ध, 1982 में लेबानोन युद्ध, 1987 में पहला इन्तिफादा और 2000 में दूसरा इन्तिफादा। गाज़ा-पट्टी तो हमेशा परेशानी की जड़ बनी रहती है।

यू.एस.एस.आर का पतन (1989)

1989 में अचानक से सोवियत संघ (यू.एस.एस.आर) गिर गया जब पूर्वी "यूरोपियन वॉरसो पैक्ट" के देशों ने हिम्मत के साथ अपनी-अपनी आज़ादी की घोषणा कर दी और इस तरह शीत-युद्ध समाप्त हो गया। अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर मार्क्सवाद चूर-चूर हो गया। पश्चिम की तरफ के दरवाज़े खुल गए और महान रूसी सेना ने ऊँगली तक नहीं उठाई। 16 अप्रैल 1989 को **पोलैंड** की मार्क्सवादी सरकार ने *"सोलिडैरिटी मूवमैन्ट"* नामक विपक्ष के ऊपर से प्रतिबंध हटा दिए। **हंगरी, पूर्वी जर्मनी, बल्गेरिया, चैकोस्लोवाकिया और रोमानिया में भी इसके पीछे-पीछे ऐसा ही हुआ।** तुरन्त यहूदी संस्थाओं ने पुराने सोवियत संघ के देशों से यहूदियों को बाहर निकालने का काम शुरू कर दिया और अगले एक दशक में दस लाख यूहदियों को इस्राएल पहूँचाया गया। इनमें से बहुतेरे वैज्ञानिक, इंजिनियर और विद्वान थे जो विभिन्न जगहों पर अनुसंधान में जुटे हुए थे। पुराने सोवियत-संघ की बुद्धि-शक्ति को इस्राएल ने बखूबी इस्तेमाल किया अपने आप को एक उच्च तकनीकी देश के रूप में और अधिक तैयार करने के लिए।

अध्याय 9 – इब्रानी भाषा की जागृति

आदम के समय से लेकर बाबेल के गुम्मट के समय तक मानव जाति एक ही भाषा बोलती थी। हम पढ़ते हैं:

*"सारी पृथ्वी पर **एक ही भाषा, और एक ही बोली थी**...और यहोवा ने कहा... मैं क्या देखता हूँ, कि सब एक ही दल के हैं और भाषा भी उन सब की एक ही है"* (उत्पत्ति 11:1, 6–8)।

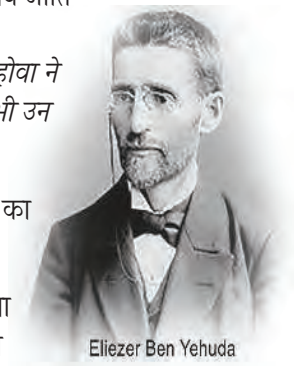
Eliezer Ben Yehuda

बाबेल या बेबीलोन का गुम्मट बनाना परमेश्वर के विरुद्ध बलवे का प्रयास था। प्रथम शताब्दी के इतिहासकार, जोसेफस, लिखते हैं:

"वह निम्रोद था जिसने लोगों को परमेश्वर के विरुद्ध इतना भड़काया और उकसाया ... क्योंकि उसके अनुसार परमेश्वर के अधीन होना डरपोक बनने के बराबर था; और उन्होंने एक गुम्मट बनाया।" (बुक 1, अध्याय 4, *"एन्टीक्यूटीज़ ऑफ द ज्यूज़"*)।

इसका मतलब यह नहीं कि हम जोसेफस के लेखों को प्रेरित समझें। वैसे भी, हम बाइबल में दर्ज उल्लेख को देख सकते हैं:

"निम्रोद... वही यहोवा की दृष्टि में पराक्रमी शिकार खेलने वाला ठहरा... निम्रोद के समान यहोवा की दृष्टि में पराक्रमी शिकार खेलने वाला। और उसके राज्य का आरम्भ शिनार देश में बाबुल, अक्कद और कलने हुआ।" (उत्पत्ति 10:8–10)।

ऐसा प्रतीत होता है कि महाप्रलय के बाद हाम के अधर्मी वंशज विद्रोह में खड़े हुए होंगे परन्तु शेम के धर्मी वंशजों ने बाबेल के गुम्मट को बनाने में भाग नहीं लिया होगा और इस कारण **उनकी भाषा** में परमेश्वर के हस्तक्षेप से गड़बड़ी पैदा नहीं हुई होगी।

"और एबेर के दो पुत्र उत्पन्न हुए, एक का नाम पेलेग इस कारण रखा गया कि उसके दिनों में पृथ्वी बँट गई और उसके भाई का नाम योक्तान है।" (उत्पत्ति 10:25)।

अब्राहम को *"इब्रानी मनुष्य"* कहा गया था (उत्पत्ति 14:13) और युसुफ को भी ऐसा ही बुलाया गया (उत्पत्ति 39:14,17; 41:12) और इस्राएल की संतानों को भी (निर्ग. 1:15–19)। इब्रानी लोग **ऐबेर** के वंशज थे जो भाषाओं की गड़बड़ी से एक पीढ़ी पहले जीवित था। पिन्तेकुस्त के दिन परमेश्वर ने इस्राएल के प्रति अपनी अप्रसन्नता को इस प्रकार से प्रगट किया कि उनको परमेश्वर का वचन इब्रानी भाषा में नहीं बल्कि अन्यजातियों की भाषाओं में सुनने दिया।

यशायाह ने भविष्यद्वाणी की:

"वह तो इन लोगों से परदेशी होंठों और विदेशी भाषा वालों के द्वारा बातें करेगा, जिन से उसने कहा, विश्राम इसी से मिलेगा, इसी के द्वारा थके हुए को विश्राम दो, परन्तु उन्होंने सुनना न चाहा" (यशा. 28:11–12)।

पौलुस ने 1 कुरि.14:21 में इस भविष्यद्वाणी का उद्धरण किया,
"व्यवस्था में लिखा है कि प्रभु कहता है, मैं अन्य भाषा बोलने वालों के द्वारा और पराए मुख के द्वारा इन लोगों से बात करूँगा तौभी वे मेरी न सुनेंगे। इसलिये अन्य अन्य भाषाएँ विश्वासियों के लिये नहीं परन्तु अविश्वासियों के लिये चिन्ह हैं और भविष्यद्वाणी अविश्वासियों के लिये नहीं परन्तु विश्वासियों के लिये चिन्ह हैं" (1 कुरि. 14:22)।

मसीह को ठुकराने के दण्ड़ के रूप में इस्राएल को अन्यजातियों की भाषाएँ दी गईं। उसके बाद इब्रानी भाषा मृत हो गई। 70 ईसवीं में इस्राएल के छितराए जाने के बाद इब्रानी भाषा विलुप्त हो गई। यहूदी ज़्यादातर आरामी और यूनानी भाषा में बोलते और सिखाते थे। सन् 1000 के करीब, यिद्दिश का इस्तेमाल होने लगा जो कि जर्मन, स्लैविक और इब्रानी भाषा का एक मिश्रित रूप था। पुराना-नियम का पाठ तो इब्रानी में चलता रहा परन्तु साधारण बोली में से इब्रानी भाषा खतम हो गई।

1881 में ज़ायनिज़म के जागृत होने पर इलिएज़र बेन-यहूदा, एक 23-वर्षीय रूसी यहूदी, अपनी जवान दुल्हन को लेकर फिलिस्तीन में बसने के लिए आ गया। उन्होंने शपथ खाई कि जहाज़ में कदम रखने के वक्त से लेकर वे आपस में इब्रानी के अलावा किसी और भाषा में बात नहीं करेंगे।

इस्राएल में पहुँचने पर बेन-यहूदा इब्रानी बोली सिखाने लगा और उसने एक इब्रानी अख़बार भी छापी जिसकी केवल 200 प्रतियाँ ही बिक पाईं।

रूढ़ीवादी स्कूलों से विरोध होने लगा क्योंकि वहाँ यिद्दिश सिखाया जाता था। उसके दफ्तर पर पत्थरवाह किया गया। उसको तुर्की अधिकारियों ने राज-द्रोह के आरोप में ठुकराया, रब्बियों के द्वारा वह निष्कासित किया गया, और जब 1891 में टी.बी से उसकी पत्नी की मृत्यु हुई तो रूढ़ीवादी यहूदियों ने यहूदी कब्रिस्तान में उसको दफनाने नहीं दिया।

परन्तु 1922 में जब बेन-यहूदा की मृत्यु हुई तब फिलिस्तीन में मौजूद यहूदियों में से करीब आधे **इब्रानी भाषा बोलते थे।** उसके अंतिम संस्कार में 30000 लोगों ने भाग लिया और फिलिस्तीन के यहूदियों ने उसके लिए तीन दिनों का शोक किया। इब्रानी भाषा जो कि 1800 सालों से मृत थी उसका दुबारा जन्म हो चुका था और 1948 में इब्रानी को इस्राएल की औपचारिक भाषा का दर्जा मिला।

यशायाह नबी ने भविष्य के एक दिन के बारे में कहा जब *"मिस्र के पाँच शहरों में **कनान की भाषा** बोली जाएगी और वे यहोवा की शपथ लेंगे"* (यशा.19:18)। यह तब होगा जब मिस्र के लोग महाक्लेश के पहले भाग में मन फिराएँगे (दानिय्येल 11:40-45)। सपन्याह ने भविष्यद्वाणी की है कि महाक्लेश के दौरान वह शुद्ध और मूल भाषा बोली जाएगी जो अदन की वाटिका में परमेश्वर ने बोली थी।
"और उस समय मैं देश.देश के लोगों से एक नई और शुद्ध भाषा बुलवाऊँगा कि वे सब के सब यहोवा से प्रार्थना करें और एक मन से के से का मिलाए हुए उसकी सेवा करें" (सपन्याह 3:9)।

महाक्लेश और इस्राएल के मन-फिराव का समय यकीनन निकट आ गया होगा!

अध्याय 10 – टैम्पल माउन्ट के लिए लड़ाई

गर्शोम गोरनबर्ग ने अपनी पुस्तक *"दी ऐन्ड ऑफ ड़ेज़"* में विस्तृत जानकारी दी है कि किस तरह यहूदियों ने प्रयास किए हैं 70 ईसवीं में नष्ट किए गए दूसरे मंदिर की नींव ढूँढ़ने के लिए। दो संभावित स्थान ढूँढ़े गए हैं: एक "डोम ऑफ रॉक" के उत्तर में है और दूसरा उसके दक्षिण में दो मस्जिदों के बीच में।

उत्तर के स्थान का प्रस्ताव अशेर कौफमैन ने दिया था और दक्षिण वाले स्थान का प्रस्ताव तुवियासगीव ने। ऐसा प्रतीत होता है कि सगीव का प्रस्ताव राजनैतिक दबाव में दिया गया था क्योंकि यहूदियों द्वारा मंदिर के पुनर्निर्माण की शंका जो मुसलमानों में थी उसको वह ख़त्म करना चाहता था, परन्तु कौफमैन का बताया हुआ स्थान सच्चे शोध पर निर्भर है और विश्वसनीय है।

अशेर कौफमैन स्कॉटलैन्ड का यहूदी था जिसका परिवार रूढ़ीवादी ज़ायनिस्ट था। जब वह तीस की उम्र पार कर चुका तो 1960 में इस्राएल में आकर बस गया। एडिनबर्ग के विश्वविद्यालय से उसने भौतिक विज्ञान में पी.एच.डी की पढ़ाई पूरी की थी। इस्राएल में आकर वह हीब्रयू यूनिवर्सिटी में एक प्रोफेसर बन गया और फ्यूशन एवं आयोनाईज़्ड गैसों के स्पैक्ट्रोस्कोपी पर अनुसंधान करने लगा। वह बारीकी और सटीकता का ख्याल करने वाला व्यक्ति था।

कौफमैन ने पुरातन यहूदी लेखों का भी अध्ययन किया ताकि मंदिर की पैमाइश को सत्यापित कर सके। इससे पता चला कि मंदिर का अभिविन्यास पूर्व/पश्चिम दिशा में था और उसका प्रवेश द्वार मंदिर के आँगन की चारदिवारी के पूर्वी फाटक की ओर था। यदि पूर्वी फाटक का पता लग पाए तो मंदिर का स्थान पता लगाने के लिए पश्चिम की ओर केवल एक रेखा खींचने की ज़रूरत है।

इसके अलावा उसको यह भी पता चला कि लाल कलोर (बछिया) को जैतून के पहाड़ पर एक उठे हुए स्थान पर बलि किया गया था जहाँ से मंदिर यरुशलेम की दीवारों के ऊपर दिखता था। इस ऊँचे स्थान पर खड़े होकर पूर्वी फाटक (या स्वर्णिम फाटक) की ओर देखकर उसकी सीध में आगे मंदिर का स्थान तय किया जा सकता है।

19वीं शताब्दी में कैप्टन वैरन नाम के ब्रिटिश सर्वेक्षक ने उन भूमिगत नालियों का पता लगा लिया था जो मंदिर के सामने स्थित बलिवेदी से लोहू को किद्रोन घाटी तक ले जाती थीं। उनकी खोज की रिपोर्ट *"बिब्लिकल आर्कियोलोजिकल रिव्यू"* में प्रकाशित हुआ है।

गर्शोम गोरनबर्ग ने लिखा:

> "उन्होंने (कौफमैन) उन पुराने हौद के, जो उत्तर में माउन्ट की तरफ थे, उन नक्शों और रेखाचित्रों का अध्ययन किया था जिन्हे उन्नीसवीं शताब्दी के खोजकर्ताओं ने बनाए थे। उनका कहना है कि वे सारे हौद एक सीध में जहाँ चारदिवारी थी उसके बाहर ही उपस्थित थे।"

कौफमैन के निष्कर्ष उस प्रचलित राय से मेल नहीं खाते जिसके अनुसार "डोम ऑफ द रॉक" आज वहाँ खड़ा है जहाँ एक समय पर पुराना मंदिर होता था। यदि वह वहाँ नहीं था तो मुसलमानों ने ग़लत

जगह पर मस्जिद क्यों बनाई?

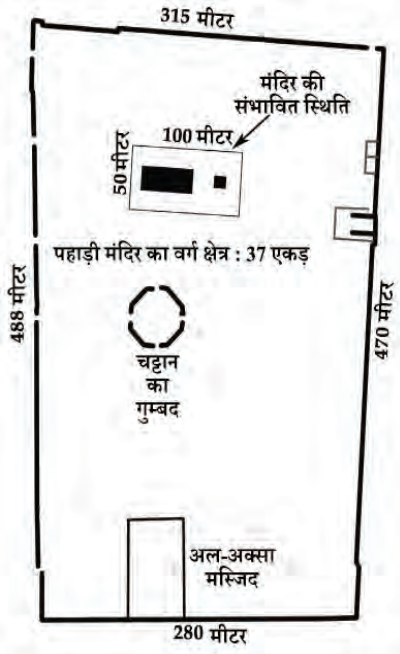

एक अभिप्राय यह है जब 691 ईसवीं में "डोम ऑफ द रॉक" का निर्माण हुआ तब यहूदियों ने जानबूझकर मुसलमानों को गुमराह किया और उनको वह दूसरी एकमात्र जगह दिखाई जहाँ तलशिला ऊपर तक दिखता था। ऐसा प्रतीत होता है कि टैम्पल माउन्ट को महान हेरोद द्वारा काफी विस्तृत किया गया था और पुश्ते की दीवारें इसलिए बनाई गईं थीं ताकि मंदिर के चारों तरफ एक बड़ा समतल आँगन मिल सके। "वेलिन्ग वॉल" उस प्रतिधारक ढाँचे का ही एक भाग है।

काफी निश्चय के साथ कह सकते हैं कि द्वितीय मंदिर का स्थान उन दो क्षेत्रों में से एक पर होगा जहाँ आधार-शैल सतह तक उठकर दिखता है, न कि अन्य जगहों पर जहाँ भराव का इस्तेमाल किया गया है। इन दोनों में से जो सबसे उत्तर की तरफ है वह "डोम ऑफ द रॉक" से 100 मीटर उत्तर में है जहाँ "डोम ऑफ द स्पिरिट्स" नामक एक छोटा झरोखा है। 28 दिसम्बर 1974 तक कौफमैन के पास पर्याप्त सबूत इकट्ठे हो चुके थे जिनके आधार पर उसने दावा किया कि द्वितीय मंदिर के सही स्थान का पता चल चुका है और वह था "डोम ऑफ द रॉक" से 100 मीटर उत्तर में!

हम पवित्रशास्त्र से जान सकते हैं कि मंदिर वहाँ बना था जहाँ नीचे की चट्टान सतह तक आई थी क्योंकि मूल रूप से वहाँ *यबूसी अरौना का खलिहान था* (2 शमूएल 24:18-25) जहाँ दाऊद ने बलिवेदी बनाई थी। खलिहान वहाँ हुआ करते थे जहाँ सपाट चट्टान हो जिसपर गेहूँ पीटा जा सके।

मुसलमानों ने "डोम ऑफ द रॉक" के लिए जो स्थान चुना उसका एक और कारण यह दिया जाता है कि इस्लाम स्वीकार कर चुके एक यहूदी ने उनको मंदिर के दक्षिण में जाने के लिए कहा ताकि जब मुसलमान मक्का की ओर देखकर नमाज़ पढ़ें तो पुराने यहूदी मंदिर की तरफ उनकी पीठ हो।

ऊपर आकाश से लिए हुए चित्रों की तुलना जब जोसेफस द्वारा दिए गए हेरोद के मंदिर के विवरण के साथ की गई तब कौफमैन को निश्चय हो गया कि जहाँ आज "डोम ऑफ द स्पिरिट्स" है वहीं एक समय पर अति-पवित्र स्थान खड़ा था। 1983 में उसने अपना यह दावा एक लेख द्वारा *"बिब्लिकल आर्कियोलॉजिकल रिव्यू"* में पेश किया और यह भी कहा कि उसे उसी जगह से नींव के ढाँचे के कुछ अवशेष भी मिले थे।

जब उसी वर्ष हॉल लिंड्से पहाड़ी मंदिर पर कौफमैन के साथ खड़ा था तो उसने अपने कदमों से मंदिर

के पैमाने को उस जगह पर नापा जो कौफमैन ने बताया था। बाद में उसने इस प्रकार लिखाः

"जब मैं वहाँ नपाई कर रहा था, तो मैं विश्वास करता हूँ कि पवित्रात्मा ने ही मेरे कान में ऊँची आवाज़ में प्रकाशित.11:1-2 दोहराया जहाँ लिखा है कि स्वर्गदूत ने यहून्ना से मंदिर को और भीतर के आँगन को मापने के लिए कहा, *"और मुझे लग्गी के समान एक सरकंडा दिया गया और किसी ने कहा, उठ, परमेश्वर के मन्दिर और वेदी और उस में भजन करने वालों को नाप ले। और मन्दिर के बाहर का आँगन छोड़ देए उस मत नाप क्योंकि वह अन्यजातियों को दिया गया है और वे पवित्र नगर को बयालीस महीने तक रौंदेंगी"* (प्रकाशित.11:1-2)।

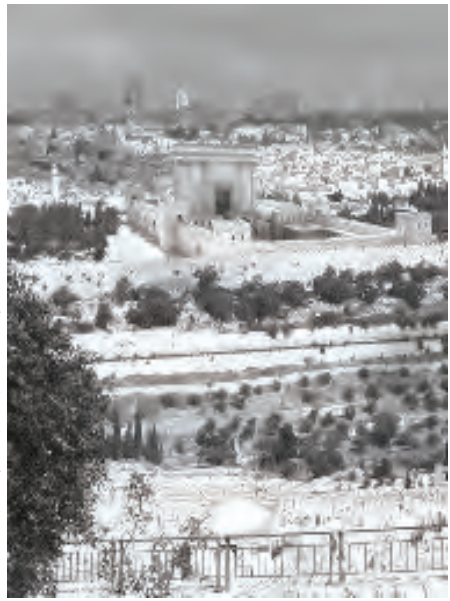

उसने आगे कहा, "कौफमैन के बताए हुए स्थान पर बिना बाहरी आँगन के तीसरा मंदिर बनाया जा सकता है और "डोम ऑफ द रॉक" को छूने की भी ज़रूरत नहीं पड़ेगी। अंतिम दिनों में ये दोनों यहाँ एक ही समय पर खड़े हो सकते हैं।"

दिसम्बर 2018 में यहूदी सन्हेद्रिन (सर्वोच्च समिति) ने दुनिया के 70 देशों के प्रतिनिधियों को निमंत्रित किया था होमबलि की वेदी के समर्पण को देखने के लिए। टैम्पल इंस्टिट्यूट ने पहले से ही मंदिर में आराधना में इस्तेमाल होने वाले सारे उपकरण तैयार कर लिए हैं। हारून की वंशावली में से याजकों की भी पहचान हो चुकी है और मंदिर में सेवा हेतु उनका प्रशिक्षण भी आयोजित किया गया है।

पहाड़ी मंदिर पर मुसलमानों का दावा

यरुशलेम पर मुसलमानों का दावा कुरान में लिखी बातों पर आधारित है। हालांकि उसमें यरुशलेम का नाम कहीं एक बार भी नहीं लिखा तौभी सबसे "दूरस्थ मस्जिद" (सुरा 17:1) के बारे में लिखा हैः

"महिमा हो अल्लाह की जो अपने दास को रात की एक यात्रा में पवित्र मस्जिद से सबसे दूरस्थ मस्जिद तक ले गया।"

पर क्या इस मुस्लिम दावे का कोई आधार है कि कुरान में लिखा हुआ **"दूरस्थ मस्जिद"** (मस्जिदुल अक़्सा) आज यरुशलेम में स्थित अल-अक़्सा मस्जिद ही है? जवाब है कि कोई भी आधार नहीं है।

मोहम्मद (जिनकी मृत्यु 632 ईसवीं में हुई) के दिनों में यरुशलेम बईज़ैन्टाईन साम्राज्य का एक ईसाई शहर था। **मोहम्मद की मृत्यु के छः साल बाद,** यरुशलेम पर 638 ई. में ख़लीफा उमर ने कब्ज़ा कर लिया। उस समय यरुशलेम में केवल गिरजाघर ही थे और एक गिरजाघर टैम्पल माउन्ट पर खड़ा था जिसका नाम था "चर्च ऑफ सैन्ट मेरी ऑफ जस्टीनियन" जो कि बईज़ैन्टाईन शैली में बना हुआ था।

''डोम ऑफ द रॉक'' 691-692 ई. में ख़लीफा अब्द एल मलिक ने बनवाया था और उसके 20 साल बाद अल-अक़्सा मस्जिद बना। इसलिए इसका ''उमर मस्जिद'' नाम ग़लत है। मलिक का बेटा, अब्द एल-वाहद, आया जिसने 705-715 ई. तक शासन किया। 711 ई. या उसके आसपास, यानि मोहम्मद की मृत्यु के 80 साल बाद, उसने उस मसीही-बईज़ैन्टाईन ''चर्च ऑफ सैन्ट मैरी'' का पुनर्निर्माण किया और उसको एक मस्जिद में बदल दिया। उसने मुख्य ढांचा जैसा था वैसा ही छोड़ दिया जो ठेठ बईज़ैन्टाईन शैली का ''बसिलिका'' था जिसमें बीच के आयताकार ''जहाज़'' के दोनों तरफ स्तम्भों की पंक्ति थी। उसने केवल इमारत के बीच में प्याज़ के आकार का एक गुम्बद बना दिया ताकि वह मस्जिद जैसा दिखे। इसके बाद उसने उसका नाम **अल-अक़्सा** रखा ताकि कुरान में लिखे हुए मस्जिदुल अक़्सा जैसा सुनाई दे।

इसलिए यह बिल्कुल स्पष्ट होता है कि जब मोहम्मद ने कुरान का संकलन किया तब उनके दिल में इस मस्जिद के होने की कोई संभावना ही नहीं थी क्योंकि यह मस्जिद उनकी मृत्यु के बाद की तीन पीढ़ियों तक भी बना ही नहीं था। इसके विपरीत, जैसा बहुत पहले ही कई विद्वानों ने स्थापित किया है, यह समझना ज़्यादा उचित है कि जब मोहम्मद ने ''पवित्र मस्जिद'' कहा तो वह मक्का के मस्जिद के लिए था और जब ''दूरस्थ मस्जिद'' कहा तो वह मदीना के मस्जिद के लिए बोला होगा। अल-अक़्सा मस्जिद के आधार पर मुस्लिम दावे में बस इतनी ही सच्चाई है।

अध्याय 11 – इस्राएल के भविष्य की संभावनाएँ

इस्राएल के बहुत कम मित्र हैं। मिस्र के साथ की शान्ति संधि (1978) और जोर्डन के साथ की शान्ति संधि (1994) के सामने कई चुनौतियाँ आती रहती हैं। तुर्की के राष्ट्रपति, रजब तैयब एर्दोआन, के कार्यकाल में इस्राएल और तुर्की के रिश्ते में गिरावट आई है। *इस्लामिक जस्टिस एण्ड डैवलपमैंट पार्टी* (जे.डी.पी) को तुर्की के संसद में नवम्बर 2002 के चुनाव में 550 में 363 सीट मिले थे और 2018 में भी सत्ता उन्ही के हाथ में है। यह इस्राएल के लिए एक गम्भीर चिन्ता का मुद्दा है।

ईराक में सुन्नी सद्दाम हुसैन के पतन के पश्चात् एक शिया सरकार चुनी गई है जिसने ईरान से सैन्य मदद स्वीकार की है। सिरिया में शिया सरकार ने सुन्नी विद्रोहियों के विरुद्ध लड़ाई में ईरानी सैनिकों को शामिल किया है। लेबानोन की हिज़्बुल्लाह ताकतों के पास ईरान से ज़रूरतों की आपूर्ति हो रही है। ईरान के पास अब लेबानोन और इस्राएल के लिए ईराक और सिरिया में से ज़मीनी रास्ता है।

साउदी अरब और खाड़ी देशों के अमरीका के साथ अच्छे आर्थिक और सैन्य संबंध हैं और वे इस्राएल को चुनौती नहीं देंगे। फरवरी 2019 में पोलैंड में मध्य-पूर्व की सुरक्षा के विषय पर हुए सम्मेलन में अरब नेता इस्राएल के साथ सहमत हुए कि शान्ति के सामने असली खतरा ईरान है। **रूस, तुर्की, और ईरान** ने इसमें भाग नहीं लिया बल्कि बिल्कुल इसी समय मध्य-पूर्व सुरक्षा के मुद्दे पर ही एक दूसरा सम्मेलन आयोजित किया।

ईरान का इरादा पक्का है और वह इस्राएल का धरती पर से नामोनिशान मिटा देना चाहता है और उसके लिए हथियार तैयार कर रहा है। रूस और ईरान अब सिरिया में हैं और यहेजकेल 38 में जिस गठबंधन की बात कही गई है वह इस्राएल की सीमा पर तैयार हो रहा है।

तकनीकी रूप से इस्राएल धरती पर सबसे विकसित देशों में से एक है और हाल के वर्षों में उसने इस्राएली तट से दूर तेल और गैस के अपार भण्ड़ार विकसित किए हैं। 2018 में एक करार-नामा तैयार किया गया था इस्राएल के "लैव्याथान गैस फील्ड" से क्रेट, यूनान और इटली में से होता हुआ यूरोपियन यूनियन तक गैस पाईप-लाईन बिछाने के लिए। इस पाइपलाईन के द्वारा इस्राएल सीधा ही प्रतिद्वन्दी बन जाएगा रूस का जो यूरोप की उर्जा ज़रूरतों में से 40 प्रतिशत की आपूर्ति करता है। हो सकता है कि इस्राएल का गैस भण्ड़ार ही वह *"लूट"* हो (यहेज.38:13) जो रूस इस्राएल पर चढ़ाई करके पाना चाहेगा।

इस्राएल का रूपाँतरण

कलीसिया के स्वर्गारोहण के तुरन्त बाद 144000 यहूदी पुरुष यीशु मसीह को स्वीकार करेंगे और वे परमेश्वर के राज्य का सुसमाचार पूरे विश्व भर में प्रचार करेंगे (मत्ती 24:14)। यहेजकेल (यहेज.38/39) और योएल (योएल 2) की भविष्यवाणियों के अनुसार जब रूसी-इस्लामी आक्रमण होगा तब इस्राएल के दो-तिहाई यहूदी मारे जाएँगे पर जो एक-तिहाई बचेंगे वे मसीह को स्वीकार करेंगे और परमेश्वर चढ़ाई करने वाली सेना को नष्ट करेगा जिसमें रूसी सैनिक और तुर्की, ईरान, लिबिया, सुडान जैसे इस्लामी देशों के सैनिक होंगे। ये तबाही वैश्विक भूकम्प, बड़े-बड़े ओले, और महामारी के द्वारा और आक्रमणकारी सेना में फूट के द्वारा होगी। सुन्नी-मुस्लिम शिया-मुस्लिम पर टूट पड़ेंगे और *हर एक*

पुरुष की तलवार उसके भाई के विरुद्ध होगी (यहेज.38:21)। इसलिए हम पढ़ते हैंः

"इस्राएल के घराने तब जान लेंगी कि मैं परमेश्वर यहोवा हूँ। परमेश्वर यहोवा यों कहता है, जब मैं इस्राएल के घराने को उन सब लोगों में से इकट्ठा करूँगा जिनके बीच वे तितर.बितर हुए हैं, और देश देश के लोगों के साम्हने उनके द्वारा पवित्र ठहरूँगा, तब वे उस देश में वास करेंगे जो मैं ने अपने दास याकूब को दिया था" (यहेज. 38:22-25)।

महाक्लेश के पहले अर्धान्श में इस्राएल के मन-परिवर्तन से उसके क्लेश खतम नहीं होंगे। उन सात सालों के बीचोंबीच तक पहुँचते-पहुँचते दुनिया की आधी जन्संख्या खतम हो चुकी होगी। रूस, इस्लाम, और ऐशिया सब टूट चुका होगा और यूरोप का वर्चस्व दुनिया पर होगा। दुनिया-भर में अकाल की वजह से लोग विरोधी-मसीह (एँटीक्राईस्ट) की अधीनता स्वीकार करेंगे और उसका चिन्ह ही भोजन व राशन प्राप्त करने का टिकट होगा। वह सात सालों के बीच में यरुशलेम पहूँचेगा और अपनी मूर्ति को स्थापित करेगा - उजाड़ने वाली घिनौनी वस्तु - और परमेश्वर के मंदिर में अपने आप को स्थापित करेगा (2 थिस्सलु. 2:4)। इस मौके पर यहूदी यरुशलेम से भाग खड़े होंगे (मत्ती 24:16-20) और एक *"ऐसी जगह जाएँगे जो उनके लिए परमेश्वर ने तैयार कर रखी होगी"* और वहाँ उनका *"संरक्षण"* होगा आखिर के 1260 दिनों के लिए (प्रकाशित.12:6,14)। महाक्लेश के दूसरे भाग में इस्राएल अपने अस्तित्व के लिए झूझता रहेगा (जकर्याह 12:1-9; 14:14) परन्तु प्रभु उनके लिए आप लड़ेगा।

जब प्रभु यीशु मसीह अपनी महिमा में धरती पर वापस आएगा तब वह अपने छुड़ाए (उद्धार पाए) हुए लोगों को बचाएगा। तब हर-मगिद्दोन युद्ध चर्मसीमा पर होगा और पशु यानि मसीह- विरोधी यरुशलेम पर कब्ज़ा करने पर ही होगा। जकर्याह ने कहाः *"तब यहोवा निकल कर उन जातियों से ऐसा लड़ेगा जैसा वह संग्राम के दिन में लड़ा था। और उस समय वह जलपाई के पर्वत पर पाँव धरेगा, जो पूरब ओर यरूशलेम के साम्हने है"* (जकर्याह 14:3-4)।

हर एक यहूदी फिलिस्तीन में अपने देश को वापस लाया जाएगा (यहेज.39:28) और *"तरसुस के जहाज़"* सबसे पहले उनको वापस लाएँगे। और वे *अपना सोना और अपनी चाँदी अपने साथ लाएँगे* (यशा.60:9)। दाऊद इस्राएल का राजपुत्र होगा (यहेज. 34:23; यिर्म. 30:9) और 12 प्रेरित बारह सिंहासनों पर बैठकर इस्राएल के बारह गोत्रों का न्याय करेंगे (मत्ती 19:28)। परमेश्वर की महिमा यरुशलेम के ऊपर इतनी प्रज्वलित होगी कि उनको सूरज की रोशनी की ज़रूरत नहीं पड़ेगी (यशा. 60:19-20)। मसीह बिल्कुल वैसे राज करेगा जैसे जिब्राईल ने मरियम से कहा थाः

"और देख, तू गर्भवती होगी और तेरे एक पुत्र उत्पन्न होगा; तू उसका नाम यीशु रखना। वह महान होगा और परमप्रधान का पुत्र कहलाएगा ***और प्रभु परमेश्वर उसके पिता दाऊद का सिंहासन उस को देगा।*** *और वह याकूब के घराने पर सदा राज्य करेगा* ***और उसके राज्य का अन्त न होगा"*** (लूका 1:31-33)।

इस्राएल की ज़मीन अच्छी बारिश द्वारा आशीषित होगी और मरूभूमि गुलाब की तरह खिलेगी (यशा.27:6; 35:1)। युद्ध और लड़ाईयाँ खतम हो जाएँगे और लोग अपने *"तलवारों को पीटकर उनसे हल और भालों से हंसिया बनाएँगे"* (यशा.2:4)। पशु जगत में भी शान्ति होगी और

"भेड़िया और मेम्ना एक संग चरा करेंगे और सिंह बैल की नाईं भूसा खाएगा और सर्प का आहार मिट्टी ही रहेगा। मेरे सारे पवित्र पर्वत पर न तो कोई किसी को दुःख देगा और न कोई किसी की हानि

करेगा, यहोवा का यही वचन है" (यशा. 65:25)।

एक भव्य सहस्राब्दी (1000 वर्ष) मंदिर बनेगा उस पैमाइश के अनुसार जो यहेजकेल अध्याय 40 से 44 में दी हुई है। और एक नहर मंदिर की दहलीज़ से लेकर एक बड़ी घाटी तक बहेगी (यहेज. 47)। यह घाटी तब बनेगी जब जैतून पहाड़ पूर्व से पश्चिम तक बीच में से दो में फट जाएगा। मृत सागर तक पानी का स्तर इतना बढ़ जाएगा कि लोग गलील से लेकर अकाबा की खाड़ी तक मृत सागर में मछली पकड़ेंगे।

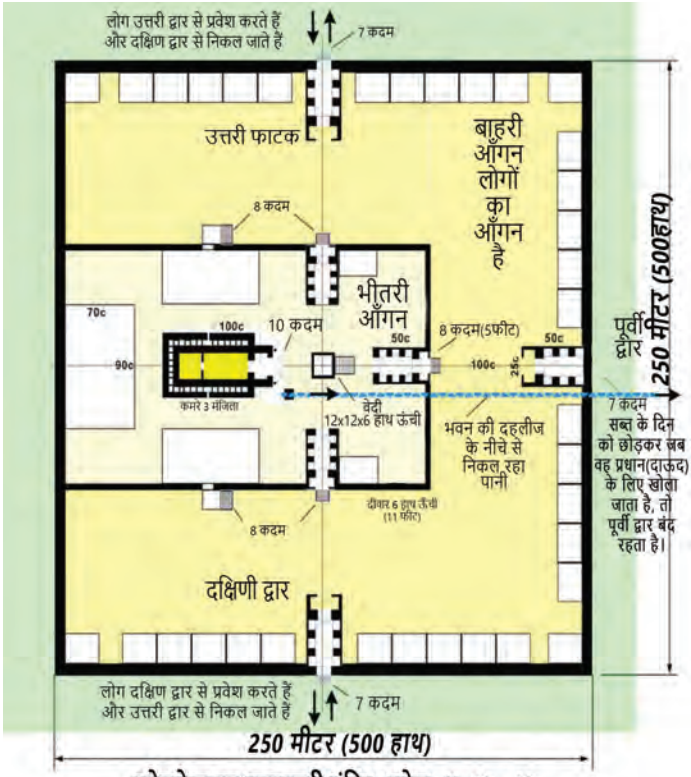

यहेजकेल का सहस्राब्दी मंदिर -यहेज. अ. 40 - 42

यहूदी-विरोध बंद हो जाएगा और

"बहुत से देशों के वरन सामर्थी जातियों के लोग यरूशलेम में सेनाओं के यहोवा को ढूँढ़ने और यहोवा से बिनती करने के लिये आएँगे। सेनाओं का यहोवा यों कहता है : उस दिनों में भाँति भाँति की भाषा बोलने वाली सब जातियों में से दस मनुष्य, एक यहूदी पुरुष के वस्त्र की छोर को यह कहकर पकड़ लेंगे, किए हम तुम्हारे संग चलेंगे, क्योंकि हम ने सुना है कि परमेश्वर तुम्हारे साथ है" (जकर्याह 8:22-23)।

"क्योंकि जो जाति और राज्य के लोग तेरी सेवा न करें वे नष्ट हो जाएँगे, हाँ ऐसी जातियाँ पूरी रीति से सत्यानाश हो जाएँगी" (यशा. 60:12)।

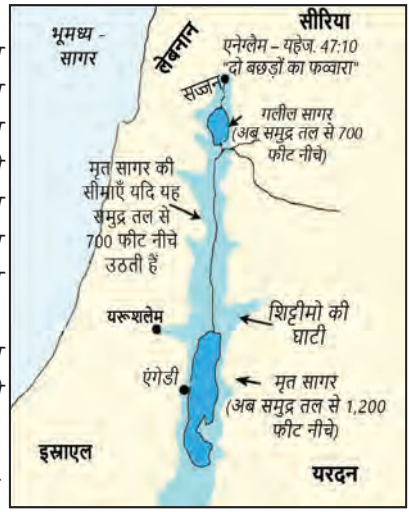

परमेश्वर की आराधना के लिए यरुशलेम दुनिया का

केन्द्र बन जाएगा। सभी देश तम्बुओं का पर्व मनाएँगे (जकर्याह 14:16) और यहूदी प्रचारक दुनिया-भर में जाएँगे और परमेश्वर की व्यवस्था सिखाएँगे (यशा. 2:2,3; 66:19)। लोग उन्हें *"यहोवा के याजक"* कहेंगे और *"हमारे परमेश्वर के सेवक"* (यशा. 61:6)।

धरती के स्वर्णिम युग को बस इस्राएल के मन-फिराव का इन्तज़ार है। जब इस्राएल राख में से उठेगा तब वह मसीह के साथ 1000 साल तक शासन करेगा (यशा. 60:12; भजन 46:1-11; प्रकाशित. 20:4)। *"तब यहोवा सारी पृथ्वी का राजा होगा, और उस समय एक ही यहोवा और उसका नाम भी एक ही माना जाएगा"* (जकर्याह 14:9)।

उन 1000 सालों के अंत में धरती का आग से नवीनीकरण होगा और यहाँ *नया आसमान और नई धरती होगी* (प्रकाशित. 21:1)। नया यरुशलेम, जो कि मसीह और उसकी कलीसिया का अनन्त आवास होगा, स्वर्ग से धरती पर उतरेगा और 12 गोत्रों के नाम उसके 12 फाटकों पर अंकित होंगे ताकि हमेशा-हमेशा के लिए हमें याद रहे कि उद्धार, जिसके द्वारा हम परमेश्वर के सिंहासन तक पहुँच पाते हैं, का रास्ता इस्राएल में से ही था। जो कलीसियाई युग में मसीह को अपने उद्धारकर्ता के रूप में पहचान गए उनके लिए यह बहुत आश्वासन की बात है कि इस्राएल का 70वाँ सप्ताह - महाक्लेश - तब तक शुरू नहीं हो सकता जब तक कि कलीसिया का यहाँ से स्वर्गारोहण न हो जाए। इसलिए इन सब बातों पर हम बहुत रोचकता के साथ नज़र रख सकते हैं जबकि हमारे कूच का समय निकट आता जा रहा है।

> *"क्योंकि परमेश्वर ने हमें क्रोध के लिये नहीं, परन्तु इसलिये ठहराया कि हम अपने प्रभु यीशु मसीह के द्वारा उद्धार प्राप्त करें। वह हमारे लिये इस कारण मरा कि हम चाहे जागते हों, चाहे सोते हों: सब मिलकर* ***उसी के साथ*** *जीएँ"* (1 थिस्सु. 5:9-10)।

''हेराल्ड़ ऑफ हॉप'' साहित्य

द हेराल्ड़ ऑफ हॉप

36-पृष्ठ वाला द्विमासिक पत्रिका जो आपको वर्तमान वैश्विक घटनाक्रम से अवगत कराएगी और बाइबल की खरी शिक्षा आप तक पहूँचाएगी।

अनादि से अनन्त तक

70 रंगीन चार्ट एवं मानचित्रों में बाइबल इतिहास और भविष्यद्वाणी - मुफ़्त

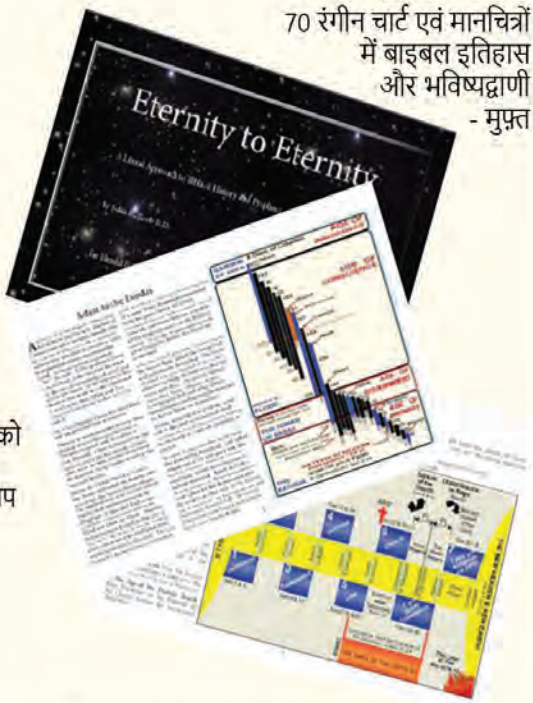

अन्य मुफ्त पुस्तकें

-कब्र के उस पार
मृत्यु के बाद का जीवन एवं पुनरुत्थान (68 पृष्ठ)

-1 और 2 थिस्सलुनीकियों
पाठ्य टिप्पणियाँ (68 पृष्ठ)

-योएल की भविष्यद्वाणी
अंतिम दिनों के विषय में पुराना-नियम की भविष्यद्वाणी (68 पृष्ठ)

-दानिय्येल की बड़ी तस्वीर
दानिय्येल की पुस्तक का सरल अध्ययन (68 पृष्ठ)

-कलीसियाई इतिहास की बड़ी तस्वीर
सात कलीयाओं के नाम सात पत्र (68 पृष्ठ)

-भाषाएँ खत्म हो जाएँगी
शुरुआती समय के चर्च फादर्स ने क्या कहा (68 पृष्ठ)

सम्मानार्थ भेंट प्रतियों के लिए सम्पर्क करें

बाइबल भविष्यावाणी की मूल बातें

बाइबल की खरी व्याख्या से भरे हुए पन्ने। आधारभूत बातों को सही कीजिए, बाकी सब कुछ सही हो जाएगा।

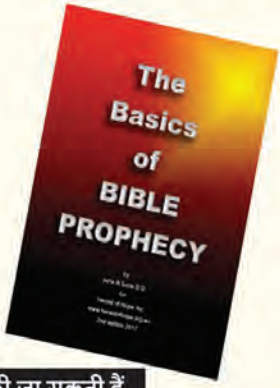

हेराल्ड ऑफ हॉप
PO Box 4216 Marayong NSW 2148
Web Page: www.heraldofhope.org.au
Email: editor@heraldofhope.org.au

अधिकांश पुस्तकें वेब से डाउनलोड की जा सकती हैं
www.heraldofhope.org.au

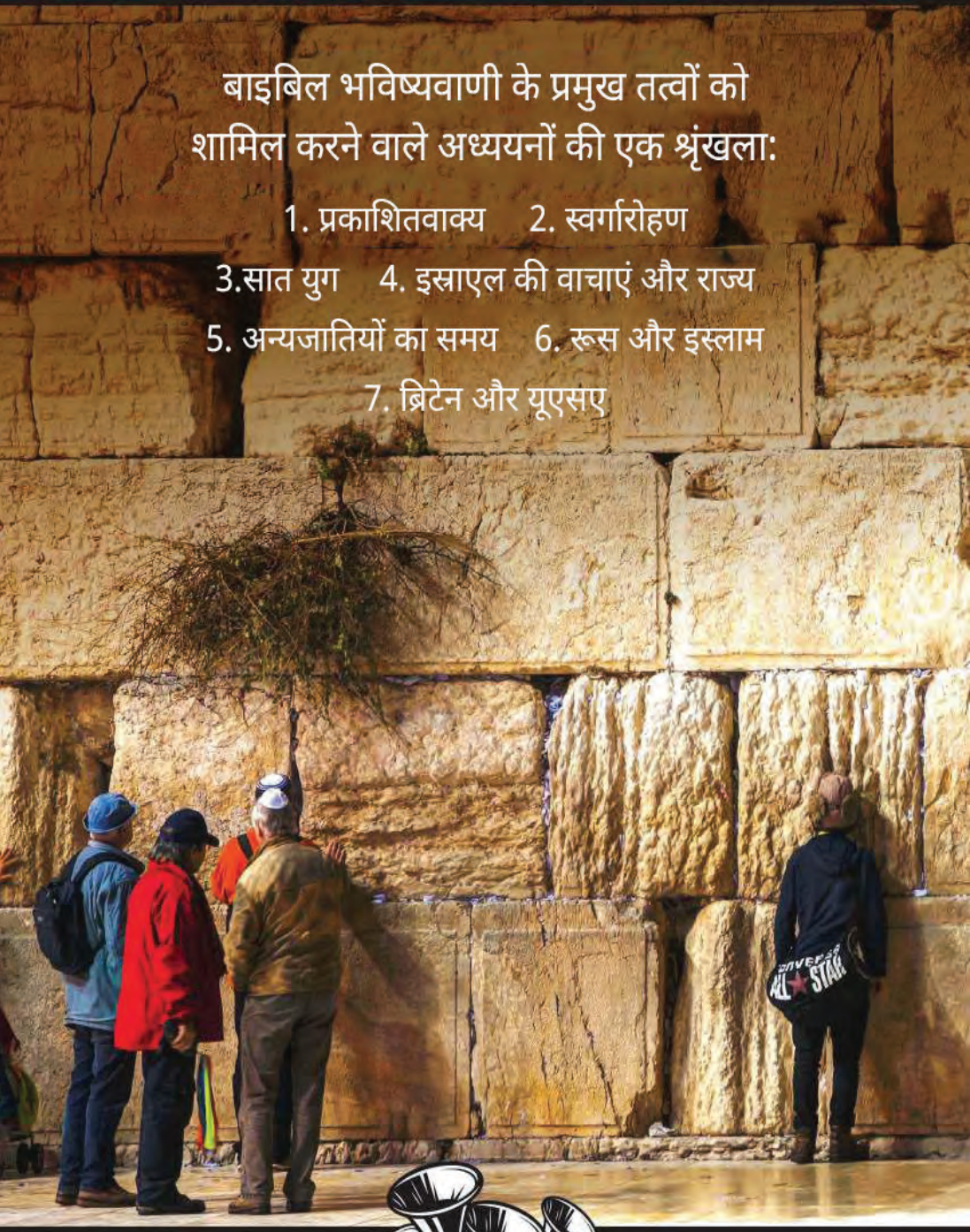

बाइबिल भविष्यवाणी के प्रमुख तत्वों को
शामिल करने वाले अध्ययनों की एक श्रृंखला:

1. प्रकाशितवाक्य 2. स्वर्गारोहण

3.सात युग 4. इस्राएल की वाचाएं और राज्य

5. अन्यजातियों का समय 6. रूस और इस्लाम

7. ब्रिटेन और यूएसए